MEDSEVI-MVI (B4)

3rd semester

Therapeutics and Assistive Devices for Persons with Visual Impairment

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण



विशेष शिक्षा विभाग

शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

MEDSEVI-MVI (B4)

3rd semester

Therapeutics and Assistive Devices for Persons with Visual Impairment

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण



विशेष शिक्षा विभाग

शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

पाठ्यक्रम समन्वयक

सिद्धार्थ कुमार पोखरियाल
सहायक प्राध्यापक विशेष शिक्षा विभाग,
शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी,उत्तराखंड

संपादक

श्री तरुण नेगी
सहायक प्राध्यापक विशेष शिक्षा विभाग,
शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी,उत्तराखंड

इकाई लेखन	इकाई संख्या	इकाई लेखन	इकाई संख्या
सुश्री अंकिता सिंह, सहायक प्राध्यापक,विशेष शिक्षा विभाग शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	1,2,8	सुश्री निशा राणा सहायक प्राध्यापक,विशेष शिक्षा विभाग शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	3,4,5
श्री तरुण नेगी सहायक प्राध्यापक , विशेष शिक्षा विभाग शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	6,7,9,10,11	डॉ.ब्रिजेश कुमार राय डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ	12

समस्त लेखों/पाठों से सम्बंधित किसी भी विवाद के लिए सम्बंधित लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का जूरिसडिक्शन हल्द्वानी (नैनीताल) होगा।

कापीराइट: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय प्रकाशन वर्ष: जुलाई 2026

संस्करण: सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति
प्रकाशक: निदेशालय, अध्ययन एवं प्रकाशन
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी-263139, (नैनीताल)

मुद्रक :- प्रीमियर प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर प्रतियां : 21
पुनः प्रकाशन :- सितंबर, 2026

MEDSEVI-MVI (B4)

3rd semester

Therapeutics and Assistive Devices for Persons with Visual Impairment

Index

इकाई सं०	इकाई का नाम	पृष्ठ सं०
1)	विद्यालयी आयु में प्लेसमेंट के विकल्प तथा विशेष एवं सामान्य शिक्षक का सहयोग	1-21
2)	संक्रमण काल: स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि	22-43
3)	दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा तथा मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका	43-62
4)	कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण : शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श तथा संचार कौशल का मूल्यांकन	63-83
5)	दृष्टि हानि के निहितार्थ एवं दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन के प्रभाव	84-105
6)	कार्यात्मक दृष्टि आकलन:आवश्यकताएँ एवं रणनीतियाँ तथा दृश्य दक्षता प्रशिक्षण:अवधारणा एवं विधियाँ	106-128
7)	विद्यालय स्तर पर अंधता एवं अल्पदृष्टि वाले बच्चों की स्क्रीनिंग एवं पहचान	129-142
8)	दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण	143-163
9)	लेखन प्रौद्योगिकियाँ	164-175
10)	व्यावसायिक विकास—उभरते हुए रोजगार के अवसर	176-184
11)	दृष्टिबाधित व्यक्तियों में वयस्कता संबंधी मुद्दे	185-196
12)	दृष्टिबाधिता के साथ-साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक आँकलन के लिए शिक्षकों द्वारा तैयार किए जाने वाले उपकरणों का निर्माण।	197-220

इकाई–1 विद्यालयी आयु में प्लेसमेंट के विकल्प तथा विशेष एवं सामान्य शिक्षक का सहयोग

1.1प्रस्तावना (Introduction)

1.2उद्देश्य (Objectives)

1.3विद्यालयी आयु और दृष्टिबाधित विद्यार्थी (School Age and Learners with Visual Impairment)

1.4प्लेसमेंट की अवधारणा (Concept of Placement)

1.5प्लेसमेंट के प्रमुख विकल्प (Placement Alternatives)

- **1.5.1**सामान्य विद्यालय में समावेशी प्लेसमेंट
- **1.5.2**संसाधन कक्ष मॉडल
- **1.5.3**विशेष विद्यालय
- **1.5.4**विशेष कक्षा
- **1.5.5**घर-आधारित शैक्षिक सेवाएँ

1.6प्लेसमेंट निर्धारण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Placement Decisions)

1.7सामान्य शिक्षक की भूमिका (Role of Regular Teacher)

1.8विशेष शिक्षक की भूमिका (Role of Special Teacher)

1.9सामान्य एवं विशेष शिक्षक के बीच सहयोग (Collaboration Between Regular and Special Teachers)

1.10सहयोगात्मक शिक्षण की प्रमुख विधियाँ (Models of Collaborative Teaching)

- **1.10.1**परामर्श मॉडल

- **1.10.2**सह-शिक्षण मॉडल
- **1.10.3**सहयोगात्मक योजना
- **1.10.4**संसाधन आधारित सहयोग

1.11पाठ्यक्रम में अनुकूलन (Curriculum Adaptation)

1.12कक्षा-कक्ष में आवश्यक अनुकूलन (Classroom Adaptations)

1.13मूल्यांकन एवं परीक्षा में सहयोग (Collaboration in Assessment and Examination)

1.14सहपाठी सहयोग (Peer Support)

1.15परिवार, शिक्षक और विद्यालय के बीच सहयोग (Collaboration Among Family, Teachers and School)

1.16बहु-विषयक सहयोग (Multidisciplinary Collaboration)

1.17प्रभावी सहयोग के लिए आवश्यक शर्तें (Conditions for Effective Collaboration)

1.18प्लेसमेंट प्रक्रिया में विद्यार्थी की भागीदारी (Student Participation in Placement Process)

1.19प्लेसमेंट की समीक्षा (Review of Placement)

1.20प्लेसमेंट एवं सहयोग में प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges in Placement and Collaboration)

1.21प्रभावी प्लेसमें एवं सहयोग के लिए रणनीतियाँ (Strategies for Effective Placement and Collaboration)

1.22समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach)

1.23सारांश (Summary)

1.24अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

1.25प्रमुख शब्दावली (Key Terms)

1.26संदर्भ (References)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

विद्यालयी आयु बच्चे के शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। दृष्टिबाधित बच्चों के लिए विद्यालय का चयन और उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था केवल इस आधार पर निर्धारित नहीं की जानी चाहिए कि बच्चे को कितनी दृष्टि संबंधी कठिनाई है, बल्कि उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, कार्यात्मक क्षमताओं, सीखने की गति, संचार कौशल, अभिविन्यास एवं गतिशीलता, सहायक तकनीक के उपयोग, सामाजिक सहभागिता तथा परिवार की परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की शैक्षिक व्यवस्थाओं में शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। कुछ विद्यार्थी सामान्य विद्यालय में अन्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थियों को विशेष विद्यालय, संसाधन कक्ष, विशेष शिक्षक की सेवाएँ, घर-आधारित शैक्षिक सेवाएँ या अन्य उपयुक्त व्यवस्थाओं की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए**Placement**का अर्थ केवल बच्चे को किसी विद्यालय में प्रवेश देना नहीं है, बल्कि ऐसी शैक्षिक व्यवस्था का चयन करना है जिसमें विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुसार अधिकतम सीख सके और विद्यालयी तथा सामाजिक गतिविधियों में सार्थक रूप से भाग ले सके।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक के बीच सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्य शिक्षक कक्षा के दैनिक शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया का नेतृत्व करते हैं, जबकि विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थी की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं, ब्रेल, बड़े अक्षरों, सहायक तकनीक, अभिविन्यास एवं गतिशीलता तथा अन्य आवश्यक कौशलों से संबंधित सहायता प्रदान कर सकते हैं। दोनों शिक्षकों के बीच निरंतर संवाद और सहयोग विद्यार्थी के प्रभावी समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1.2 उद्देश्य (Objectives)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी—

1. विद्यालयी आयु में दृष्टिबाधित बच्चों के शैक्षिक प्लेसमेंट की अवधारणा को समझ सकेंगे।
2. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध विभिन्न प्लेसमेंट विकल्पों का वर्णन कर सकेंगे।
3. प्लेसमेंट निर्धारण को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कर सकेंगे।
4. समावेशी विद्यालय में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझ सकेंगे।
5. सामान्य शिक्षक की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।
6. विशेष शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।
7. सामान्य और विशेष शिक्षक के बीच सहयोग की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
8. सह-शिक्षण एवं सहयोगात्मक शिक्षण की अवधारणा को समझ सकेंगे।
9. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम एवं कक्षा-शिक्षण में आवश्यक अनुकूलनों को पहचान सकेंगे।
10. विद्यालय, परिवार तथा अन्य विशेषज्ञों के बीच सहयोग के महत्व को समझ सकेंगे।

1.3विद्यालयी आयु और दृष्टिबाधित विद्यार्थीSchool Age and Learners with Visual Impairment

विद्यालयी आयु वह अवधि है जिसमें बच्चा औपचारिक शिक्षा, सामाजिक सहभागिता, भाषा विकास, आत्मनिर्भरता तथा विभिन्न शैक्षिक एवं जीवन-कौशलों को विकसित करता है। दृष्टिबाधित बच्चों के लिए यह अवधि विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है क्योंकि उन्हें सामान्य शैक्षिक विषयों के साथ-साथ कुछ अतिरिक्त कौशलों को भी सीखने की आवश्यकता हो सकती है।

इन कौशलों में ब्रेल साक्षरता, स्पर्श आधारित अधिगम, सहायक तकनीक का उपयोग, अभिविन्यास एवं गतिशीलता, दैनिक जीवन कौशल, सामाजिक कौशल तथा उपलब्ध दृष्टि का प्रभावी उपयोग शामिल हो सकता है।विद्यालयी आयु के सभी दृष्टिबाधित विद्यार्थी समान आवश्यकताओं वाले नहीं होते। किसी विद्यार्थी में अवशिष्ट दृष्टि पर्याप्त हो सकती है और वह बड़े अक्षरों, उचित प्रकाश तथा ऑप्टिकल उपकरणों की सहायता से पढ़ सकता है। दूसरी ओर, किसी अन्य विद्यार्थी को ब्रेल तथा श्रव्य सामग्री की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए प्लेसमेंट और शैक्षिक सहायता को विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए।

1.4 प्लेसमेंट की अवधारणाConcept of Placement

शैक्षिक प्लेसमेंट का अर्थ विद्यार्थी को उसकी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त शैक्षिक वातावरण में रखना है। दृष्टिबाधित बच्चों के संदर्भ में प्लेसमेंट का निर्णय एक व्यापक

मूल्यांकन प्रक्रिया पर आधारित होना चाहिए।प्लेसमेंट का उद्देश्य विद्यार्थी को किसी विशेष व्यवस्था में स्थायी रूप से सीमित करना नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना है जिसमें वह शैक्षिक कार्यक्रम में प्रभावी रूप से भाग ले सके।

प्लेसमेंट निर्धारित करते समय निम्न पक्षों पर विचार किया जा सकता है—

- दृष्टि की प्रकृति और कार्यात्मक दृष्टि
- ब्रेल या मुद्रित सामग्री की आवश्यकता
- सहायक तकनीक का उपयोग
- अभिविन्यास एवं गतिशीलता कौशल
- संचार एवं भाषा कौशल
- संज्ञानात्मक एवं शैक्षिक स्तर
- सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएँ
- अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति
- परिवार की आवश्यकताएँ
- विद्यालय में उपलब्ध संसाधन
- विशेष शिक्षक तथा अन्य विशेषज्ञों की उपलब्धता
- विद्यार्थी की व्यक्तिगत पसंद और सहभागिता

इस प्रकार प्लेसमेंट का निर्णय विद्यार्थी-केंद्रित होना चाहिए।

1.5 प्लेसमेंट के प्रमुख विकल्प (Placement Alternatives)

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विभिन्न शैक्षिक प्लेसमेंट विकल्प उपलब्ध हो सकते हैं। उपयुक्त विकल्प का चयन

व्यक्तिगत मूल्यांकन तथा शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

1.5.1 सामान्य विद्यालय में समावेशी प्लेसमेंट

(Inclusive Placement in Regular School)

समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधित विद्यार्थी सामान्य विद्यालय में अपने दृष्टिसंपन्न साथियों के साथ शिक्षा प्राप्त करता है। आवश्यकतानुसार उसे विशेष शिक्षक, संसाधन कक्ष, सहायक तकनीक और अनुकूलित शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
इस व्यवस्था में विद्यार्थी को सामान्य कक्षा का सदस्य माना जाता है और उसे विद्यालय की शैक्षिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ—

- सामान्य कक्षा में शिक्षा
- पाठ्यक्रम तक पहुँच
- ब्रेल या अनुकूलित मुद्रित सामग्री
- सहायक तकनीक
- विशेष शिक्षक की सहायता
- सामाजिक सहभागिता
- नियमित शिक्षक और विशेष शिक्षक का सहयोग

समावेशी व्यवस्था सामाजिक सहभागिता और समान अवसरों को बढ़ावा दे सकती है, लेकिन इसके लिए विद्यालय में आवश्यक संसाधनों और शिक्षक सहयोग की उपलब्धता महत्वपूर्ण है।

1.5.2 संसाधन कक्ष मॉडल

(Resource Room Model)

संसाधन कक्ष विद्यालय में ऐसी व्यवस्था है जहाँ विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता प्रदान की जाती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी सामान्य कक्षा में अधिकांश समय शिक्षा प्राप्त कर सकता है तथा आवश्यकता के अनुसार कुछ समय विशेष शिक्षक के साथ संसाधन कक्ष में कार्य कर सकता है।

संसाधन कक्ष में निम्न प्रकार की सहायता दी जा सकती है—

- ब्रेल शिक्षण
- सहायक उपकरणों का प्रशिक्षण
- कंप्यूटर एवं स्क्रीन रीडर का उपयोग
- अध्ययन सामग्री का अनुकूलन
- कठिन विषयों में अतिरिक्त सहायता
- अध्ययन कौशल
- अभिविन्यास एवं गतिशीलता से संबंधित सहायता
- कार्यात्मक दृष्टि का उपयोग

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
यह मॉडल सामान्य कक्षा और विशेष सहायता के बीच संतुलन स्थापित कर सकता है।

1.5.3 विशेष विद्यालय

(Special School Placement)

विशेष विद्यालयों में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष रूप से तैयार शैक्षिक वातावरण उपलब्ध हो सकता है। ऐसे विद्यालयों में विशेष शिक्षक, ब्रेल संसाधन, सहायक तकनीक तथा अन्य विशिष्ट सेवाएँ उपलब्ध हो सकती हैं।

विशेष विद्यालय उन परिस्थितियों में उपयोगी हो सकते हैं जहाँ विद्यार्थी को अत्यधिक विशिष्ट सेवाओं की आवश्यकता हो और ऐसी सेवाएँ सामान्य विद्यालय में उपलब्ध कराना कठिन हो।

हालाँकि, प्लेसमेंट का निर्णय केवल दृष्टिबाधिता के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और उपलब्ध सेवाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

1.5.4 विशेष कक्षा

(Special Class Placement)

कुछ विद्यालयों में सामान्य विद्यालय परिसर के भीतर विशेष कक्षा की व्यवस्था हो सकती है। इसमें विद्यार्थी को विशेष शिक्षक द्वारा अधिक संरचित सहायता दी जाती है तथा कुछ गतिविधियों में वह सामान्य कक्षा के विद्यार्थियों के साथ भी भाग ले सकता है।

यह व्यवस्था उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकती है जिन्हें सामान्य कक्षा में भाग लेने के साथ-साथ अतिरिक्त विशेष शैक्षिक सहायताकी आवश्यकता होती है।

1.5.5 घर-आधारित शैक्षिक सेवाएँ

(Home-Based Educational Support)

कुछ परिस्थितियों में विद्यार्थी के लिए घर-आधारित शैक्षिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है। विशेष रूप से तब जब स्वास्थ्य, गतिशीलता, भौगोलिक दूरी या अन्य परिस्थितियों के कारण नियमित विद्यालय में जाना कठिन हो।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

घर-आधारित सेवाओं का उद्देश्य बच्चे को शिक्षा से जोड़ना और आवश्यक कौशलों के विकास के अवसर प्रदान करना होना चाहिए।

1.6 प्लेसमेंट निर्धारण को प्रभावित करने वाले कारक

(Factors Affecting Placement Decisions)

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए प्लेसमेंट का निर्णय करते समय निम्न कारकों पर विचार किया जाना चाहिए—

1.6.1 विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताएँ

प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता और आवश्यकता अलग होती है। इसलिए व्यक्तिगत शैक्षिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

1.6.2 दृष्टि का कार्यात्मक उपयोग

केवल चिकित्सीय दृष्टि-मानकों के आधार पर निर्णय लेने के बजाय विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में अपनी दृष्टि का किस प्रकार उपयोग करता है, इसका अध्ययन आवश्यक है।

1.6.3 सीखने की शैली

विद्यार्थी दृश्य, श्रव्य, स्पर्श या बहु-संवेदी माध्यमों में से किन माध्यमों से अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है, यह महत्वपूर्ण है।

1.6.4 सहायक तकनीक

कंप्यूटर, स्क्रीन रीडर, मैग्नीफिकेशन, ऑडियो सामग्री तथा अन्य सहायक तकनीक विद्यार्थी की शैक्षिक पहुँच को बढ़ा सकती हैं।

1.6.5 सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताएँ

विद्यालय विद्यार्थी को साथियों के साथ बातचीत, समूह कार्य और सामाजिक सहभागिता के अवसर प्रदान करता है। इसलिए सामाजिक वातावरण भी प्लेसमेंट का महत्वपूर्ण पक्ष है।

1.6.6 परिवार की भूमिका

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
परिवार को प्लेसमेंट प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। परिवार बच्चे की दैनिक क्षमताओं, पसंद, व्यवहार तथा आवश्यकताओं के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है।

1.6.7 विद्यालयीय संसाधन

विद्यालय में विशेष शिक्षक, ब्रेल सामग्री, सहायक तकनीक, सुगम वातावरण और अन्य आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

1.7 सामान्य शिक्षक की भूमिकाRole of Regular Teacher

समावेशी विद्यालय में सामान्य शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थी के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामान्य शिक्षक को—

1. विद्यार्थी को कक्षा की सभी गतिविधियों में शामिल करना चाहिए।
2. मौखिक रूप से आवश्यक दृश्य जानकारी का वर्णन करना चाहिए।
3. शिक्षण सामग्री को विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध कराना चाहिए।
4. कक्षा में सुरक्षित एवं सुगम वातावरण बनाना चाहिए।
5. विद्यार्थी को प्रश्न पूछने और उत्तर देने के समान अवसर देने चाहिए।
6. बोर्ड पर लिखी जानकारी को मौखिक रूप से स्पष्ट करना चाहिए।
7. चित्र, मानचित्र, ग्राफ आदि के स्पर्शनीय या वैकल्पिक रूप उपलब्ध कराने में सहयोग करना चाहिए।
8. सहपाठियों में सहयोगात्मक एवं संवेदनशील व्यवहार विकसित करना चाहिए।
9. विद्यार्थी की प्रगति का नियमित अवलोकन करना चाहिए।
10. विशेष शिक्षक के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए।

सामान्य शिक्षक को यह समझना आवश्यक है कि दृष्टिबाधिता का अर्थ सीखने की क्षमता का अभाव नहीं है। उचित अनुकूलन और सहायता से विद्यार्थी पाठ्यक्रम में प्रभावी रूप से भाग ले सकता है।

1.8 विशेष शिक्षक की भूमिकाRole of Special Teacher

विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान और पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विशेष शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारियाँ हैं—

- विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन करना।
- ब्रेल साक्षरता का विकास करना।
- उपयुक्त शिक्षण सामग्री तैयार करना।
- सहायक तकनीक के उपयोग में प्रशिक्षण देना।
- कार्यात्मक दृष्टि के उपयोग में सहायता करना।
- अभिविन्यास एवं गतिशीलता से संबंधित प्रशिक्षण में सहयोग करना।
- सामान्य शिक्षक को आवश्यक सुझाव देना।
- पाठ्यक्रम एवं शिक्षण सामग्री के अनुकूलन में सहयोग करना।
- विद्यार्थी की प्रगति का दस्तावेजीकरण करना।
- परिवार को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना।
- अन्य विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करना।

विशेष शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थी के साथ अलग से शिक्षण करना नहीं है, बल्कि पूरे विद्यालयी वातावरण को अधिक सुलभ और समावेशी बनाने में सहयोग करना भी है।

1.9 सामान्य एवं विशेष शिक्षक के बीच सहयोग

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के प्रभावी समावेशन के लिए सामान्य और विशेष शिक्षक के बीच सहयोग आवश्यक है। यदि दोनों शिक्षक अलग-अलग कार्य करते हैं और एक-दूसरे के साथ जानकारी साझा नहीं करते, तो विद्यार्थी की आवश्यकताओं की निरंतरता प्रभावित हो सकती है।

सहयोग में निम्न गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं—

1.9.1 संयुक्त योजना

दोनों शिक्षक मिलकर पाठ की योजना बना सकते हैं और यह निर्धारित कर सकते हैं कि कौन-सी सामग्री विद्यार्थी के लिए अनुकूलित करनी होगी।

1.9.2 सूचना का आदान-प्रदान

विद्यार्थी की प्रगति, कठिनाइयों और उपलब्धियों के संबंध में नियमित जानकारी साझा की जानी चाहिए।

1.9.3 शिक्षण सामग्री का अनुकूलन

सामान्य शिक्षक पाठ्यक्रम की सामग्री प्रदान करते हैं और विशेष शिक्षक उसे ब्रेल, बड़े अक्षरों, श्रव्य या स्पर्शनीय रूप में उपलब्ध कराने में सहयोग कर सकते हैं।

1.9.4 संयुक्त समस्या समाधान

यदि विद्यार्थी को किसी विषय या गतिविधि में कठिनाई हो रही है, तो दोनों शिक्षक मिलकर समस्या के कारणों और संभावित समाधान पर विचार कर सकते हैं।

1.9.5 मूल्यांकन में सहयोग

परीक्षा और कक्षा मूल्यांकन के दौरान विद्यार्थी को आवश्यक सुविधा और उपयुक्त माध्यम उपलब्ध कराने के लिए दोनों शिक्षकों को समन्वय करना चाहिए।

1.10 सहयोगात्मक शिक्षण की प्रमुख विधियाँ

विद्यालय में सामान्य और विशेष शिक्षक विभिन्न तरीकों से सहयोग कर सकते हैं।

1.10.1 परामर्श मॉडल

(Consultation Model)

इस मॉडल में सामान्य शिक्षक विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकता के संबंध में विशेष शिक्षक से परामर्श लेते हैं। विशेष शिक्षक आवश्यक सुझाव और रणनीतियाँ प्रदान करते हैं।

1.10.2 सह-शिक्षण मॉडल

(Co-Teaching Model)

इसमें सामान्य और विशेष शिक्षक एक ही कक्षा में मिलकर शिक्षण प्रक्रिया में भाग लेते हैं। दोनों शिक्षक अपनी विशेषज्ञता के अनुसार जिम्मेदारी साझा करते हैं।

1.10.3 सहयोगात्मक योजना

(Collaborative Planning)

दोनों शिक्षक नियमित रूप से बैठक कर आगामी पाठों, गतिविधियों और मूल्यांकन की योजना बनाते हैं।

1.10.4 संसाधन आधारित सहयोग

(Resource-Based Collaboration)

विशेष शिक्षक आवश्यक संसाधन, सामग्री और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराते हैं तथा सामान्य शिक्षक उसका उपयोग कक्षा में करते हैं।

1.11 पाठ्यक्रम में अनुकूलन

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए पाठ्यक्रम में अनुकूलन का उद्देश्य पाठ्यक्रम की मूल शैक्षिक अपेक्षाओं को अनावश्यक रूप से कम करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी को पाठ्यक्रम तक पहुँच प्रदान करना है।

अनुकूलन में शामिल हो सकते हैं—

- ब्रेल सामग्री
- बड़े अक्षरों वाली सामग्री
- डिजिटल सामग्री
- ऑडियो सामग्री
- स्पर्शनीय चित्र
- उभरे हुए मानचित्र एवं आकृतियाँ
- मौखिक विवरण
- अतिरिक्त समय
- सहायक तकनीक
- वैकल्पिक प्रस्तुति माध्यम

उदाहरण के लिए, यदि सामान्य कक्षा में विद्यार्थी किसी चित्र को देखकर जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, तो दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए उस चित्र का मौखिक वर्णन, स्पर्शनीय चित्र या अन्य उपयुक्त वैकल्पिक माध्यम उपलब्ध कराया जा सकता है।

1.12 कक्षा-कक्ष में आवश्यक अनुकूलन

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
कक्षा का वातावरण दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए सुरक्षित, व्यवस्थित और सुगम होना चाहिए।

इसके लिए—

1. फर्नीचर को व्यवस्थित और स्थिर रखा जाए।
2. कक्षा में अनावश्यक अवरोध न हों।
3. शिक्षक विद्यार्थी को संबोधित करते समय उसका नाम लें।
4. बोर्ड पर लिखी सामग्री को पढ़कर भी बताया जाए।
5. गतिविधियों के चरणों को स्पष्ट रूप से समझाया जाए।
6. विद्यार्थी को सामग्री को स्पर्श और अन्वेषण करने का अवसर दिया जाए।
7. पर्याप्त और उपयुक्त प्रकाश की व्यवस्था की जाए।
8. कम दृष्टि वाले विद्यार्थी के लिए उपयुक्त बैठने की व्यवस्था की जाए।
9. डिजिटल एवं सहायक तकनीक का उपयोग किया जाए।
10. विद्यार्थी को स्वतंत्र रूप से कार्य करने के अवसर दिए जाएँ।

1.13 मूल्यांकन एवं परीक्षा में सहयोग

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के मूल्यांकन में सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक का सहयोग आवश्यक है। मूल्यांकन विद्यार्थी की वास्तविक सीखने की उपलब्धि को प्रदर्शित करने वाला होना चाहिए।

आवश्यकतानुसार निम्न सुविधाएँ दी जा सकती हैं—

- ब्रेल प्रश्नपत्र
- डिजिटल प्रश्नपत्र
- बड़े अक्षरों वाली सामग्री
- लेखक/स्क्राइब की सुविधा, जहाँ लागू हो
- अतिरिक्त समय
- मौखिक या अन्य वैकल्पिक प्रस्तुति
- सहायक तकनीक
- स्पर्शनीय सामग्री

मूल्यांकन में सुविधा प्रदान करने का उद्देश्य विद्यार्थी को अनुचित लाभ देना नहीं, बल्कि उसकी शैक्षिक उपलब्धि को उपयुक्त माध्यम से प्रदर्शित करने का अवसर देना है।

1.14 सहपाठी सहयोग (Peer Support)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

समावेशी शिक्षा में सहपाठियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। सामान्य शिक्षक सहपाठियों को यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि दृष्टिबाधित विद्यार्थी किस प्रकार की सहायता चाहता है।

सहपाठी—

- कक्षा गतिविधियों में सहयोग कर सकते हैं।
- समूह कार्य में विद्यार्थी को शामिल कर सकते हैं।
- विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता के अवसर दे सकते हैं।
- आवश्यक जानकारी मौखिक रूप से साझा कर सकते हैं।
- सामाजिक संबंधों को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।

हालाँकि, सहपाठी सहायता का उद्देश्य विद्यार्थी को हमेशा दूसरों पर निर्भर बनाना नहीं होना चाहिए। स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए।

1.15 परिवार, शिक्षक और विद्यालय के बीच सहयोग(Collaboration Among Family, Teachers and School)

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के विकास के लिए परिवार और विद्यालय के बीच निरंतर संवाद आवश्यक है। परिवार बच्चे की दैनिक कार्यक्षमता, रुचियों और व्यवहार के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

शिक्षक परिवार के साथ—

- विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति साझा कर सकते हैं।
- घर पर अभ्यास के लिए सुझाव दे सकते हैं।
- सहायक तकनीक के उपयोग के संबंध में जानकारी दे सकते हैं।
- विद्यार्थी की उपलब्धियों और कठिनाइयों पर चर्चा कर सकते हैं।
- विद्यालय और घर के बीच निरंतरता बनाए रख सकते हैं।

इस प्रकार परिवार, सामान्य शिक्षक, विशेष शिक्षक और विद्यालय प्रशासन मिलकर विद्यार्थी के लिए सहयोगात्मक वातावरण तैयार कर सकते हैं।

1.16 बहु-विषयक सहयोग(Multidisciplinary Collaboration)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

कुछ दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अन्य सेवाओं की भी आवश्यकता हो सकती है। ऐसी स्थिति में विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक, नेत्र विशेषज्ञ, व्यावसायिक चिकित्सक, अभिविन्यास एवं गतिशीलता विशेषज्ञ तथा अन्य संबंधित पेशेवर मिलकर कार्य कर सकते हैं।बहु-विषयक सहयोग का उद्देश्य विद्यार्थी की आवश्यकताओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना और समन्वित सहायता उपलब्ध कराना है।

1.17 प्रभावी सहयोग के लिए आवश्यक शर्तें

सामान्य और विशेष शिक्षक के प्रभावी सहयोग के लिए—

1. स्पष्ट भूमिकाएँ निर्धारित होनी चाहिए।
2. नियमित बैठकें आयोजित की जानी चाहिए।
3. विद्यार्थी की जानकारी साझा की जानी चाहिए।
4. निर्णय विद्यार्थी की आवश्यकताओं पर आधारित होने चाहिए।
5. एक-दूसरे की विशेषज्ञता का सम्मान किया जाना चाहिए।
6. शिक्षण सामग्री पहले से तैयार की जानी चाहिए।
7. मूल्यांकन एवं प्रगति की नियमित समीक्षा होनी चाहिए।
8. परिवार को आवश्यकतानुसार प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए।
9. विद्यालय प्रशासन को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए।
10. विद्यार्थी की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय को महत्व दिया जाना चाहिए।

1.18 प्लेसमेंट प्रक्रिया में विद्यार्थी की भागीदारी

दृष्टिबाधित विद्यार्थी को उसकी आयु और समझ के अनुसार शैक्षिक निर्णयों में शामिल करना आवश्यक है। विद्यार्थी से उसकी पसंद, कठिनाइयों, सीखने के तरीके तथा आवश्यक सहायता के बारे में जानकारी ली जा सकती है।

विद्यार्थी की भागीदारी से—

- आत्मविश्वास बढ़ सकता है।
- आत्मनिर्णय की क्षमता विकसित होती है।
- शैक्षिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।
- उसकी वास्तविक आवश्यकताओं को बेहतर समझा जा सकता है।

इसलिए प्लेसमेंट केवल वयस्कों द्वारा लिया गया निर्णय न होकर विद्यार्थी-केंद्रित प्रक्रिया होनी चाहिए।

1.19 प्लेसमेंट की समीक्षा

प्लेसमेंट को एक स्थिर और अपरिवर्तनीय निर्णय नहीं माना जाना चाहिए। विद्यार्थी की आवश्यकताएँ समय के साथ बदल सकती हैं। नई तकनीक, नई शैक्षिक आवश्यकताओं, कक्षा परिवर्तन या विकासात्मक परिवर्तनों के कारण शैक्षिक व्यवस्था की समीक्षा आवश्यक हो सकती है।

समीक्षा के दौरान देखा जा सकता है—

- विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति कैसी है?
- क्या वर्तमान व्यवस्था उसकी आवश्यकताओं को पूरा कर रही है?
- क्या अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है?
- क्या सहायक तकनीक पर्याप्त है?
- क्या कक्षा में आवश्यक अनुकूलन उपलब्ध हैं?
- क्या विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों में भाग ले रहा है?
- क्या परिवार और शिक्षक संतुष्ट हैं?

इस प्रकार नियमित समीक्षा विद्यार्थी के लिए उपयुक्त शैक्षिक अवसरों को बनाए रखने में सहायता करती है।

1.20 प्लेसमेंट एवं सहयोग में प्रमुख चुनौतियाँ

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक व्यवस्था में कुछ चुनौतियाँ हो सकती हैं—

1.20.1 संसाधनों की कमी

कुछ विद्यालयों में ब्रेल सामग्री, सहायक तकनीक या विशेष शिक्षक की उपलब्धता सीमित हो सकती है।

1.20.2 शिक्षक प्रशिक्षण की कमी

सामान्य शिक्षकों को दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा शिक्षण अनुकूलन के संबंध में पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

1.20.3 संचार की कमी

यदि सामान्य और विशेष शिक्षक नियमित रूप से जानकारी साझा नहीं करते, तो विद्यार्थी की आवश्यकताओं की निरंतरता प्रभावित हो सकती है।

1.20.4 सामग्री की उपलब्धता

पाठ्यपुस्तकों और अन्य शैक्षिक संसाधनों का समय पर सुलभ प्रारूप में उपलब्ध न होना कठिनाई उत्पन्न कर सकता है।

1.20.5 सामाजिक बाधाएँ

सहपाठियों और विद्यालय समुदाय में दृष्टिबाधिता के संबंध में गलत धारणाएँ विद्यार्थी के समावेशन को प्रभावित कर सकती हैं।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए विद्यालय स्तर पर योजना, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन विकास और सहयोगात्मक कार्य आवश्यक है।

1.21 प्रभावी प्लेसमेंट एवं सहयोग के लिए रणनीतियाँ

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए प्रभावी शैक्षिक व्यवस्था विकसित करने हेतु निम्न रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं—

- विद्यार्थी-केंद्रित योजना
- नियमित कार्यात्मक मूल्यांकन
- व्यक्तिगत शैक्षिक योजना
- सामान्य एवं विशेष शिक्षक की संयुक्त योजना
- सुलभ शिक्षण सामग्री
- सहायक तकनीक का प्रयोग
- सहपाठी सहयोग
- परिवार की भागीदारी
- नियमित प्रगति समीक्षा
- विद्यालय में अभिगम्यता

- शिक्षक प्रशिक्षण
- बहु-विषयक सहयोग
- विद्यार्थी की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय को बढ़ावा देना

1.22 समग्र दृष्टिकोण

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए उचित प्लेसमेंट का निर्धारण केवल उसकी दृष्टि की स्थिति के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। विद्यार्थी की संपूर्ण शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक, कार्यात्मक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

एक प्रभावी समावेशी व्यवस्था में सामान्य शिक्षक, विशेष शिक्षक, परिवार, सहपाठी, विद्यालय प्रशासन और आवश्यकतानुसार अन्य विशेषज्ञ मिलकर कार्य करते हैं। इस सहयोग से विद्यार्थी को सामान्य विद्यालयी जीवन में सक्रिय भागीदारी के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

1.23 सारांश (Summary)

विद्यालयी आयु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवधि में उपयुक्त शैक्षिक प्लेसमेंट विद्यार्थी के सीखने, सामाजिक विकास, आत्मनिर्भरता और भविष्य की तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सामान्य विद्यालय में समावेशी शिक्षा, संसाधन कक्ष, विशेष कक्षा, विशेष विद्यालय तथा आवश्यकता-आधारित अन्य शैक्षिक व्यवस्थाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। प्लेसमेंट का निर्णय विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, कार्यात्मक दृष्टि, सीखने की शैली, सहायक तकनीक, सामाजिक आवश्यकताओं, परिवार तथा विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए सामान्य और विशेष शिक्षक के बीच सहयोग आवश्यक है। सामान्य शिक्षक कक्षा में दैनिक शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को संचालित करते हैं, जबकि विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

संयुक्त योजना, सह-शिक्षण, शिक्षण सामग्री का अनुकूलन, मूल्यांकन में सहयोग, परिवार से संवाद और नियमित प्रगति समीक्षा प्रभावी सहयोग के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। विद्यार्थी को शैक्षिक निर्णयों में उसकी आयु और क्षमता के अनुसार शामिल करना भी आवश्यक है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

इस प्रकार प्रभावी प्लेसमेंट और सहयोग का अंतिम उद्देश्य दृष्टिबाधित विद्यार्थी को केवल विद्यालय में स्थान उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि उसे**समान शैक्षिक अवसर, सार्थक सहभागिता, स्वतंत्रता और सीखने के लिए आवश्यक सहायता**प्रदान करना है।

1.24 अभ्यास प्रश्न (Practice Questions)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्लेसमेंट से क्या अभिप्राय है?
2. समावेशी प्लेसमेंट क्या है?
3. संसाधन कक्ष से क्या तात्पर्य है?
4. सामान्य शिक्षक की एक प्रमुख भूमिका लिखिए।
5. विशेष शिक्षक की एक प्रमुख भूमिका लिखिए।
6. सह-शिक्षण क्या है?
7. पाठ्यक्रम अनुकूलन से क्या अभिप्राय है?
8. सहपाठी सहयोग क्यों आवश्यक है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए प्लेसमेंट के प्रमुख विकल्पों का वर्णन कीजिए।
2. प्लेसमेंट निर्धारण को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।
3. सामान्य शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
4. विशेष शिक्षक की भूमिका का वर्णन कीजिए।
5. सामान्य एवं विशेष शिक्षक के बीच सहयोग की आवश्यकता समझाइए।
6. संसाधन कक्ष मॉडल की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
7. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए कक्षा-कक्ष में आवश्यक अनुकूलनों को स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विद्यालयी आयु में उपलब्ध विभिन्न प्लेसमेंट विकल्पों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. सामान्य एवं विशेष शिक्षक के बीच सहयोग की अवधारणा, आवश्यकता और प्रमुख विधियों की विवेचना कीजिए।

3. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए प्रभावी समावेशी शिक्षा में सामान्य एवं विशेष शिक्षक की भूमिकाओं का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।
4. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के प्लेसमेंट निर्धारण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
5. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम एवं कक्षा-कक्ष में आवश्यक अनुकूलनों का वर्णन कीजिए।
6. विद्यालय, परिवार, सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक के बीच सहयोग की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

1.25 प्रमुख शब्दावली (Key Terms)

प्लेसमेंट (Placement):विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था का चयन।

समावेशी शिक्षा (Inclusive Education):सभी विद्यार्थियों को उनकी आवश्यक सहायता के साथ एक साझा शैक्षिक वातावरण में सीखने का अवसर देना।

संसाधन कक्ष (Resource Room):अतिरिक्त विशेष शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए विद्यालय में स्थापित व्यवस्था।

विशेष शिक्षक (Special Teacher):विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट शिक्षण एवं सहायता प्रदान करने वाला प्रशिक्षित शिक्षक।

सामान्य शिक्षक (Regular Teacher):सामान्य विद्यालय की कक्षा में विभिन्न विद्यार्थियों को नियमित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण प्रदान करने वाला शिक्षक।

सह-शिक्षण (Co-Teaching):दो या अधिक शिक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से शिक्षण प्रक्रिया का संचालन।

पाठ्यक्रम अनुकूलन (Curriculum Adaptation):विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम की प्रस्तुति, सामग्री या प्रक्रिया में आवश्यक परिवर्तन।

सहायक तकनीक (Assistive Technology):ऐसी तकनीकी साधन एवं प्रणालियाँ जो विद्यार्थी की कार्यक्षमता और शैक्षिक पहुँच को बढ़ाती हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

सहपाठी सहयोग (Peer Support):साथियों द्वारा विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सामाजिक सहभागिता में सहायता।

1.26 संदर्भ (References)

1. Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). *Exceptional Learners: An Introduction to Special Education* (15th ed.). Pearson.
2. Heward, W. L. (2022). *Exceptional Children: An Introduction to Special Education* (12th ed.). Pearson.
3. Holbrook, M. C., & Koenig, A. J. (Eds.). (2000). *Foundations of Education: Instructional Strategies for Teaching Children and Youths with Visual Impairments* (2nd ed.). AFB Press.
4. Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). *The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*. Government of India.
5. National Council of Educational Research and Training. (2023). *Inclusive Education: Resource Material for Teacher Educators*. NCERT.
6. National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities. (2021). *Training Manual on Visual Impairment and Multiple Disabilities*. NIEPVD.
7. Rehabilitation Council of India. (2022). *Curriculum Framework for B.Ed. and M.Ed. Special Education (Visual Impairment)*. New Delhi: RCI.
8. Smith, D. D. (2020). *Introduction to Special Education: Making a Difference* (9th ed.). Pearson.
9. World Health Organization. (2019). *World Report on Vision*. Geneva: World Health Organization.

इकाई–2 संक्रमण काल: स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि

(Transition Period: Self-Identity, Self-Esteem and Self-Image)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

2.2 उद्देश्य (Objectives)

2.3 संक्रमण काल की अवधारणा (Concept of Transition Period)

2.4 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के जीवन में संक्रमण काल का महत्व (Importance of Transition Period for Learners with Visual Impairment)

2.5 संक्रमण काल के प्रमुख चरण (Major Stages of Transition)

☐2.5.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था से विद्यालय में प्रवेश

☐2.5.2 प्राथमिक से माध्यमिक स्तर में संक्रमण

☐2.5.3 विद्यालय से उच्च शिक्षा की ओर संक्रमण

☐2.5.4 शिक्षा से रोजगार की ओर संक्रमण

☐2.5.5 स्वतंत्र एवं सामुदायिक जीवन की ओर संक्रमण

2.6 स्व-पहचान की अवधारणा (Concept of Self-Identity)

2.7 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-पहचान का विकास (Development of Self-Identity in Learners with Visual Impairment)

2.8 स्व-पहचान को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Self-Identity)

2.9 स्व-सम्मान की अवधारणा (Concept of Self-Esteem)

2.10 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-सम्मान का विकास (Development of Self-Esteem in Learners with Visual Impairment)

2.11 स्व-सम्मान को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Self-Esteem)

2.12 स्व-छवि की अवधारणा (Concept of Self-Image)

2.13 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-छवि का विकास (Development of Self-Image in Learners with Visual Impairment)

2.14 स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि का परस्पर संबंध (Relationship Among Self-Identity, Self-Esteem and Self-Image)

2.15 दृष्टिबाधिता और आत्म-अवधारणा (Visual Impairment and Self-Concept)

2.16 संक्रमण काल में मनोसामाजिक चुनौतियाँ (Psychosocial Challenges During Transition)

2.17 साथियों एवं सामाजिक संबंधों की भूमिका (Role of Peers and Social Relationships)

2.18 परिवार की भूमिका (Role of Family)

2.19 सामान्य एवं विशेष शिक्षक की भूमिका (Role of Regular and Special Teacher)

2.20 स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि को सुदृढ़ करने की रणनीतियाँ (Strategies for Strengthening Self-Identity, Self-Esteem and Self-Image)

2.21 आत्मनिर्णय एवं स्वतंत्रता का विकास (Development of Self-Determination and Independence)

2.22 संक्रमण योजना में स्व-पहचान एवं आत्मविश्वास का समावेश (Incorporating Self-Identity and Confidence in Transition Planning)

2.23 सहायक तकनीक एवं स्वतंत्रता (Assistive Technology and Independence)

2.24 व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा संक्रमण में स्व-अवधारणा की भूमिका (Role of Self-Concept in Higher Education and Vocational Transition)

2.25 संक्रमण काल में परामर्श एवं मार्गदर्शन (Guidance and Counselling During Transition)

2.26 समावेशी वातावरण की भूमिका (Role of Inclusive Environment)

2.27 प्रमुख चुनौतियाँ एवं समाधान (Major Challenges and Solutions)

2.28 विशेष शिक्षक के लिए व्यावहारिक सुझाव (Practical Suggestions for Special Teachers)

2.29 समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach)

2.30 सारांश (Summary)

2.31 प्रमुख शब्दावली (Key Terms)

2.32 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

2.33 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

2.34 संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

संक्रमण (Transition) व्यक्ति के जीवन में होने वाला ऐसा परिवर्तन है जिसमें वह एक अवस्था, भूमिका, शैक्षिक स्तर अथवा जीवन-परिस्थिति से दूसरी अवस्था की ओर आगे बढ़ता है। विद्यालयी जीवन में संक्रमण का अर्थ केवल एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाना नहीं है, बल्कि प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा, विद्यालय से उच्च शिक्षा, शिक्षा से रोजगार तथा आश्रित जीवन से अधिक स्वतंत्र जीवन की ओर बढ़ना भी संक्रमण का हिस्सा है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संक्रमण काल विशेष महत्व रखता है क्योंकि इस दौरान उन्हें शैक्षिक परिवर्तन के साथ-साथ अपनी क्षमताओं, सीमाओं, सामाजिक पहचान, भविष्य की भूमिका और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बारे में भी नए अनुभव प्राप्त होते हैं। इस अवधि में विद्यार्थी के भीतर स्व-पहचान (Self-Identity), स्व-सम्मान (Self-Esteem) और स्व-छवि (Self-Image) का विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्व-पहचान से तात्पर्य इस बात से है कि व्यक्ति स्वयं को कौन मानता है और अपने बारे में किस प्रकार की पहचान विकसित करता है। स्व-सम्मान व्यक्ति द्वारा स्वयं के मूल्य के बारे में किया गया मूल्यांकन है, जबकि स्व-छवि उस मानसिक धारणा को दर्शाती है जो व्यक्ति अपने शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत गुणों के बारे में रखता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी के लिए सकारात्मक स्व-पहचान और स्वस्थ स्व-सम्मान का विकास उसकी शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता, आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता और भविष्य की योजना को प्रभावित कर सकता है। इसलिए संक्रमण योजना में इन मनोसामाजिक पक्षों को उचित महत्व दिया जाना आवश्यक है।

2.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी—

1.संक्रमण काल की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के जीवन में संक्रमण के विभिन्न चरणों की पहचान कर सकेंगे।

9.स्व-पहचान की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

4.स्व-सम्मान के अर्थ एवं महत्व को समझ सकेंगे।

5.स्व-छवि की अवधारणा को समझ सकेंगे।

6.स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि के बीच संबंध स्पष्ट कर सकेंगे।

7.दृष्टिबाधिता का आत्म-अवधारणा के विकास पर प्रभाव समझ सकेंगे।

8.संक्रमण काल में आने वाली मनोसामाजिक चुनौतियों की पहचान कर सकेंगे।

9.परिवार, सहपाठियों, सामान्य शिक्षक एवं विशेष शिक्षक की भूमिका समझ सकेंगे।

10.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्णय विकसित करने की रणनीतियों को समझ सकेंगे।

11.संक्रमण योजना में स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि के महत्व को समझ सकेंगे।

2.3 संक्रमण काल की अवधारणा (Concept of Transition Period)

संक्रमण का अर्थ एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था में परिवर्तन है। शिक्षा के संदर्भ में संक्रमण विद्यार्थी के विकास का एक निरंतर हिस्सा है। विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश करने, कक्षा बदलने, माध्यमिक शिक्षा में जाने, उच्च शिक्षा में प्रवेश करने, रोजगार प्राप्त करने तथा स्वतंत्र जीवन की ओर बढ़ने के दौरान अनेक संक्रमणों से गुजरता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संक्रमण की प्रक्रिया में कुछ अतिरिक्त आवश्यकताएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी को नए विद्यालय का भौतिक वातावरण समझने, नए मार्गों पर स्वतंत्र रूप से चलने, नई शिक्षण सामग्री तक पहुँच प्राप्त करने, सहायक तकनीक का उपयोग करने तथा नए शिक्षकों एवं साथियों के साथ संबंध विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है।

इसलिए संक्रमण की योजना पहले से बनाई जानी चाहिए। इसमें केवल शैक्षिक उपलब्धियों को ही नहीं बल्कि विद्यार्थी की व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक और स्वतंत्र जीवन से संबंधित आवश्यकताओं को भी शामिल किया जाना चाहिए।

2.4 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के जीवन में संक्रमण काल का महत्व

(Importance of Transition Period)

संक्रमण काल विद्यार्थी के भविष्य की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस अवधि में विद्यार्थी को नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और उसे अपने कौशलों का नए संदर्भों में उपयोग करना सीखना होता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संक्रमण योजना के प्रमुख उद्देश्य हो सकते हैं—

- स्वतंत्रता विकसित करना।
- आत्मविश्वास बढ़ाना।
- निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।
- सामाजिक संबंधों को मजबूत करना।
- उच्च शिक्षा के लिए तैयारी करना।
- रोजगार संबंधी कौशल विकसित करना।
- सहायक तकनीक का उपयोग सीखना।
- अभिविन्यास एवं गतिशीलता कौशल विकसित करना।
- दैनिक जीवन कौशल विकसित करना।

- भविष्य के लक्ष्यों को निर्धारित करना।

इस प्रकार संक्रमण काल केवल शैक्षिक परिवर्तन नहीं बल्कि जीवन में नई भूमिका अपनाने की प्रक्रिया भी है।

2.5 संक्रमण काल के प्रमुख चरण

(Major Stages of Transition)

2.5.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था से विद्यालय में प्रवेश

विद्यालय में प्रवेश बच्चे के जीवन का महत्वपूर्ण परिवर्तन है। दृष्टिबाधित बच्चे के लिए विद्यालय का वातावरण, सहपाठी, शिक्षक, कक्षा व्यवस्था और सीखने की सामग्री नए अनुभव हो सकते हैं।

इस चरण में बच्चे को विद्यालय के वातावरण से परिचित कराना, स्वतंत्र गतिशीलता विकसित करना तथा सकारात्मक सामाजिक अनुभव प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

2.5.2 प्राथमिक से माध्यमिक स्तर में संक्रमण

माध्यमिक स्तर पर विषयों की संख्या, शिक्षण पद्धतियों, शिक्षकों और अपेक्षाओं में परिवर्तन हो सकता है। विद्यार्थी को विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग शिक्षकों के साथ कार्य करना पड़ सकता है।

इस चरण में अध्ययन कौशल, समय प्रबंधन, सहायक तकनीक और आत्मनिर्भरता विशेष महत्व रखते हैं।

2.5.3 विद्यालय से उच्च शिक्षा की ओर संक्रमण

उच्च शिक्षा में विद्यार्थी को अधिक स्वतंत्रता और जिम्मेदारी का सामना करना पड़ सकता है। उसे नए परिसर में जाना, परिवहन का उपयोग करना, अध्ययन सामग्री प्राप्त करना, समय का प्रबंधन करना और शिक्षकों के साथ अपनी आवश्यकताओं के बारे में संवाद करना सीखना पड़ सकता है।

इस चरण में आत्मनिर्णय और आत्म-अधिवक्तृत्व (Self-Advocacy) महत्वपूर्ण कौशल बन जाते हैं।

2.5.4 शिक्षा से रोजगार की ओर संक्रमण

शिक्षा के बाद रोजगार की ओर संक्रमण व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण चरण है। इसमें व्यावसायिक रुचियों की पहचान, कौशल विकास, नौकरी की खोज, साक्षात्कार, कार्यस्थल की आवश्यकताओं को समझना और आवश्यक समायोजन के बारे में संवाद करना शामिल हो सकता है।

2.5.5 स्वतंत्र एवं सामुदायिक जीवन की ओर संक्रमण

वयस्क जीवन में व्यक्ति को दैनिक जीवन, यात्रा, वित्तीय प्रबंधन, सामाजिक संबंध और व्यक्तिगत निर्णयों में अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता हो सकती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए इन कौशलों का प्रशिक्षण संक्रमण योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है।

2.6 स्व-पहचान की अवधारणा (Concept of Self-Identity)

स्व-पहचान से तात्पर्य व्यक्ति की उस धारणा से है जिसके माध्यम से वह स्वयं को एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में पहचानता है। व्यक्ति अपनी पहचान को अपनी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों, सामाजिक संबंधों, अनुभवों, भूमिकाओं और जीवन के लक्ष्यों के आधार पर विकसित करता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी की पहचान केवल उसकी दृष्टिबाधिता तक सीमित नहीं होनी चाहिए। वह विद्यार्थी, मित्र, परिवार का सदस्य, खिलाड़ी, कलाकार, शिक्षक, तकनीक उपयोगकर्ता या भविष्य का पेशेवर हो सकता है।

सकारात्मक स्व-पहचान विद्यार्थी को यह समझने में सहायता करती है कि उसकी दृष्टिबाधिता उसके व्यक्तित्व का एक पक्ष है, लेकिन उसकी संपूर्ण पहचान नहीं है।

2.7 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-पहचान का विकास

स्व-पहचान का विकास परिवार, विद्यालय, साथियों, समाज और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित होता है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी अपनी क्षमताओं और अनुभवों के आधार पर धीरे-धीरे स्वयं के बारे में धारणा विकसित करता है।यदि विद्यार्थी को स्वतंत्र रूप से कार्य करने के अवसर मिलते हैं, तो वह अपनी क्षमताओं को पहचान सकता है। इसके विपरीत, अत्यधिक संरक्षण या हर कार्य में अनावश्यक सहायता मिलने से उसकी स्वतंत्रता और स्वयं के प्रति धारणा प्रभावित हो सकती है।

विशेष शिक्षक विद्यार्थी को उसकी क्षमताओं की पहचान करने, लक्ष्य निर्धारित करने और अपने निर्णयों में भाग लेने के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

2.8 स्व-पहचान को प्रभावित करने वाले कारक

दृष्टिबाधित विद्यार्थी की स्व-पहचान पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ सकता है—

1.परिवार का दृष्टिकोण

2.माता-पिता की अपेक्षाएँ

9.विद्यालय का वातावरण

4.शिक्षक का व्यवहार

5.सहपाठियों का व्यवहार

6.सामाजिक दृष्टिकोण

7.व्यक्तिगत उपलब्धियाँ

8.स्वतंत्रता का स्तर

9.सहायक तकनीक तक पहुँच

10.सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण

11.अवसरों की उपलब्धता

12.भविष्य के लक्ष्य

2.9 स्व-सम्मान की अवधारणा

स्व-सम्मान से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के मूल्य के बारे में विकसित धारणा से है। व्यक्ति स्वयं को कितना सक्षम, महत्वपूर्ण और मूल्यवान मानता है, यह उसके स्व-सम्मान से संबंधित है। स्वस्थ स्व-सम्मान विद्यार्थी को कठिन परिस्थितियों का सामना करने, प्रयास करने, गलतियों से सीखने और अपने लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ने में सहायता कर सकता है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-सम्मान विकसित करने के लिए उन्हें वास्तविक उपलब्धियों के अवसर प्रदान करना आवश्यक है। उन्हें केवल उनकी दृष्टिबाधिता के आधार पर कम अपेक्षाओं वाला वातावरण नहीं दिया जाना चाहिए।

2.10 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-सम्मान का विकास

स्व-सम्मान का विकास अनुभवों और सामाजिक प्रतिक्रिया से जुड़ा होता है। यदि विद्यार्थी को उसकी उपलब्धियों के लिए उचित मान्यता मिलती है और उसे स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अवसर मिलता है, तो उसके स्व-सम्मान को सकारात्मक रूप से विकसित होने में सहायता मिल सकती है।

शिक्षक निम्न माध्यमों से स्व-सम्मान को बढ़ावा दे सकते हैं—

- विद्यार्थी की उपलब्धियों को पहचानना।
- वास्तविक एवं प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करना।
- विद्यार्थी को निर्णय लेने के अवसर देना।
- कक्षा गतिविधियों में समान सहभागिता सुनिश्चित करना।
- सकारात्मक प्रतिक्रिया देना।
- गलतियों को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा मानना।
- स्वतंत्र कार्य के अवसर प्रदान करना।
- सहायक तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देना।

2.11 स्व-सम्मान को प्रभावित करने वाले कारक

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के स्व-सम्मान पर निम्न कारकों का प्रभाव पड़ सकता है—

सकारात्मक कारक

- परिवार का समर्थन
- शिक्षक का प्रोत्साहन
- सकारात्मक सहपाठी संबंध
- शैक्षिक उपलब्धि
- स्वतंत्रता
- आत्मनिर्णय
- सहायक तकनीक
- खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता
- सामाजिक स्वीकृति

नकारात्मक अनुभव

- सामाजिक अलगाव
- अत्यधिक संरक्षण
- लगातार तुलना
- कम अपेक्षाएँ
- अनावश्यक निर्भरता
- अवसरों की कमी
- उपेक्षा या नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण

इसलिए विद्यार्थी को सक्षम और सक्रिय भूमिका में देखना आवश्यक है।

2.12 स्व-छवि की अवधारणा

स्व-छवि उस मानसिक धारणा को कहा जा सकता है जो व्यक्ति अपने बारे में विकसित करता है। इसमें व्यक्ति अपने शारीरिक स्वरूप, क्षमताओं, व्यक्तित्व, सामाजिक भूमिका और व्यवहार के बारे में धारणा रखता है।

दृष्टिबाधित किशोरों में स्व-छवि का विकास विशेष महत्व रखता है क्योंकि किशोरावस्था में शारीरिक परिवर्तन, सामाजिक स्वीकार्यता और साथियों के साथ संबंधों का महत्व बढ़ जाता है।

स्वस्थ स्व-छवि विद्यार्थी को अपने बारे में यथार्थवादी और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करती है।

2.13 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में स्व-छवि का विकास

दृष्टिबाधित विद्यार्थी अपनी स्व-छवि का विकास प्रत्यक्ष अनुभवों के साथ-साथ परिवार, शिक्षक और साथियों की प्रतिक्रिया से करते हैं।दृष्टिबाधित विद्यार्थी को अपने व्यक्तित्व और क्षमताओं के विभिन्न पक्षों को पहचानने का अवसर मिलना चाहिए। उदाहरण के लिए,विद्यार्थी संगीत,खेल,लेखन,तकनीक,अध्ययन,नेतृत्व या अन्य क्षेत्रों में अपनी क्षमता विकसित कर सकता है।

इस प्रकार स्व-छवि को केवल शारीरिक या दृष्टि संबंधी स्थिति से जोड़ना उचित नहीं है। विद्यार्थी की बहुआयामी क्षमताओं को पहचानना आवश्यक है।

2.14 स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि का परस्पर संबंध

स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि तीन अलग-अलग अवधारणाएँ हैं, लेकिन इनके बीच घनिष्ठ संबंध होता है।

अवधारणा	मुख्य अर्थ
स्व-पहचान	मैं कौन हूँ और अपनी पहचान को किस रूप में देखता हूँ
स्व-छवि	मैं अपने बारे में कैसी धारणा रखता हूँ
स्व-सम्मान	मैं अपने स्वयं के मूल्य को किस प्रकार देखता हूँ

यदि विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को पहचानता है, अपने बारे में सकारात्मक धारणा विकसित करता है और स्वयं को मूल्यवान मानता है, तो उसकी आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा मिल सकता है।

2.15 दृष्टिबाधिता और आत्म-अवधारणा (Visual Impairment and Self-Concept)

दृष्टिबाधिता व्यक्ति के जीवन में कुछ अतिरिक्त चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकती है, विशेषकर तब जब सामाजिक और शैक्षिक वातावरण पर्याप्त रूप से सुलभ न हो। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी को गतिविधियों में भाग लेने के अवसर नहीं मिलते, तो वह स्वयं को दूसरों से अलग महसूस कर सकता है।

दूसरी ओर, यदि विद्यार्थी को आवश्यक सहायता, समान अवसर और स्वतंत्रता प्रदान की जाती है, तो वह अपनी क्षमताओं के आधार पर सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित कर सकता है।

इसलिए दृष्टिबाधिता और आत्म-अवधारणा के बीच संबंध को केवल दृष्टि की स्थिति से नहीं बल्कि व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच संबंध के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

2.16 संक्रमण काल में मनोसामाजिक चुनौतियाँ

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

संक्रमण काल में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को विभिन्न मनोसामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है—

- नए वातावरण के प्रति चिंता
- सामाजिक स्वीकार्यता की चिंता
- साथियों के साथ संबंध बनाने में कठिनाई
- अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने में संकोच
- भविष्य के प्रति अनिश्चितता
- स्वतंत्रता से संबंधित कठिनाइयाँ
- सहायता माँगने में झिझक
- रोजगार या उच्च शिक्षा को लेकर चिंता
- नई भूमिकाओं के प्रति अनुकूलन

इन चुनौतियों का समाधान सहायक वातावरण, मार्गदर्शन, परामर्श और कौशल प्रशिक्षण द्वारा किया जा सकता है।

2.17 साथियों एवं सामाजिक संबंधों की भूमिका

साथी संबंध किशोरावस्था और युवा अवस्था में विशेष महत्व रखते हैं। सकारात्मक साथी संबंध विद्यार्थी को सामाजिक स्वीकार्यता, सहयोग और सहभागिता का अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

विद्यालय में समूह गतिविधियों, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सहयोगात्मक शिक्षण में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

साथियों को यह समझना आवश्यक है कि सहायता का उद्देश्य विद्यार्थी की स्वतंत्रता को समाप्त करना नहीं, बल्कि आवश्यकता के अनुसार सहयोग प्रदान करना है।

2.18 परिवार की भूमिका

परिवार विद्यार्थी की स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

परिवार को—

- बच्चे की क्षमताओं पर विश्वास करना चाहिए।
- अत्यधिक संरक्षण से बचना चाहिए।
- स्वतंत्र कार्यों के अवसर देने चाहिए।
- निर्णय लेने में बच्चे को शामिल करना चाहिए।
- उसकी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- भविष्य के लक्ष्यों पर चर्चा करनी चाहिए।
- आवश्यकतानुसार विशेषज्ञों और शिक्षकों के साथ सहयोग करना चाहिए।

परिवार का सकारात्मक एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण विद्यार्थी के आत्मविश्वास को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

2.19 सामान्य एवं विशेष शिक्षक की भूमिका

शिक्षक विद्यार्थी की सकारात्मक आत्म-अवधारणा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामान्य शिक्षक

- कक्षा में समान सहभागिता सुनिश्चित करना।
- विद्यार्थी की क्षमताओं को पहचानना।
- सकारात्मक प्रतिक्रिया देना।
- समूह गतिविधियों में शामिल करना।
- अनावश्यक कम अपेक्षाओं से बचना।

विशेष शिक्षक

- विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पहचान करना।
- आत्मनिर्भरता के कौशल विकसित करना।
- ब्रेल एवं सहायक तकनीक में दक्षता बढ़ाना।
- आत्म-अधिवक्तृत्व कौशल विकसित करना।

- संक्रमण योजना तैयार करने में सहयोग करना।
- उच्च शिक्षा और रोजगार के विकल्पों के संबंध में मार्गदर्शन देना।

2.20 स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि को सुदृढ़ करने की रणनीतियाँ

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए निम्न रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं—

1.सफलता के अवसर प्रदान करना।

2.व्यक्तिगत लक्ष्यों का निर्धारण करना।

3.स्वतंत्र कार्य को प्रोत्साहित करना।

4.निर्णय लेने के अवसर देना।

5.सहायक तकनीक का प्रशिक्षण देना।

6.सामाजिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता बढ़ाना।

7.सकारात्मक प्रतिक्रिया देना।

8.आत्म-अधिवक्तृत्व कौशल विकसित करना।

9.समस्या समाधान कौशल विकसित करना।

10.व्यावसायिक एवं भविष्य संबंधी आकांक्षाओं को प्रोत्साहित करना।

2.21 आत्मनिर्णय एवं स्वतंत्रता का विकास

(Development of Self-Determination and Independence)

आत्मनिर्णय का अर्थ व्यक्ति की अपनी पसंद और लक्ष्यों के संबंध में निर्णय लेने की क्षमता से है। संक्रमण काल में यह कौशल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को निम्न क्षेत्रों में निर्णय लेने के अवसर दिए जा सकते हैं—

- विषय चयन

- अध्ययन की रणनीति
- सहायक तकनीक का चयन
- दैनिक जीवन की गतिविधियाँ
- यात्रा एवं गतिशीलता
- उच्च शिक्षा के विकल्प
- व्यावसायिक रुचियाँ
- व्यक्तिगत लक्ष्य

आत्मनिर्णय के विकास से विद्यार्थी अपने भविष्य की योजना में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

2.22 संक्रमण योजना में स्व-पहचान एवं आत्मविश्वास का समावेश

संक्रमण योजना में विद्यार्थी के शैक्षिक और व्यावसायिक लक्ष्यों के साथ उसके मनोसामाजिक विकास को भी शामिल किया जाना चाहिए।

संक्रमण योजना में निम्न पक्ष शामिल किए जा सकते हैं—

- विद्यार्थी की रुचियाँ
- व्यक्तिगत शक्तियाँ
- आवश्यक सहायता
- भविष्य के लक्ष्य
- आत्मनिर्भरता
- सामाजिक कौशल
- सहायक तकनीक
- अभिविन्यास एवं गतिशीलता
- उच्च शिक्षा
- रोजगार संबंधी कौशल
- व्यक्तिगत निर्णय क्षमता

2.23 सहायक तकनीक एवं स्वतंत्रता

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

सहायक तकनीक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सूचना प्राप्त करने, अध्ययन करने, संचार करने और दैनिक कार्यों को स्वतंत्र रूप से करने में सहायता कर सकती है।

उदाहरण के रूप में—

- स्क्रीन रीडर
- स्क्रीन मैग्नीफिकेशन
- ब्रेल डिस्प्ले
- डिजिटल पुस्तकें
- ऑडियो सामग्री
- स्मार्टफोन आधारित सहायक सुविधाएँ
- इलेक्ट्रॉनिक नोट-टेकिंग उपकरण

तकनीक का उचित प्रशिक्षण विद्यार्थी की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

2.24 व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा संक्रमण में स्व-अवधारणा की भूमिका

उच्च शिक्षा और रोजगार की ओर बढ़ते समय विद्यार्थी को अपनी क्षमताओं और रुचियों की स्पष्ट समझ होना आवश्यक है। सकारात्मक स्व-पहचान विद्यार्थी को उपयुक्त शैक्षिक एवं व्यावसायिक लक्ष्यों के चयन में सहायता कर सकती है।विद्यार्थी को अपनी आवश्यकताओं के बारे में शिक्षकों, संस्थानों और संभावित नियोक्ताओं के साथ प्रभावी रूप से संवाद करना सीखना चाहिए। यह आत्म-अधिवक्तृत्व और आत्मनिर्णय से संबंधित महत्वपूर्ण कौशल है।

2.25 संक्रमण काल में परामर्श एवं मार्गदर्शन

परामर्श एवं मार्गदर्शन संक्रमण काल में विद्यार्थी की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने में सहायता कर सकते हैं।

परामर्श के माध्यम से विद्यार्थी—

- अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है।
- समस्याओं पर चर्चा कर सकता है।
- भविष्य के विकल्पों पर विचार कर सकता है।
- लक्ष्य निर्धारित कर सकता है।

- निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर सकता है।
- आत्मविश्वास बढ़ा सकता है।

विशेष शिक्षक, परामर्शदाता, परिवार और अन्य संबंधित विशेषज्ञ आवश्यकता के अनुसार सहयोग कर सकते हैं।

2.26 समावेशी वातावरण की भूमिका

समावेशी विद्यालयी वातावरण वह है जहाँ दृष्टिबाधित विद्यार्थी को समान अवसर, सम्मान और सहभागिता प्राप्त हो।

ऐसे वातावरण में—

- सुलभ शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो।
- शिक्षक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हों।
- सहपाठी सहयोगी हों।
- विद्यार्थी की आवश्यकताओं का सम्मान किया जाए।
- सहायक तकनीक का उपयोग संभव हो।
- स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया जाए।
- विद्यालयी गतिविधियों में समान भागीदारी हो।

समावेशी वातावरण सकारात्मक स्व-पहचान और स्व-सम्मान के विकास में योगदान कर सकता है।

2.27 प्रमुख चुनौतियाँ एवं समाधान

चुनौती	संभावित समाधान
सामाजिक अलगाव	समूह गतिविधियों में सहभागिता
अत्यधिक संरक्षण	स्वतंत्र कार्यों के अवसर
कम अपेक्षाएँ	क्षमता-आधारित लक्ष्य
नई परिस्थितियों का भय	पूर्व संक्रमण योजना
सहायक तकनीक की कमी	तकनीकी प्रशिक्षण एवं संसाधन

भविष्य को लेकर अनिश्चितता करियर मार्गदर्शन

आत्म-अधिवक्तृत्व की कमी संचार एवं निर्णय कौशल प्रशिक्षण

जानकारी की कमी परिवार एवं शिक्षक का सहयोग

2.28 विशेष शिक्षक के लिए व्यावहारिक सुझाव

विशेष शिक्षक को संक्रमण काल के दौरान—

1.विद्यार्थी की शक्तियों और रुचियों की पहचान करनी चाहिए।

2.विद्यार्थी के साथ व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।

3.आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना चाहिए।

4.सहायक तकनीक में दक्षता विकसित करनी चाहिए।

5.अभिविन्यास एवं गतिशीलता कौशल पर कार्य करना चाहिए।

6.आत्म-अधिवक्तृत्व विकसित करना चाहिए।

7.परिवार को संक्रमण प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए।

8.सामान्य शिक्षक के साथ समन्वय बनाए रखना चाहिए।

9.उच्च शिक्षा और रोजगार के विकल्पों की जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए।

10.विद्यार्थी को अपने भविष्य के निर्णयों में सक्रिय भागीदार बनाना चाहिए।

2.29 समग्र दृष्टिकोण

संक्रमण काल को केवल एक शैक्षिक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह विद्यार्थी के व्यक्तित्व, सामाजिक संबंधों, आत्मनिर्भरता और भविष्य की भूमिका के विकास की प्रक्रिया है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सफल संक्रमण तभी संभव है जब शैक्षिक योजना में उनकी व्यक्तिगत शक्तियों, रुचियों, आवश्यकताओं और लक्ष्यों को शामिल किया जाए।

स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि संक्रमण प्रक्रिया के महत्वपूर्ण मनोसामाजिक पक्ष हैं। सकारात्मक आत्म-अवधारणा विद्यार्थी को नई परिस्थितियों का सामना करने, लक्ष्य निर्धारित करने और अपने भविष्य के संबंध में सक्रिय निर्णय लेने में सहायता कर सकती है।

2.30 सारांश (Summary)

संक्रमण काल व्यक्ति के जीवन में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों की अवधि है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संक्रमण केवल शैक्षिक स्तर परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि उच्च शिक्षा, रोजगार, स्वतंत्र जीवन और सामाजिक भूमिकाओं में परिवर्तन से भी संबंधित है।

इस अवधि में स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि का विकास महत्वपूर्ण है। स्व-पहचान व्यक्ति की अपनी पहचान की समझ से संबंधित है, स्व-सम्मान स्वयं के मूल्य की धारणा से और स्व-छवि स्वयं के बारे में विकसित मानसिक धारणा से संबंधित है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी की सकारात्मक आत्म-अवधारणा उसके परिवार, शिक्षक, सहपाठियों, सामाजिक वातावरण, उपलब्ध अवसरों और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित हो सकती है। अत्यधिक संरक्षण, सामाजिक अलगाव और कम अपेक्षाएँ सकारात्मक आत्म-अवधारणा के विकास में बाधा डाल सकती हैं, जबकि स्वतंत्रता, उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता, प्रोत्साहन और सहायक तकनीक सकारात्मक विकास में सहायता कर सकते हैं।

संक्रमण योजना में विद्यार्थी की रुचियों, क्षमताओं, आवश्यकताओं और भविष्य के लक्ष्यों को शामिल करना आवश्यक है। सामान्य शिक्षक, विशेष शिक्षक, परिवार, सहपाठी और अन्य संबंधित विशेषज्ञों का सहयोग इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकता है।

इस प्रकार संक्रमण काल का अंतिम उद्देश्य केवल विद्यार्थी को अगले शैक्षिक या व्यावसायिक चरण में पहुँचाना नहीं, बल्कि उसे आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, आत्मनिर्णयी और सामाजिक रूप से सक्रिय व्यक्ति के रूप में विकसित होने के अवसर प्रदान करना है।

2.31 प्रमुख शब्दावली (Key Terms)

संक्रमण (Transition): एक अवस्था, स्तर या जीवन-भूमिका से दूसरी अवस्था की ओर परिवर्तन।

स्व-पहचान (Self-Identity): व्यक्ति की स्वयं के बारे में विकसित पहचान और यह समझ कि वह स्वयं को किस रूप में देखता है।

स्व-सम्मान (Self-Esteem): व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के मूल्य और महत्व के बारे में विकसित धारणा।

स्व-छवि (Self-Image): व्यक्ति द्वारा अपने शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत गुणों के बारे में बनाई गई मानसिक धारणा।

आत्म-अवधारणा (Self-Concept): व्यक्ति द्वारा स्वयं के विभिन्न पक्षों के बारे में विकसित समग्र धारणा।

आत्मनिर्णय (Self-Determination): अपने जीवन, लक्ष्यों और विकल्पों के संबंध में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता।

आत्म-अधिवक्तृत्व (Self-Advocacy): अपनी आवश्यकताओं, अधिकारों और इच्छाओं को स्वयं व्यक्त करने तथा उनके लिए उचित समर्थन माँगने की क्षमता।

स्वतंत्रता (Independence): आवश्यकतानुसार न्यूनतम सहायता के साथ कार्य करने की क्षमता।

संक्रमण योजना (Transition Planning): विद्यार्थी के भविष्य के शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक और स्वतंत्र जीवन से संबंधित लक्ष्यों की पूर्व योजना।

2.32 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1.संक्रमण से क्या अभिप्राय है?

2.स्व-पहचान क्या है?

3.स्व-सम्मान से क्या तात्पर्य है?

4.स्व-छवि क्या है?

5.आत्मनिर्णय क्या है?

6.आत्म-अधिवक्तृत्व से क्या अभिप्राय है?

7.संक्रमण योजना क्या है?

8.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सहायक तकनीक का क्या महत्व है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संक्रमण काल का महत्व स्पष्ट कीजिए।

2.स्व-पहचान को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

3.स्व-सम्मान के विकास में परिवार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

4.स्व-छवि के विकास में विद्यालय की भूमिका समझाइए।

5.संक्रमण काल की प्रमुख मनोसामाजिक चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

6.आत्मनिर्णय के विकास में विशेष शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

2.33 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1.संक्रमण काल की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के जीवन में इसके महत्व की विस्तार से विवेचना कीजिए।

2.स्व-पहचान, स्व-सम्मान एवं स्व-छवि की अवधारणाओं को स्पष्ट करते हुए इनके पारस्परिक संबंध की व्याख्या कीजिए।

3.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में सकारात्मक स्व-पहचान एवं स्व-सम्मान के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

4.संक्रमण काल में परिवार, सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

5.दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए प्रभावी संक्रमण योजना के प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।

6.आत्मनिर्णय एवं आत्म-अधिवक्तृत्व के विकास में विशेष शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

7.उच्च शिक्षा एवं रोजगार की ओर संक्रमण में स्व-पहचान, स्व-सम्मान और स्व-छवि के महत्व की विवेचना कीजिए।

2.34 संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1.Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). Exceptional Learners: An Introduction to Special Education (15th ed.). Pearson.

2.Heward, W. L. (2022). Exceptional Children: An Introduction to Special Education (12th ed.). Pearson.

3.Holbrook, M. C., & Koenig, A. J. (Eds.). (2000). Foundations of Education: Instructional Strategies for Teaching Children and Youths with Visual Impairments (2nd ed.). AFB Press.

4.Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 202. Government of India.

5.National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities. (2021). Training Manual on Visual Impairment and Multiple Disabilities. Dehradun: NIEPVD.

6.Rehabilitation Council of India. (2022). Curriculum Framework for B.Ed. and M.Ed. Special Education (Visual Impairment). New Delhi: RCI.

7.Smith, D. D. (2020). Introduction to Special Education: Making a Difference (9th ed.). Pearson.

8.World Health Organization. (2019). World Report on Vision. Geneva: World Health Organization.

9.National Council of Educational Research and Training. (2023). Inclusive Education: Resource Material for Teacher Educators. New Delhi: NCERT.

इकाई–3 : दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा तथा मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका

(concept of children with visual impairment having Additional Disabilities Role of a Multidisciplinary team of professionals in assessment)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

3.2 उद्देश्य (Objectives)

3.3 दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा (Concept of Children with Visual Impairment Having Additional Disabilities)

3.4 दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन (Assessment of Children with Visual Impairment Having Additional Disabilities)

3.4.1 प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन (Early Identification and Assessment)

3.4.2 कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन (Functional and Educational Assessment)

3.5 मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका (Role of a Multidisciplinary Team of Professionals in Assessment)

3.5.1 चिकित्सकीय विशेषज्ञ (Medical Professionals)

3.5.2 शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञ (Educational and Rehabilitation Professionals)

3.5.3 परिवार एवं अन्य सहयोगी विशेषज्ञ (Parents and Other Support Professionals)

3.6 समावेशी शिक्षा में शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications in Inclusive Education)

3.7 सारांश (Summary)

3.8 शब्दावली (Glossary)

3.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

3.10 सन्दर्भ ग्रंथ सूची (References)

3.11 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

3.1 प्रस्तावना

दृष्टिबाधिता केवल देखने की क्षमता में कमी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चे के संपूर्ण विकास, अधिगम, संचार, गतिशीलता तथा सामाजिक सहभागिता को भी प्रभावित कर सकती है। जब किसी दृष्टिबाधित बच्चे के साथ एक या एक से अधिक अतिरिक्त दिव्यांगताएँ, जैसे– बौद्धिक दिव्यांगता, श्रवण दिव्यांगता, प्रमस्तिष्क पक्षाघात (Cerebral Palsy), ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, अधिगम अक्षमता या बहुदिव्यांगता भी जुड़ी होती हैं, तब उसकी शैक्षिक, सामाजिक तथा पुनर्वास संबंधी आवश्यकताएँ अधिक जटिल हो जाती हैं। ऐसे बच्चों को दृष्टिबाधिता के साथ अतिरिक्त दिव्यांगता (Visual Impairment with Additional Disabilities) वाले बच्चों के रूप में जाना जाता है।

इन बच्चों की आवश्यकताओं को समझने के लिए केवल दृष्टि का मूल्यांकन पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उनके शारीरिक, मानसिक, संवेदी, संचारात्मक, व्यवहारिक एवं कार्यात्मक पक्षों का समग्र मूल्यांकन आवश्यक होता है। इसलिए इनके आकलन एवं शैक्षिक योजना निर्माण में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों का सहयोग आवश्यक होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बहु-विषयक विशेषज्ञों (Multidisciplinary Team) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इस इकाई में दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा, उनकी प्रमुख विशेषताओं, मूल्यांकन की आवश्यकता तथा मूल्यांकन में नेत्र रोग विशेषज्ञ, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट तथा अभिभावकों सहित

बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही समावेशी शिक्षा के संदर्भ में ऐसे बच्चों के लिए आवश्यक शैक्षिक सहयोग एवं सेवाओं की भी चर्चा की जाएगी।

3.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी—

1.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा तथा उनकी प्रमुख विशेषताओं को समझ सकेंगे।

2.दृष्टिबाधिता के साथ होने वाली विभिन्न अतिरिक्त दिव्यांगताओं तथा उनके शैक्षिक प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे।

3.ऐसे बच्चों की पहचान एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे।

4.मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञों (Multidisciplinary Team) की भूमिका एवं उत्तरदायित्वों का वर्णन कर सकेंगे।

5.समावेशी शिक्षा के अंतर्गत ऐसे बच्चों के लिए उपयुक्त शैक्षिक सहयोग, अनुकूलन एवं पुनर्वास सेवाओं की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

9.3 दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा (Concept of Children with Visual Impairment Having Additional Disabilities)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चे वे होते हैं जिनमें दृष्टिबाधिता के साथ-साथ एक या एक से अधिक अन्य दिव्यांगताएँ भी विद्यमान होती हैं। ये अतिरिक्त दिव्यांगताएँ बौद्धिक दिव्यांगता, श्रवण दिव्यांगता, प्रमस्तिष्क पक्षाघात (Cerebral Palsy), ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder), अधिगम अक्षमता (Learning Disability), बहुदिव्यांगता (Multiple Disabilities) अथवा अन्य विकासात्मक विकारों के रूप में हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे की शैक्षिक, सामाजिक, संचारात्मक तथा कार्यात्मक आवश्यकताएँ सामान्य दृष्टिबाधित बच्चों की अपेक्षा अधिक जटिल हो जाती हैं।

प्रत्येक दृष्टिबाधित बच्चे में अतिरिक्त दिव्यांगता होना आवश्यक नहीं है, परंतु जिन बच्चों में दो या दो से अधिक दिव्यांगताएँ एक साथ उपस्थित होती हैं, उनकी शिक्षा एवं पुनर्वास के लिए विशेष योजना की आवश्यकता होती है। इन बच्चों की कठिनाइयाँ केवल देखने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे सीखने, भाषा विकास, संचार, गतिशीलता, आत्म-देखभाल, सामाजिक सहभागिता तथा व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों को भी प्रभावित करती हैं। इसलिए इन बच्चों की आवश्यकताओं को

केवल एक दिव्यांगता के आधार पर नहीं समझा जा सकता, बल्कि समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक होता है।

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले प्रत्येक बच्चे की क्षमताएँ, सीमाएँ तथा अधिगम की गति भिन्न-भिन्न होती है। कुछ बच्चे उपयुक्त प्रशिक्षण एवं सहायक उपकरणों की सहायता से सामान्य विद्यालय में प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं, जबकि कुछ बच्चों को विशेष शिक्षण, चिकित्सीय सेवाओं तथा निरंतर पुनर्वास सहयोग की आवश्यकता होती है। अतः इनके लिए व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रम (Individualized Educational Programme–IEP) तैयार करना आवश्यक माना जाता है।

समावेशी शिक्षा की अवधारणा के अनुसार ऐसे प्रत्येक बच्चे को समान शैक्षिक अवसर, सम्मान तथा सहभागिता का अधिकार प्राप्त है। इसके लिए विद्यालय में अनुकूल वातावरण, उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री, सहायक प्रौद्योगिकी, ब्रेल अथवा बड़े अक्षरों की पुस्तकें, वैकल्पिक संचार माध्यम तथा आवश्यकता-आधारित शिक्षण रणनीतियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। साथ ही परिवार, विद्यालय तथा विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य समन्वय स्थापित करना भी आवश्यक है, ताकि बच्चे का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

इस प्रकार, दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा केवल उनकी दिव्यांगताओं की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी क्षमताओं, आवश्यकताओं, संभावनाओं तथा अधिकारों को ध्यान में रखते हुए समग्र मूल्यांकन, उपयुक्त शिक्षण, पुनर्वास सेवाओं तथा सामाजिक समावेशन की व्यवस्था करना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

3.4 दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन (Assessment of Children with Visual Impairment Having Additional Disabilities)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन (Assessment) एक सतत, व्यवस्थित तथा बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बच्चे की क्षमताओं, सीमाओं, आवश्यकताओं तथा विकास की संभावनाओं का समग्र अध्ययन किया जाता है। ऐसे बच्चों में केवल दृष्टि की जाँच पर्याप्त नहीं होती, क्योंकि दृष्टिबाधिता के साथ उपस्थित अन्य दिव्यांगताएँ भी उनके अधिगम, संचार, व्यवहार, गतिशीलता तथा दैनिक जीवन कौशल को प्रभावित करती हैं। इसलिए मूल्यांकन का उद्देश्य केवल दिव्यांगता का निर्धारण करना नहीं, बल्कि बच्चे की वास्तविक शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करना होता है।

मूल्यांकन की प्रक्रिया बच्चे के विकासात्मक इतिहास, चिकित्सीय अभिलेख (Medical Records), पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा विद्यालयी प्रदर्शन के अध्ययन से प्रारम्भ होती है। इसके पश्चात् बच्चे की दृष्टि की स्थिति, कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision), अवशिष्ट दृष्टि

(Residual Vision) तथा दैनिक जीवन में दृष्टि के उपयोग का मूल्यांकन किया जाता है। यदि बच्चे में अतिरिक्त दिव्यांगता भी है, तो उसके संज्ञानात्मक विकास, भाषा एवं संचार कौशल, सामाजिक-भावनात्मक व्यवहार, मोटर कौशल तथा आत्म-देखभाल संबंधी क्षमताओं का भी विस्तृत आकलन किया जाता है।

ऐसे बच्चों के मूल्यांकन में औपचारिक (Formal) तथा अनौपचारिक (Informal) दोनों प्रकार की विधियों का उपयोग किया जाता है। औपचारिक मूल्यांकन में मानकीकृत परीक्षण, दृष्टि परीक्षण तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण सम्मिलित होते हैं, जबकि अनौपचारिक मूल्यांकन में कक्षा अवलोकन, गतिविधि-आधारित मूल्यांकन, शिक्षक एवं अभिभावक से साक्षात्कार तथा बच्चे के व्यवहार का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया जाता है। इन दोनों प्रकार के मूल्यांकन से बच्चे की वास्तविक क्षमताओं और कठिनाइयों की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है।

मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह निर्धारित करना भी है कि बच्चे को किस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था, सहायक उपकरण, शिक्षण सामग्री, संचार माध्यम तथा पुनर्वास सेवाओं की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, कुछ बच्चों को ब्रेल शिक्षा की आवश्यकता होती है, जबकि कुछ बच्चे बड़े अक्षरों (Large Print), लो-विजन उपकरणों अथवा सहायक प्रौद्योगिकी की सहायता से बेहतर अधिगम कर सकते हैं। इसी प्रकार यदि बच्चे में श्रवण, बौद्धिक या शारीरिक दिव्यांगता भी है, तो उसके अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ एवं सहयोगी सेवाएँ निर्धारित की जाती हैं।

अतः दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन केवल निदान (Diagnosis) तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP), समुचित हस्तक्षेप, पुनर्वास सेवाओं तथा समावेशी शिक्षा की प्रभावी योजना का आधार प्रदान करता है। एक वैज्ञानिक, समग्र एवं आवश्यकता-आधारित मूल्यांकन ही ऐसे बच्चों के सर्वांगीण विकास तथा आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

9.4.1 प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन (Early Identification and Assessment)

प्रारम्भिक पहचान का अर्थ

प्रारम्भिक पहचान (Early Identification) से आशय बच्चे में दृष्टिबाधिता तथा उसके साथ उपस्थित अन्य दिव्यांगताओं की समय रहते पहचान करने से है। यह पहचान जन्म के समय, शैशवावस्था, पूर्व-विद्यालय अथवा विद्यालय स्तर पर की जा सकती है। समय पर पहचान होने से बच्चे की आवश्यकताओं को समझना तथा उसके लिए उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाना संभव हो जाता है।

प्रारम्भिक पहचान की आवश्यकता

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए प्रारम्भिक पहचान अत्यंत आवश्यक है। यदि समस्या का पता प्रारम्भिक अवस्था में चल जाए, तो शीघ्र हस्तक्षेप (Early Intervention) प्रारम्भ किया जा सकता है। इससे बच्चे के भाषा विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक समायोजन, गतिशीलता तथा दैनिक जीवन कौशल में सकारात्मक सुधार होता है। साथ ही भविष्य में उत्पन्न होने वाली अनेक कठिनाइयों को कम किया जा सकता है।

प्रारम्भिक पहचान के प्रमुख संकेत

बच्चे में कुछ ऐसे संकेत दिखाई देते हैं जो दृष्टिबाधिता अथवा अतिरिक्त दिव्यांगता की संभावना की ओर संकेत करते हैं। जैसे— वस्तुओं को पहचानने में कठिनाई होना, आँखों का असामान्य रूप से हिलना, प्रकाश के प्रति अत्यधिक या बहुत कम प्रतिक्रिया देना, बार-बार वस्तुओं से टकराना, विकासात्मक मील के पत्थरों में विलम्ब, भाषा विकास में देरी, निर्देशों को समझने में कठिनाई, चलने-फिरने या संतुलन बनाए रखने में समस्या तथा सामाजिक गतिविधियों में कम रुचि। ऐसे संकेत दिखाई देने पर विशेषज्ञ द्वारा विस्तृत मूल्यांकन कराया जाना चाहिए।

प्रारम्भिक मूल्यांकन का अर्थ

प्रारम्भिक मूल्यांकन (Early Assessment) एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बच्चे की क्षमताओं, सीमाओं तथा आवश्यकताओं का समग्र अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल दिव्यांगता का निर्धारण करना नहीं, बल्कि यह जानना भी है कि बच्चा किन क्षेत्रों में सक्षम है, किन क्षेत्रों में सहायता की आवश्यकता है तथा उसके लिए कौन-सी शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाएँ उपयुक्त होंगी।

मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

प्रारम्भिक मूल्यांकन में अनेक क्षेत्रों का आकलन किया जाता है। इनमें दृष्टि की स्थिति, कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision), अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision), बौद्धिक क्षमता, भाषा एवं संचार कौशल, मोटर विकास, दैनिक जीवन कौशल, सामाजिक-भावनात्मक व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन शामिल होता है। प्रत्येक क्षेत्र का मूल्यांकन बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है।

प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन का महत्व

प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन बच्चे के समग्र विकास की आधारशिला है। इसके आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार की जाती है, उपयुक्त सहायक उपकरणों का चयन किया

जाता है तथा आवश्यक चिकित्सीय, शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इससे बच्चे की अधिगम क्षमता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता तथा समावेशी शिक्षा में सफल भागीदारी सुनिश्चित होती है। इसलिए प्रत्येक दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चे के लिए समय पर पहचान और समग्र मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

9.4.2 कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन (Functional and Educational Assessment)

कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन (Functional and Educational Assessment) दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसका उद्देश्य केवल बच्चे की दृष्टि या अन्य दिव्यांगता का निर्धारण करना नहीं होता, बल्कि यह जानना होता है कि बच्चा अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग वास्तविक जीवन तथा शैक्षिक परिस्थितियों में किस प्रकार करता है। इस मूल्यांकन के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है कि बच्चे को किस प्रकार की शिक्षण विधि, सहायक उपकरण, अनुकूलन तथा सहयोगी सेवाओं की आवश्यकता होगी।

कार्यात्मक मूल्यांकन का अर्थ

कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह अध्ययन किया जाता है कि बच्चा अपनी अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision) का उपयोग दैनिक जीवन एवं अधिगम गतिविधियों में कितनी प्रभावी ढंग से कर रहा है। इसमें केवल चिकित्सकीय रिपोर्ट पर निर्भर नहीं रहा जाता, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों में बच्चे के प्रदर्शन का अवलोकन किया जाता है। उदाहरण के लिए, बच्चा कक्षा में बोर्ड देख पाता है या नहीं, पुस्तक पढ़ सकता है या नहीं, चेहरे पहचान सकता है या नहीं तथा विद्यालय परिसर में सुरक्षित रूप से चल-फिर सकता है या नहीं।

शैक्षिक मूल्यांकन का अर्थ

शैक्षिक मूल्यांकन (Educational Assessment) का उद्देश्य बच्चे की अधिगम क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सीखने की आवश्यकताओं का आकलन करना है। इसके माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि बच्चा पढ़ने, लिखने, गणना करने, निर्देशों का पालन करने, समस्या समाधान करने तथा कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने में कितना सक्षम है। साथ ही यह भी देखा जाता है कि दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगता उसके अधिगम को किस प्रकार प्रभावित कर रही है।

कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है—

- कार्यात्मक दृष्टि एवं अवशिष्ट दृष्टि का उपयोग।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

- पढ़ने-लिखने के उपयुक्त माध्यम (प्रिंट, बड़े अक्षर या ब्रेल) का निर्धारण।
- भाषा एवं संचार कौशल का मूल्यांकन।
- संज्ञानात्मक एवं अधिगम क्षमता का आकलन।
- दैनिक जीवन कौशल, गतिशीलता (Orientation and Mobility) तथा आत्मनिर्भरता का अध्ययन।
- सामाजिक व्यवहार, सहभागिता एवं कक्षा में समायोजन का मूल्यांकन।

कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन का महत्व

इस प्रकार का मूल्यांकन बच्चे की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने में सहायता करता है। इसके आधार पर शिक्षक यह निर्णय लेते हैं कि बच्चे के लिए कौन-सी शिक्षण रणनीति, शिक्षण सामग्री, सहायक प्रौद्योगिकी, कक्षा अनुकूलन तथा मूल्यांकन पद्धति उपयुक्त होगी। यही जानकारी व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार करने तथा समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने का आधार बनती है। इसलिए कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के समग्र विकास एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

3.5 मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका (Role of a Multidisciplinary Team of Professionals in Assessment)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन केवल दृष्टि की जाँच तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह एक व्यापक, समन्वित एवं बहुआयामी प्रक्रिया है। ऐसे बच्चों में दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताएँ भी विद्यमान हो सकती हैं, जिनका प्रभाव उनके शारीरिक, मानसिक, संवेदी, संचारात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक विकास पर पड़ता है। इसलिए केवल एक विशेषज्ञ द्वारा किया गया मूल्यांकन बच्चे की सभी आवश्यकताओं को स्पष्ट नहीं कर सकता। इन परिस्थितियों में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया मूल्यांकन अधिक प्रभावी एवं विश्वसनीय माना जाता है। इस प्रकार के समन्वित प्रयास को बहु-विषयक विशेषज्ञ दल (Multidisciplinary Team) कहा जाता है।

बहु-विषयक विशेषज्ञ दल ऐसे प्रशिक्षित एवं अनुभवी विशेषज्ञों का समूह होता है, जो अपनी-अपनी विशेषज्ञता के आधार पर बच्चे के विकास के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करते हैं। इस दल में सामान्यतः नेत्र रोग विशेषज्ञ (Ophthalmologist), ऑप्टोमेट्रिस्ट (Optometrist), विशेष शिक्षक (दृष्टिबाधिता), मनोवैज्ञानिक, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ (Speech and Language Therapist), सामाजिक कार्यकर्ता तथा अभिभावक शामिल होते हैं।

प्रत्येक विशेषज्ञ बच्चे की आवश्यकताओं का अलग-अलग दृष्टिकोण से अध्ययन करता है तथा सभी विशेषज्ञ मिलकर बच्चे की समग्र शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी योजना तैयार करते हैं।

बहु-विषयक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य केवल बच्चे की दिव्यांगता का निदान (Diagnosis) करना नहीं है, बल्कि उसकी शेष क्षमताओं (Residual Abilities), कार्यात्मक योग्यताओं (Functional Abilities), अधिगम शैली, व्यवहार, संचार क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं का समग्र अध्ययन करना भी है। इस मूल्यांकन के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि बच्चे को किस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था, सहायक उपकरण, चिकित्सीय सेवाएँ, पुनर्वास कार्यक्रम तथा व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme—IEP) की आवश्यकता होगी।

बहु-विषयक विशेषज्ञ दल का कार्य केवल प्रारम्भिक मूल्यांकन तक सीमित नहीं रहता। यह दल समय-समय पर बच्चे की प्रगति का पुनर्मूल्यांकन (Reassessment) भी करता है। यदि बच्चे की क्षमताओं, आवश्यकताओं अथवा विकास की गति में परिवर्तन होता है, तो उसी के अनुरूप शिक्षण रणनीतियों, सहायक उपकरणों, चिकित्सीय सेवाओं तथा पुनर्वास कार्यक्रमों में आवश्यक संशोधन किए जाते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन एक सतत (Continuous) एवं गतिशील (Dynamic) प्रक्रिया बन जाता है, जो बच्चे के विकास के प्रत्येक चरण में उसका मार्गदर्शन करती है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में बहु-विषयक विशेषज्ञ दल की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यह दल विद्यालय, परिवार तथा समुदाय के मध्य समन्वय स्थापित करता है, जिससे बच्चे को विद्यालय एवं घर दोनों स्थानों पर समान प्रकार का सहयोग प्राप्त हो सके। साथ ही अभिभावकों को आवश्यक परामर्श प्रदान किया जाता है, ताकि वे बच्चे की विशेष आवश्यकताओं को समझते हुए उसके विकास में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। टीम के विभिन्न सदस्यों के बीच नियमित विचार-विमर्श एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान बच्चे के लिए प्रभावी हस्तक्षेप (Intervention) सुनिश्चित करता है।

वर्तमान समय में यह स्वीकार किया गया है कि दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। इसलिए एक समान शिक्षण व्यवस्था सभी बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। बहु-विषयक विशेषज्ञ दल बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय लेकर उसकी क्षमताओं का अधिकतम विकास करने का प्रयास करता है। यही कारण है कि आधुनिक विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा में बहु-विषयक टीम को मूल्यांकन की सबसे प्रभावी एवं वैज्ञानिक व्यवस्था माना गया है।

अतः स्पष्ट है कि बहु-विषयक विशेषज्ञों की भूमिका केवल मूल्यांकन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे बच्चे की पहचान, आवश्यकता निर्धारण, शैक्षिक योजना निर्माण, पुनर्वास सेवाओं के

समन्वय, प्रगति के निरंतर मूल्यांकन तथा परिवार को मार्गदर्शन प्रदान करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। विभिन्न विशेषज्ञों की सामूहिक विशेषज्ञता के माध्यम से ही दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण, आवश्यकता-आधारित तथा समावेशी शिक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

3.5.1 चिकित्सकीय विशेषज्ञ (Medical Professionals)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन में चिकित्सकीय विशेषज्ञों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। किसी भी बच्चे की शैक्षिक योजना, पुनर्वास कार्यक्रम तथा आवश्यक सहयोगी सेवाओं का निर्धारण तभी प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, जब उसकी चिकित्सकीय स्थिति का सही एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन किया गया हो। चिकित्सकीय विशेषज्ञ यह निर्धारित करते हैं कि बच्चे में दृष्टिबाधिता किस प्रकार की है, उसकी गंभीरता कितनी है, दृष्टि में सुधार की संभावना है या नहीं तथा उसके साथ उपस्थित अन्य दिव्यांगताओं का बच्चे के समग्र विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उनके द्वारा प्रदान की गई जानकारी अन्य विशेषज्ञों के लिए भी मार्गदर्शक का कार्य करती है।

चिकित्सकीय विशेषज्ञों में मुख्य रूप से नेत्र रोग विशेषज्ञ (Ophthalmologist), ऑप्टोमेट्रिस्ट (Optometrist), बाल रोग विशेषज्ञ (Pediatrician), न्यूरोलॉजिस्ट (Neurologist) तथा आवश्यकता के अनुसार अन्य चिकित्सा विशेषज्ञ शामिल होते हैं। प्रत्येक विशेषज्ञ अपनी विशेषज्ञता के आधार पर बच्चे के स्वास्थ्य एवं विकास के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करता है।

(क) नेत्र रोग विशेषज्ञ (Ophthalmologist) की भूमिका

नेत्र रोग विशेषज्ञ दृष्टिबाधिता के चिकित्सकीय मूल्यांकन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वे बच्चे की आँखों की विस्तृत जाँच करके यह निर्धारित करते हैं कि दृष्टिबाधिता का कारण क्या है, उसकी प्रकृति (Nature) एवं गंभीरता (Severity) कितनी है तथा उपचार की क्या संभावनाएँ हैं। वे यह भी बताते हैं कि दृष्टिबाधिता जन्मजात (Congenital) है या अर्जित (Acquired), स्थायी है अथवा उपचार योग्य।

नेत्र रोग विशेषज्ञ दृष्टि तीक्ष्णता (Visual Acuity), दृष्टि क्षेत्र (Visual Field), रेटिना, कॉर्निया, ऑप्टिक नर्व तथा आँख की अन्य संरचनाओं की जाँच करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे दवा, शल्य चिकित्सा (Surgery) अथवा अन्य चिकित्सकीय उपचार की सलाह देते हैं। उनके द्वारा जारी चिकित्सकीय प्रमाण-पत्र (Medical Certificate) एवं नैदानिक रिपोर्ट आगे की शैक्षिक एवं पुनर्वास योजना के लिए महत्वपूर्ण आधार बनते हैं।

(ख) ऑप्टोमेट्रिस्ट (Optometrist) की भूमिका

ऑप्टोमेट्रिस्ट का मुख्य कार्य बच्चे की कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision) तथा अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision) का मूल्यांकन करना होता है। वे यह निर्धारित करते हैं कि बच्चा अपनी उपलब्ध दृष्टि का दैनिक जीवन एवं अधिगम गतिविधियों में किस प्रकार उपयोग कर सकता है।

ऑप्टोमेट्रिस्ट यह भी सुझाव देते हैं कि बच्चे के लिए कौन-सा सहायक उपकरण उपयुक्त रहेगा, जैसे— लो विज़न एड्स (Low Vision Aids), मैग्नीफायर (Magnifier), टेलीस्कोपिक उपकरण, विशेष चश्मा, उचित प्रकाश व्यवस्था तथा बड़े अक्षरों वाली अध्ययन सामग्री। उनके सुझावों के आधार पर विशेष शिक्षक बच्चे के लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ तैयार करते हैं।

(ग) अन्य चिकित्सकीय विशेषज्ञों की भूमिका

यदि दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताएँ भी उपस्थित हों, तो अन्य चिकित्सकीय विशेषज्ञों का सहयोग आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए, बाल रोग विशेषज्ञ बच्चे के सामान्य शारीरिक विकास का मूल्यांकन करते हैं, जबकि न्यूरोलॉजिस्ट मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र से संबंधित समस्याओं की जाँच करते हैं। इसी प्रकार आवश्यकता होने पर अस्थि रोग विशेषज्ञ, ईएनटी विशेषज्ञ अथवा अन्य चिकित्सा विशेषज्ञ भी मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्मिलित किए जाते हैं।

चिकित्सकीय विशेषज्ञों का शैक्षिक महत्व

चिकित्सकीय विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की गई जानकारी के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है कि बच्चे को ब्रेल शिक्षा, बड़े अक्षरों (Large Print), सहायक प्रौद्योगिकी, लो-विजन उपकरण, कक्षा में विशेष बैठने की व्यवस्था, अतिरिक्त समय अथवा अन्य शैक्षिक सुविधाओं की आवश्यकता है या नहीं। उनके सुझाव व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार करने तथा समुचित पुनर्वास सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः चिकित्सकीय विशेषज्ञ बहु-विषयक दल के आधार स्तंभ माने जाते हैं। उनके वैज्ञानिक एवं सटीक मूल्यांकन के बिना दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की वास्तविक आवश्यकताओं को समझना तथा उनके लिए प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रम तैयार करना संभव नहीं है। इसलिए समावेशी शिक्षा एवं विशेष शिक्षा दोनों में चिकित्सकीय विशेषज्ञों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य माना जाता है।

3.5.2 शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञ (Educational and Rehabilitation Professionals)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन में शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जहाँ चिकित्सकीय विशेषज्ञ बच्चे की दिव्यांगता की प्रकृति एवं कारणों का निर्धारण करते हैं, वहीं शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञ यह मूल्यांकन करते हैं कि दिव्यांगता का बच्चे के अधिगम, व्यवहार, संचार, गतिशीलता तथा दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव

पड़ रहा है। इनके द्वारा किए गए मूल्यांकन के आधार पर बच्चे के लिए उपयुक्त शिक्षण कार्यक्रम, पुनर्वास सेवाएँ तथा व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP) तैयार की जाती है।

शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञों में मुख्य रूप से विशेष शिक्षक (दृष्टिबाधिता), मनोवैज्ञानिक, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट तथा वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ (Speech and Language Therapist) शामिल होते हैं। प्रत्येक विशेषज्ञ अपनी विशेषज्ञता के अनुसार बच्चे की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करता है तथा अन्य विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करता है।

विशेष शिक्षक (दृष्टिबाधिता) बच्चे की कार्यात्मक दृष्टि, ब्रेल या प्रिंट माध्यम की आवश्यकता, अधिगम क्षमता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा कक्षा में प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है। वह यह निर्धारित करता है कि बच्चे को किस प्रकार की शिक्षण सामग्री, सहायक उपकरण, कक्षा अनुकूलन तथा शिक्षण-अधिगम रणनीतियों की आवश्यकता होगी। विशेष शिक्षक ही व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार करने और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मनोवैज्ञानिक (Psychologist) बच्चे की बौद्धिक क्षमता, संज्ञानात्मक विकास, ध्यान, स्मृति, समस्या-समाधान क्षमता, सामाजिक-भावनात्मक व्यवहार तथा अनुकूलन क्षमता का मूल्यांकन करता है। यदि बच्चे में व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ, सीखने की समस्याएँ अथवा भावनात्मक तनाव हो, तो मनोवैज्ञानिक आवश्यक परामर्श एवं हस्तक्षेप की योजना भी तैयार करता है।

फिजियोथेरेपिस्ट (Physiotherapist) उन बच्चों का मूल्यांकन करता है जिनमें दृष्टिबाधिता के साथ शारीरिक या मोटर संबंधी कठिनाइयाँ होती हैं। वह शरीर की गति, मांसपेशियों की शक्ति, संतुलन, समन्वय तथा चलने-फिरने की क्षमता का आकलन कर आवश्यक व्यायाम एवं प्रशिक्षण प्रदान करता है।

ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट (Occupational Therapist) बच्चे की दैनिक जीवन क्रियाओं, सूक्ष्म मोटर कौशल (Fine Motor Skills), हाथ-आँख समन्वय, आत्म-देखभाल तथा विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता का मूल्यांकन करता है। वह बच्चे को अधिक आत्मनिर्भर बनाने के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण एवं सहायक तकनीकों का सुझाव देता है।

वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ (Speech and Language Therapist) बच्चे की भाषा, वाणी तथा संचार कौशल का मूल्यांकन करता है। यदि बच्चे को बोलने, समझने या अपनी बात व्यक्त करने में कठिनाई हो, तो वह उपयुक्त संचार तकनीकों एवं भाषा विकास कार्यक्रमों की योजना तैयार करता है।

इस प्रकार, शैक्षिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञों का संयुक्त मूल्यांकन बच्चे की वास्तविक शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने में सहायता करता है। इनके सहयोग से बच्चे के लिए उपयुक्त शिक्षण वातावरण, पुनर्वास सेवाएँ तथा समावेशी शिक्षा की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकती है। इसलिए बहु-विषयक दल में इन विशेषज्ञों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य मानी जाती है।

3.5.3 परिवार एवं अन्य सहयोगी विशेषज्ञ (Parents and Other Support Professionals)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन में परिवार एवं अन्य सहयोगी विशेषज्ञों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। किसी भी बच्चे का समग्र मूल्यांकन तभी प्रभावी माना जाता है, जब उसमें केवल चिकित्सकीय एवं शैक्षिक विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि परिवार तथा अन्य सहयोगी पेशेवरों की भी सक्रिय सहभागिता हो। परिवार बच्चे के जीवन का प्रथम एवं सबसे निकटतम परिवेश होता है, इसलिए उसके विकास, व्यवहार, रुचियों, क्षमताओं तथा कठिनाइयों के संबंध में सबसे अधिक जानकारी परिवार के सदस्यों के पास होती है। इसी कारण आधुनिक विशेष शिक्षा में परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण (Family-Centred Approach) को विशेष महत्व दिया जाता है।

माता-पिता बच्चे के जन्म से ही उसके विकास की प्रत्येक अवस्था का अवलोकन करते हैं। वे बच्चे की दृष्टि संबंधी समस्याओं, भाषा विकास, सामाजिक व्यवहार, दैनिक जीवन कौशल तथा अन्य विकासात्मक परिवर्तनों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। मूल्यांकन के दौरान परिवार द्वारा दी गई जानकारी विशेषज्ञों को बच्चे की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने में सहायता करती है। इसके अतिरिक्त, परिवार बच्चे की रुचियों, सीखने की शैली, व्यवहार संबंधी विशेषताओं तथा घर के वातावरण से संबंधित उपयोगी सूचनाएँ भी उपलब्ध कराता है, जिससे अधिक सटीक एवं आवश्यकता-आधारित मूल्यांकन संभव हो पाता है।

मूल्यांकन के पश्चात् परिवार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए प्रशिक्षण, अभ्यास, व्यवहार प्रबंधन तकनीकों तथा दैनिक जीवन कौशल के विकास को घर पर नियमित रूप से लागू करने का कार्य मुख्यतः अभिभावक ही करते हैं। यदि परिवार विद्यालय एवं विशेषज्ञों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखे, तो बच्चे की प्रगति अधिक प्रभावी ढंग से होती है। इसलिए मूल्यांकन की प्रक्रिया में अभिभावकों को केवल सूचना देने वाला नहीं, बल्कि सक्रिय सहयोगी (Active Partner) माना जाता है।

परिवार के अतिरिक्त अन्य सहयोगी विशेषज्ञ भी मूल्यांकन एवं पुनर्वास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता (Social Worker) परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करता है तथा उन्हें उपलब्ध सरकारी योजनाओं, पुनर्वास सेवाओं एवं

सामुदायिक संसाधनों की जानकारी प्रदान करता है। वह परिवार और विभिन्न संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करने का कार्य भी करता है।

इसी प्रकार, ओरिएंटेशन एवं मोबिलिटी प्रशिक्षक (Orientation and Mobility Instructor) बच्चे की सुरक्षित एवं स्वतंत्र गतिशीलता का मूल्यांकन करता है तथा उसे छड़ी (Cane) का उपयोग, दिशा ज्ञान, मार्ग पहचान तथा सुरक्षित आवागमन का प्रशिक्षण प्रदान करता है। आवश्यकता पड़ने पर लो-विजन विशेषज्ञ, पुनर्वास मनोवैज्ञानिक, परामर्शदाता (Counsellor) तथा सहायक प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ (Assistive Technology Specialist) भी मूल्यांकन प्रक्रिया में सहयोग करते हैं। ये विशेषज्ञ बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार उपयुक्त उपकरण, तकनीकी सहायता एवं प्रशिक्षण की अनुशंसा करते हैं।

परिवार एवं अन्य सहयोगी विशेषज्ञों के बीच प्रभावी समन्वय बहु-विषयक टीम की सफलता का आधार होता है। सभी विशेषज्ञ नियमित रूप से सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, बच्चे की प्रगति की समीक्षा करते हैं तथा आवश्यकतानुसार व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) में संशोधन करते हैं। इस समन्वित प्रयास से बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन की गुणवत्ता में निरंतर सुधार होता है।

अतः स्पष्ट है कि दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन में परिवार तथा अन्य सहयोगी विशेषज्ञ केवल सहायक भूमिका नहीं निभाते, बल्कि वे बहु-विषयक दल के अभिन्न सदस्य होते हैं। उनके अनुभव, सुझाव एवं सक्रिय सहभागिता के बिना बच्चे की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान तथा प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं का निर्धारण संभव नहीं है। इसलिए समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए परिवार और सहयोगी विशेषज्ञों की सहभागिता अनिवार्य मानी जाती है।

3.6 समावेशी शिक्षा में शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications in Inclusive Education)

समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का मूल उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा रुचियों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के संदर्भ में समावेशी शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि इन बच्चों की आवश्यकताएँ सामान्य बच्चों तथा केवल दृष्टिबाधित बच्चों से भिन्न होती हैं। इसलिए इनके लिए केवल विद्यालय में प्रवेश उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसा शिक्षण वातावरण विकसित करना आवश्यक है, जहाँ वे सुरक्षित, सम्मानजनक एवं प्रभावी ढंग से सीख सकें। इसी दृष्टिकोण से समावेशी शिक्षा में अनेक शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं।

1. व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले प्रत्येक बच्चे की क्षमताएँ, सीमाएँ तथा अधिगम की गति अलग-अलग होती है। इसलिए सभी बच्चों के लिए समान शिक्षण योजना प्रभावी नहीं हो सकती। प्रत्येक बच्चे के मूल्यांकन के आधार पर उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार की जानी चाहिए। इसमें अधिगम उद्देश्यों, शिक्षण रणनीतियों, आवश्यक संसाधनों, मूल्यांकन विधियों तथा अपेक्षित उपलब्धियों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

2. कक्षा में अनुकूलन (Classroom Adaptations)

समावेशी कक्षा में ऐसे बच्चों के लिए उपयुक्त भौतिक एवं शैक्षिक अनुकूलन आवश्यक हैं। बच्चे को पर्याप्त प्रकाश, उपयुक्त बैठने की व्यवस्था, बाधा-रहित मार्ग तथा शिक्षक के निकट स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार बड़े अक्षरों वाली पुस्तकें, ब्रेल सामग्री, स्पर्श आधारित शिक्षण सामग्री, श्रव्य संसाधन तथा डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए। कक्षा का वातावरण ऐसा हो, जिससे बच्चा सुरक्षित एवं आत्मविश्वास के साथ अधिगम कर सके।

3. उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए बहु-संवेदी (Multisensory) शिक्षण दृष्टिकोण अत्यंत प्रभावी माना जाता है। शिक्षण के दौरान स्पर्श, श्रवण, गतिविधि-आधारित अधिगम, वास्तविक वस्तुओं, मॉडल, भूमिका-अभिनय तथा अनुभवात्मक शिक्षण का उपयोग किया जाना चाहिए। शिक्षक को सरल भाषा, छोटे-छोटे चरणों में निर्देश तथा पर्याप्त अभ्यास के अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे बच्चा विषयवस्तु को आसानी से समझ सके।

4. सहायक प्रौद्योगिकी एवं शिक्षण संसाधनों का उपयोग

आधुनिक तकनीक ने दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया है। स्क्रीन रीडर, ब्रेल डिस्प्ले, डिजिटल मैग्नीफायर, ऑडियो पुस्तकें, स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर, ब्रेल नोट-टेकर तथा अन्य सहायक उपकरण बच्चों की अधिगम क्षमता को बढ़ाते हैं। शिक्षक को इन संसाधनों के उचित उपयोग का प्रशिक्षण होना चाहिए तथा विद्यालय में इनकी उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

5. बहु-विषयक सहयोग एवं परिवार की सहभागिता

समावेशी शिक्षा तभी सफल हो सकती है, जब शिक्षक, विशेष शिक्षक, चिकित्सकीय विशेषज्ञ, पुनर्वास विशेषज्ञ, अभिभावक तथा विद्यालय प्रशासन परस्पर सहयोग के साथ कार्य करें। नियमित बैठकें, प्रगति की समीक्षा तथा साझा निर्णय लेने की प्रक्रिया बच्चे के विकास को अधिक प्रभावी बनाती है। परिवार को भी शिक्षण प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाया जाना चाहिए, ताकि विद्यालय एवं घर दोनों स्थानों पर समान सहयोग प्राप्त हो सके।

6. मूल्यांकन एवं निरंतर प्रगति की निगरानी

समावेशी शिक्षा में केवल पारंपरिक परीक्षा प्रणाली पर्याप्त नहीं होती। बच्चे की प्रगति का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Assessment) किया जाना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त समय, वैकल्पिक प्रश्न-पत्र, लेखक (Scribe), मौखिक मूल्यांकन अथवा सहायक तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। समय-समय पर IEP की समीक्षा कर आवश्यक संशोधन भी किए जाने चाहिए।

निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों को सामान्य विद्यालय में प्रवेश देना नहीं, बल्कि उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, समान एवं सम्मानजनक शिक्षा सुनिश्चित करना है। इसके लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ, कक्षा अनुकूलन, सहायक प्रौद्योगिकी, बहु-विषयक सहयोग, परिवार की सहभागिता तथा सतत मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हैं। जब विद्यालय इन सभी शैक्षिक निहितार्थों को प्रभावी रूप से अपनाता है, तब ऐसे बच्चे अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा समाज के सक्रिय सदस्य बन सकते हैं। यही समावेशी शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य एवं सार्थक उद्देश्य है।

3.7 सारांश (Summary)

इस इकाई में दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा, उनकी विशेष आवश्यकताओं तथा उनके समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन किया गया। यह स्पष्ट हुआ कि ऐसे बच्चों में दृष्टिबाधिता के साथ एक या एक से अधिक अतिरिक्त दिव्यांगताएँ उपस्थित होती हैं, जिसके कारण उनके शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, संचारात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक विकास पर बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। इसलिए इन बच्चों की आवश्यकताओं को केवल एक दिव्यांगता के आधार पर नहीं समझा जा सकता, बल्कि समग्र एवं आवश्यकता-आधारित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक होता है।

इकाई में प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन के महत्व पर विशेष बल दिया गया। समय पर पहचान होने से बच्चे को आवश्यक चिकित्सकीय, शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाएँ शीघ्र उपलब्ध कराई जा सकती हैं, जिससे उसके विकास एवं अधिगम की संभावनाओं में वृद्धि होती है। साथ ही कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन के माध्यम से बच्चे की वास्तविक क्षमताओं, सीमाओं, अधिगम शैली तथा शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन किया जाता है, जो व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार करने का आधार बनता है।

इस इकाई में मूल्यांकन की प्रक्रिया में बहु-विषयक विशेषज्ञ दल (Multidisciplinary Team) की भूमिका का भी विस्तार से अध्ययन किया गया। नेत्र रोग विशेषज्ञ, ऑप्टोमेट्रिस्ट, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता तथा अभिभावक सभी मिलकर बच्चे का समग्र मूल्यांकन करते हैं। प्रत्येक विशेषज्ञ अपनी विशेषज्ञता के अनुसार बच्चे की आवश्यकताओं की पहचान करता है तथा संयुक्त रूप से उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रम की योजना तैयार करता है।

अंत में समावेशी शिक्षा के संदर्भ में ऐसे बच्चों के लिए व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP), कक्षा अनुकूलन, सहायक प्रौद्योगिकी, बहु-संवेदी शिक्षण, परिवार की सहभागिता तथा सतत मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया। समुचित मूल्यांकन एवं बहु-विषयक सहयोग के माध्यम से ही दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास, आत्मनिर्भरता तथा समाज में सम्मानजनक सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

3.8 शब्दावली (Glossary)

1.दृष्टिबाधिता (Visual Impairment) – देखने की क्षमता में कमी या पूर्ण अभाव की स्थिति।

2.अतिरिक्त दिव्यांगता (Additional Disabilities) – दृष्टिबाधिता के साथ एक या अधिक अन्य दिव्यांगताओं की उपस्थिति।

3.मूल्यांकन (Assessment) – बच्चे की क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों का व्यवस्थित अध्ययन।

4.बहु-विषयक दल (Multidisciplinary Team) – विभिन्न विशेषज्ञों का समूह जो संयुक्त रूप से कार्य करता है।

5.कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision) – दैनिक कार्यों में उपलब्ध दृष्टि का व्यावहारिक उपयोग।

6.व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) – प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गई शिक्षण योजना।

7.समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) – सभी बच्चों को समान विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था।

8.पुनर्वास (Rehabilitation) – दिव्यांग व्यक्ति की कार्यक्षमता एवं आत्मनिर्भरता बढ़ाने की प्रक्रिया।

9.सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) – अधिगम एवं दैनिक जीवन में सहायता देने वाले उपकरण एवं तकनीक।

10.प्रारम्भिक हस्तक्षेप (Early Intervention) – कम आयु में आवश्यक शैक्षिक एवं चिकित्सकीय सेवाएँ प्रदान करने की प्रक्रिया।

3.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

2.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के प्रारम्भिक पहचान एवं मूल्यांकन के महत्व की व्याख्या कीजिए।

3.कार्यात्मक एवं शैक्षिक मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

4.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन में बहु-विषयक विशेषज्ञ दल की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5.समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए आवश्यक शैक्षिक निहितार्थों की विवेचना कीजिए।

6.परिवार एवं अन्य सहयोगी विशेषज्ञ दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के मूल्यांकन एवं पुनर्वास में किस प्रकार योगदान देते हैं? स्पष्ट कीजिए।

3.10 सन्दर्भ ग्रंथ सूची (References)

1.Rehabilitation Council of India. (2022). Bachelor of Education (B.Ed.) Special Education (Visual Impairment): Curriculum Framework. New Delhi, India: Author.

2.Department of Empowerment of Persons with Disabilities. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. New Delhi, India: Government of India.

9.National Council of Educational Research and Training. (2006). Including Children and Youth with Disabilities in Education: A Guide for Practitioners. New Delhi, India: Author.

4.UNESCO. (2020). Global Education Monitoring Report 2020: Inclusion and Education—All Means All. Paris, France: UNESCO.

5.Corn, & Koenig. (Eds.). (2002). Foundations of Low Vision: Clinical and Functional Perspectives. New York, NY: AFB Press.

6.World Health Organization. (2019). World Report on Vision. Geneva, Switzerland: Author.

7.National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities. (2020). Training Manual on Visual Impairment and Inclusive Education. Dehradun, India: Author.

8.Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi, India: Government of India.

इकाई–4 : कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण : शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श तथा संचार कौशल का मूल्यांकन (Functional Methods and Tools: Physical, Vision, Hearing, Tactual and Communication Skills Assessment)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

4.2 उद्देश्य (Objectives)

4.3 कार्यात्मक मूल्यांकन: अर्थ, अवधारणा एवं महत्व (Functional Assessment: Meaning, Concept and Importance)

4.4 कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण (Methods and Tools of Functional Assessment)

4.4.1 शारीरिक कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Physical Skills)

4.4.2 दृष्टि कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Vision Skills)

4.4.3 श्रवण कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Hearing Skills)

4.4.4 स्पर्श कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Tactual Skills)

4.4.5 संचार कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Communication Skills)

4.5 कार्यात्मक मूल्यांकन में अभिलेखन, व्याख्या एवं प्रतिवेदन (Recording, Interpretation and Reporting of Functional Assessment)

4.6 कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications of Functional Assessment)

4.7 सारांश (Summary)

4.8 शब्दावली (Glossary)

4.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

4.10 सन्दर्भ ग्रंथ सूची (References)

4.11 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

4.1 प्रस्तावना-

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment) एक ऐसी वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी बालक की वास्तविक कार्यक्षमता (Functional Ability) का आकलन किया जाता है। विशेष रूप से दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के संदर्भ में केवल चिकित्सकीय अथवा नैदानिक परीक्षण (Clinical Assessment) उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूर्णतः स्पष्ट नहीं कर पाते। इसलिए यह जानना आवश्यक होता है कि बच्चा अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग विद्यालय, परिवार तथा समुदाय जैसे वास्तविक परिवेश में किस प्रकार करता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति कार्यात्मक मूल्यांकन द्वारा की जाती है।

कार्यात्मक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य केवल बालक की कमियों अथवा सीमाओं की पहचान करना नहीं है, बल्कि उसकी अवशिष्ट क्षमताओं (Residual Abilities), संभावनाओं, अधिगम शैली तथा सहयोग की आवश्यकता वाले क्षेत्रों का समग्र विश्लेषण करना भी है। यह मूल्यांकन बालक की वर्तमान कार्यक्षमता तथा भविष्य की शैक्षिक एवं पुनर्वास आवश्यकताओं के मध्य एक प्रभावी सेतु का कार्य करता है। यही कारण है कि आधुनिक विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा में कार्यात्मक मूल्यांकन को निर्णय-निर्माण (Decision Making) की आधारभूत प्रक्रिया माना जाता है।

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले प्रत्येक बालक की आवश्यकताएँ, क्षमताएँ तथा विकास की गति एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। कुछ बालक अपनी अवशिष्ट दृष्टि का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं, जबकि अन्य बालकों को स्पर्श, श्रवण, वैकल्पिक संचार माध्यमों अथवा सहायक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार अनेक बालकों में शारीरिक, संवेदी अथवा संचार संबंधी अतिरिक्त कठिनाइयाँ भी पाई जाती हैं, जो उनके अधिगम, सामाजिक सहभागिता तथा

आत्मनिर्भरता को प्रभावित करती हैं। अतः ऐसे प्रत्येक बालक का व्यक्तिगत एवं बहुआयामी कार्यात्मक मूल्यांकन आवश्यक है।

कार्यात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत शारीरिक कौशल, कार्यात्मक दृष्टि, श्रवण क्षमता, स्पर्श कौशल तथा संचार कौशल का विभिन्न मानकीकृत एवं अनौपचारिक विधियों एवं उपकरणों द्वारा आकलन किया जाता है। मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियों का चयन, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP) का निर्माण, सहायक उपकरणों का निर्धारण तथा आवश्यक पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाई जाती है। इस प्रकार कार्यात्मक मूल्यांकन केवल मूल्यांकन की प्रक्रिया न होकर प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेप (Educational Intervention) का आधार भी है।

इस इकाई में कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा, उसकी आवश्यकता एवं महत्व, शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श तथा संचार कौशल के मूल्यांकन की प्रमुख विधियों एवं उपकरणों तथा उनके शैक्षिक निहितार्थों का क्रमबद्ध एवं विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन विशेष शिक्षकों, पुनर्वास विशेषज्ञों तथा शोधार्थियों को ऐसे बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी शैक्षिक योजना एवं समावेशी अधिगम वातावरण विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

4.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी —

1.कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा, आवश्यकता, महत्व तथा विशेष शिक्षा में उसकी भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

2.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श तथा संचार कौशल के कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियों एवं उपकरणों को समझ सकेंगे।

3.कार्यात्मक मूल्यांकन के आधार पर बच्चे की क्षमताओं, सीमाओं एवं शैक्षिक आवश्यकताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

4.कार्यात्मक मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियों, सहायक उपकरणों तथा व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे।

5.समावेशी शिक्षा के संदर्भ में कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थों तथा उसके प्रभावी उपयोग का मूल्यांकन कर सकेंगे।

4.3 कार्यात्मक मूल्यांकन: अर्थ, अवधारणा एवं महत्व (Functional Assessment: Meaning, Concept and Importance)

कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment) विशेष शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रिया है। यह केवल बालक की दिव्यांगता की पहचान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह निर्धारित करता है कि बालक अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में किस प्रकार करता है। विशेष रूप से दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के संदर्भ में कार्यात्मक मूल्यांकन का विशेष महत्व है, क्योंकि ऐसे बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण केवल चिकित्सकीय परीक्षणों के आधार पर नहीं किया जा सकता। उनके वास्तविक अधिगम स्तर, दैनिक जीवन कौशल, संचार क्षमता तथा सामाजिक सहभागिता का समग्र अध्ययन आवश्यक होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति कार्यात्मक मूल्यांकन द्वारा की जाती है।

कार्यात्मक मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Functional Assessment)

'कार्यात्मक' (Functional) शब्द का अभिप्राय व्यक्ति की उन क्षमताओं से है, जिनका उपयोग वह अपने दैनिक जीवन, विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण में करता है। 'मूल्यांकन' (Assessment) का अर्थ किसी व्यक्ति की क्षमताओं, सीमाओं एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण अध्ययन करना है। इस प्रकार कार्यात्मक मूल्यांकन से तात्पर्य उस वैज्ञानिक प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से यह जाना जाता है कि बालक अपनी उपलब्ध शारीरिक, संवेदी, संज्ञानात्मक, संचारात्मक तथा सामाजिक क्षमताओं का वास्तविक परिस्थितियों में किस सीमा तक प्रभावी ढंग से उपयोग कर पा रहा है।

यह मूल्यांकन केवल यह नहीं बताता कि बालक क्या नहीं कर सकता, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि वह क्या कर सकता है, किन परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करता है तथा उसे किस प्रकार के सहयोग, अनुकूलन एवं सहायक उपकरणों की आवश्यकता है। इसलिए कार्यात्मक मूल्यांकन को क्षमता-आधारित (Ability-Based Assessment) दृष्टिकोण भी कहा जाता है।

कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा (Concept of Functional Assessment)

कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है तथा उसकी आवश्यकताएँ, क्षमताएँ एवं अधिगम की शैली एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। विशेष शिक्षा का उद्देश्य केवल दिव्यांगता का निदान करना नहीं, बल्कि बालक की कार्यात्मक क्षमता को समझकर उसके अनुरूप शिक्षण एवं पुनर्वास की योजना तैयार करना है।

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों में केवल दृष्टि की तीक्ष्णता (Visual Acuity) का परीक्षण पर्याप्त नहीं होता। यह भी जानना आवश्यक होता है कि बच्चा अपनी अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision) का उपयोग किस प्रकार करता है, क्या वह स्पर्श अथवा श्रवण के माध्यम से प्रभावी रूप से सीख सकता है, क्या वह स्वतंत्र रूप से चल-फिर सकता है तथा क्या वह अपनी आवश्यकताओं को दूसरों तक पहुँचा सकता है। अतः कार्यात्मक मूल्यांकन बालक के वास्तविक प्रदर्शन (Actual Performance) पर आधारित होता है, न कि केवल चिकित्सकीय निष्कर्षों पर।

कार्यात्मक मूल्यांकन का महत्व (Importance of Functional Assessment)

विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा में कार्यात्मक मूल्यांकन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह बालक की शैक्षिक आवश्यकताओं, अधिगम क्षमता तथा सहयोग की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की स्पष्ट पहचान करने में सहायता करता है। इसके आधार पर शिक्षक यह निर्धारित कर सकते हैं कि बच्चे के लिए कौन-सा शिक्षण माध्यम, कौन-सी शिक्षण रणनीति तथा कौन-से सहायक उपकरण अधिक उपयुक्त होंगे।

कार्यात्मक मूल्यांकन व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP) के निर्माण का आधार प्रदान करता है। इसके माध्यम से बालक के लिए यथार्थवादी शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं तथा उसकी प्रगति का नियमित मूल्यांकन किया जाता है। यह प्रक्रिया बहु-विषयक विशेषज्ञों, विशेष शिक्षकों एवं अभिभावकों के मध्य समन्वय स्थापित करने में भी सहायक होती है।

इसके अतिरिक्त कार्यात्मक मूल्यांकन समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके आधार पर कक्षा में आवश्यक अनुकूलन, सहायक प्रौद्योगिकी, ब्रेल अथवा बड़े अक्षरों की सामग्री, वैकल्पिक संचार प्रणाली तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं की योजना बनाई जाती है। परिणामस्वरूप बालक की अधिगम क्षमता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

अतः कार्यात्मक मूल्यांकन विशेष शिक्षा की आधारभूत प्रक्रिया है, जो बालक की वास्तविक क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का समग्र चित्र प्रस्तुत करती है। यह केवल मूल्यांकन का साधन नहीं, बल्कि प्रभावी शिक्षण, पुनर्वास तथा समावेशी शिक्षा की सफलता का वैज्ञानिक आधार है। इसलिए दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की शिक्षा में कार्यात्मक मूल्यांकन को अनिवार्य एवं अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया माना जाता है।

4.4 कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण (Methods and Tools of Functional Assessment)

कार्यात्मक मूल्यांकन एक वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बालक की वास्तविक कार्यक्षमता का अध्ययन किया जाता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह ज्ञात करना नहीं है कि बालक में किस प्रकार की दिव्यांगता है, बल्कि यह भी समझना है कि वह अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग दैनिक जीवन, विद्यालय तथा सामाजिक परिवेश में किस प्रकार करता है। दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के संदर्भ में कार्यात्मक मूल्यांकन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि प्रत्येक बालक की क्षमताएँ, सीमाएँ तथा अधिगम संबंधी आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। इसलिए एक ही प्रकार की मूल्यांकन प्रक्रिया सभी बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती।

कार्यात्मक मूल्यांकन के लिए विभिन्न विधियों (Methods) एवं उपकरणों (Tools) का उपयोग किया जाता है। इनका चयन बालक की आयु, दिव्यांगता की प्रकृति, विकासात्मक स्तर, संचार क्षमता तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया में औपचारिक (Formal) एवं अनौपचारिक (Informal) दोनों प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है, जिससे बालक की वास्तविक कार्यक्षमता का समग्र एवं विश्वसनीय आकलन किया जा सके।

कार्यात्मक मूल्यांकन की प्रमुख विधियों में प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation), साक्षात्कार (Interview), व्यवहार विश्लेषण (Behaviour Analysis), कार्य-आधारित मूल्यांकन (Task-based Assessment), प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Assessment), चेकलिस्ट (Checklist), रेटिंग स्केल (Rating Scale), मानकीकृत परीक्षण (Standardized Tests) तथा कार्यात्मक परीक्षण (Functional Tests) सम्मिलित हैं। इन विधियों के माध्यम से बालक के वास्तविक व्यवहार एवं कार्य निष्पादन का अध्ययन किया जाता है।

इसी प्रकार मूल्यांकन में विभिन्न उपकरणों का भी उपयोग किया जाता है, जैसे—कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन प्रपत्र, लो-विजन मूल्यांकन उपकरण, श्रवण परीक्षण उपकरण, स्पर्श संवेदनशीलता परीक्षण सामग्री, संचार कौशल मूल्यांकन स्केल, विकासात्मक चेकलिस्ट, दैनिक जीवन कौशल मूल्यांकन प्रपत्र तथा सहायक प्रौद्योगिकी आधारित मूल्यांकन उपकरण। इन साधनों के माध्यम से बालक की क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित विश्लेषण किया जाता है।

कार्यात्मक मूल्यांकन बहुआयामी होने के कारण इसे विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। इनमें शारीरिक कौशल, दृष्टि कौशल, श्रवण कौशल, स्पर्श कौशल तथा संचार कौशल का मूल्यांकन प्रमुख है। प्रत्येक क्षेत्र का पृथक मूल्यांकन आवश्यक है, क्योंकि किसी एक क्षेत्र में उपस्थित कठिनाई

अन्य क्षेत्रों के विकास को भी प्रभावित कर सकती है। इन सभी क्षेत्रों के संयुक्त विश्लेषण के आधार पर ही बालक की वास्तविक शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण किया जाता है तथा व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP), उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ, सहायक उपकरण एवं पुनर्वास सेवाएँ निर्धारित की जाती हैं।

अतः कार्यात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण विशेष शिक्षा की आधारभूत इकाई हैं। इनके माध्यम से प्राप्त जानकारी न केवल बालक की वर्तमान कार्यक्षमता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है, बल्कि उसके भविष्य के शैक्षिक विकास, आत्मनिर्भरता तथा समावेशी शिक्षा में सफल सहभागिता के लिए वैज्ञानिक आधार भी प्रदान करती है। इसी कारण कार्यात्मक मूल्यांकन की प्रत्येक विधि एवं उपकरण का चयन विशेषज्ञों द्वारा बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप सावधानीपूर्वक किया जाना आवश्यक है।

4.4.1 शारीरिक कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Physical Skills)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक मूल्यांकन में शारीरिक कौशल (Physical Skills) का मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शारीरिक कौशल से अभिप्राय उन क्षमताओं से है, जिनके माध्यम से बालक अपने शरीर की विभिन्न गतिविधियों का प्रभावी ढंग से संचालन करता है। इनमें शरीर का संतुलन, मांसपेशियों का नियंत्रण, समन्वय (Coordination), गति (Mobility), शारीरिक मुद्रा (Posture), हाथों का उपयोग तथा दैनिक जीवन की क्रियाओं को स्वतंत्र रूप से करने की क्षमता सम्मिलित होती है। यदि इन कौशलों का समुचित विकास नहीं होता, तो बालक के अधिगम, सामाजिक सहभागिता तथा आत्मनिर्भरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक कौशल का अर्थ

शारीरिक कौशल का तात्पर्य बालक की उन कार्यात्मक क्षमताओं से है, जिनके माध्यम से वह बैठने, खड़े होने, चलने, दौड़ने, वस्तुओं को पकड़ने, उठाने, संतुलन बनाए रखने तथा दैनिक जीवन की आवश्यक गतिविधियों को संपन्न करता है। दृष्टिबाधिता वाले बच्चों में दृश्य संकेतों की कमी के कारण शारीरिक विकास सामान्य बच्चों की अपेक्षा धीमा हो सकता है। यदि दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताएँ भी हों, तो यह कठिनाई और अधिक बढ़ जाती है। इसलिए इन कौशलों का व्यवस्थित मूल्यांकन आवश्यक होता है।

शारीरिक कौशल के मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

शारीरिक कौशल के मूल्यांकन के दौरान विशेषज्ञ बालक के स्थूल मोटर कौशल (Gross Motor Skills), सूक्ष्म मोटर कौशल (Fine Motor Skills), शरीर के संतुलन, मांसपेशियों की शक्ति,

हाथ-आँख अथवा हाथ-स्पर्श समन्वय, शरीर की मुद्रा, गतिशीलता तथा दैनिक जीवन कौशल का निरीक्षण करते हैं। साथ ही यह भी देखा जाता है कि बालक स्वतंत्र रूप से चल-फिर सकता है या नहीं, सीढ़ियाँ चढ़ने-उतरने, कुर्सी पर बैठने, वस्तुओं को पकड़ने तथा विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने में उसे किस प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं।

मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

शारीरिक कौशल के मूल्यांकन के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation), प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन (Performance Assessment), विकासात्मक चेकलिस्ट (Developmental Checklist), मोटर कौशल परीक्षण तथा कार्यात्मक गतिविधियों का विश्लेषण किया जाता है। आवश्यकता होने पर फिजियोथेरेपिस्ट एवं ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट द्वारा विशेष परीक्षण भी किए जाते हैं। मूल्यांकन के दौरान बालक के दैनिक व्यवहार, चलने-फिरने की शैली, संतुलन, समन्वय तथा विद्यालय में कार्य निष्पादन का भी अध्ययन किया जाता है।

शैक्षिक महत्व

शारीरिक कौशल के मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि बालक को किस प्रकार की शारीरिक सहायता, सहायक उपकरण, कक्षा में विशेष बैठने की व्यवस्था, गतिशीलता प्रशिक्षण अथवा फिजियोथेरेपी एवं ऑक्यूपेशनल थेरेपी की आवश्यकता है। इसी आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार की जाती है तथा शिक्षण-अधिगम गतिविधियों में आवश्यक अनुकूलन किए जाते हैं। इससे बालक की आत्मनिर्भरता, विद्यालयी सहभागिता तथा समग्र विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

अतः, शारीरिक कौशल का मूल्यांकन कार्यात्मक मूल्यांकन का एक अनिवार्य घटक है। यह बालक की वास्तविक शारीरिक क्षमताओं एवं सीमाओं का वैज्ञानिक आकलन प्रस्तुत करता है तथा उसके अनुरूप शैक्षिक, चिकित्सकीय एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए शारीरिक कौशल का नियमित एवं व्यवस्थित मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

4.4.2 दृष्टि कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Vision Skills)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक मूल्यांकन में दृष्टि कौशल (Vision Skills) का मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। केवल यह जान लेना कि बच्चे की दृष्टि कितनी है, पर्याप्त नहीं होता, बल्कि यह भी आवश्यक है कि वह अपनी उपलब्ध दृष्टि (Residual Vision) का उपयोग दैनिक जीवन, अधिगम एवं सामाजिक गतिविधियों में किस प्रकार करता है। इसी कारण आधुनिक विशेष शिक्षा में चिकित्सकीय दृष्टि परीक्षण (Clinical

Vision Assessment) के साथ-साथ कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन (Functional Vision Assessment) को विशेष महत्व दिया जाता है। यह मूल्यांकन बालक की वास्तविक परिस्थितियों में दृष्टि के उपयोग का आकलन करता है तथा उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं का आधार प्रदान करता है।

दृष्टि कौशल का अर्थ

दृष्टि कौशल से अभिप्राय उन कार्यात्मक क्षमताओं से है, जिनके माध्यम से बालक उपलब्ध दृष्टि का उपयोग वस्तुओं की पहचान करने, पढ़ने-लिखने, चित्रों एवं संकेतों को समझने, व्यक्तियों को पहचानने, मार्ग खोजने तथा विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने के लिए करता है। प्रत्येक दृष्टिबाधित बालक की कार्यात्मक दृष्टि समान नहीं होती। कुछ बालक सीमित दृष्टि के माध्यम से प्रभावी रूप से सीख सकते हैं, जबकि कुछ को ब्रेल, श्रव्य सामग्री अथवा अन्य वैकल्पिक माध्यमों की आवश्यकता होती है। इसलिए दृष्टि कौशल का व्यक्तिगत मूल्यांकन आवश्यक होता है।

दृष्टि कौशल के मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

दृष्टि कौशल के मूल्यांकन में बालक की दृष्टि तीक्ष्णता (Visual Acuity), दृष्टि क्षेत्र (Visual Field), अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision), प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता (Light Sensitivity), रंग पहचान (Colour Perception), वस्तुओं का अनुसरण (Visual Tracking), दृश्य भेदभाव (Visual Discrimination), निकट एवं दूर की वस्तुओं को देखने की क्षमता तथा कार्यात्मक दृष्टि के उपयोग का अध्ययन किया जाता है। साथ ही यह भी देखा जाता है कि बालक कक्षा में ब्लैकबोर्ड, पुस्तक, चित्र, चार्ट तथा अन्य शिक्षण सामग्री का उपयोग कितनी प्रभावशीलता से कर पा रहा है।

मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

दृष्टि कौशल के मूल्यांकन के लिए नेत्र रोग विशेषज्ञ, ऑप्टोमेट्रिस्ट तथा विशेष शिक्षक संयुक्त रूप से कार्य करते हैं। इस प्रक्रिया में कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन (Functional Vision Assessment), लो-विजन मूल्यांकन (Low Vision Assessment), प्रत्यक्ष अवलोकन, मानकीकृत परीक्षण, दृश्य कार्य निष्पादन गतिविधियाँ तथा अवलोकन प्रपत्र (Observation Schedule) का उपयोग किया जाता है। आवश्यकता होने पर विभिन्न लो-विजन उपकरणों के माध्यम से भी यह देखा जाता है कि बच्चा किस प्रकार की दृश्य सहायता से अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है।

शैक्षिक महत्व

दृष्टि कौशल के मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि बालक के लिए प्रिंट, बड़े अक्षरों (Large Print), ब्रेल, श्रव्य सामग्री अथवा सहायक प्रौद्योगिकी में से कौन-

सा माध्यम सर्वाधिक उपयुक्त होगा। इसके अतिरिक्त कक्षा में बैठने की व्यवस्था, प्रकाश की मात्रा, शिक्षण सामग्री का आकार, रंगों का चयन तथा आवश्यक सहायक उपकरणों का निर्धारण भी इसी मूल्यांकन के आधार पर किया जाता है। यह जानकारी व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण तथा प्रभावी शिक्षण-अधिगम रणनीतियों के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अतः, दृष्टि कौशल का मूल्यांकन कार्यात्मक मूल्यांकन का एक अनिवार्य एवं वैज्ञानिक घटक है। यह बालक की वास्तविक दृश्य क्षमता तथा उसके प्रभावी उपयोग का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। इसके आधार पर आवश्यकता-आधारित शिक्षण, उपयुक्त सहायक उपकरणों का चयन तथा समावेशी शिक्षा की प्रभावी योजना तैयार की जा सकती है, जिससे बालक की अधिगम क्षमता, आत्मनिर्भरता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक वृद्धि होती है।

4.4.3 श्रवण कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Hearing Skills)

श्रवण कौशल (Hearing Skills) का मूल्यांकन कार्यात्मक मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण घटक है, विशेषकर उन बच्चों के लिए जिनमें दृष्टिबाधिता के साथ अतिरिक्त दिव्यांगताएँ भी विद्यमान होती हैं। दृष्टिबाधित बालकों के लिए श्रवण इंद्रिय अधिगम, संचार, दिशा-ज्ञान (Orientation), गतिशीलता (Mobility) तथा सामाजिक सहभागिता का प्रमुख माध्यम होती है। यदि श्रवण क्षमता भी प्रभावित हो, तो बालक के अधिगम एवं संचार में गंभीर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि बालक ध्वनियों को किस सीमा तक सुन, पहचान एवं समझ सकता है तथा दैनिक जीवन में उनका उपयोग किस प्रकार करता है।

श्रवण कौशल का अर्थ

श्रवण कौशल से अभिप्राय बालक की ध्वनियों को सुनने, उनमें अंतर करने, उनके स्रोत की पहचान करने, मौखिक निर्देशों को समझने तथा भाषा एवं संचार के लिए श्रवण क्षमता का प्रभावी उपयोग करने की योग्यता से है। कार्यात्मक मूल्यांकन में केवल श्रवण दोष की पहचान नहीं की जाती, बल्कि यह भी देखा जाता है कि बालक उपलब्ध श्रवण क्षमता का व्यवहारिक परिस्थितियों में कितना प्रभावी उपयोग कर रहा है।

मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

श्रवण कौशल के मूल्यांकन के अंतर्गत ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया, विभिन्न ध्वनियों में भेद करने की क्षमता, ध्वनि के स्रोत की पहचान, मौखिक निर्देशों का पालन, भाषा समझने की क्षमता तथा श्रवण के माध्यम से सीखने की योग्यता का आकलन किया जाता है। यदि आवश्यकता हो तो श्रवण यंत्र (Hearing Aid) अथवा अन्य सहायक उपकरणों की उपयोगिता का भी परीक्षण किया जाता है।

शैक्षिक महत्व

श्रवण कौशल के मूल्यांकन से यह निर्धारित किया जाता है कि बालक को किस प्रकार की शिक्षण रणनीतियों, संचार माध्यमों, सहायक उपकरणों तथा कक्षा अनुकूलन की आवश्यकता है। इसके आधार पर शिक्षक मौखिक निर्देशों की शैली, शिक्षण सामग्री तथा अधिगम गतिविधियों में आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं। इस प्रकार श्रवण कौशल का समुचित मूल्यांकन बालक की प्रभावी शिक्षा, संचार क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा समावेशी शिक्षा में सफल सहभागिता सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

4.4.4 स्पर्श कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Tactual Skills)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक मूल्यांकन में स्पर्श कौशल (Tactual Skills) का मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दृष्टिबाधित बालकों के लिए स्पर्श ज्ञान (Tactual Perception) अधिगम, वस्तुओं की पहचान, ब्रेल पठन, पर्यावरण की समझ तथा दैनिक जीवन की गतिविधियों में स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रमुख माध्यम होता है। विशेष रूप से पूर्ण दृष्टिबाधिता वाले बच्चों के लिए स्पर्श इंद्रिय ज्ञान प्राप्त करने का एक प्रभावी साधन बन जाती है। इसलिए बालक की स्पर्श संबंधी क्षमताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।

स्पर्श कौशल का अर्थ

स्पर्श कौशल से अभिप्राय बालक की उस क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह स्पर्श के द्वारा वस्तुओं, आकृतियों, बनावटों, आकारों एवं प्रतीकों को पहचान एवं समझ सकता है। यह कौशल केवल त्वचा की संवेदनशीलता तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें स्पर्श के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण, तुलना एवं अर्थ निर्माण करने की क्षमता भी सम्मिलित होती है।

मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

स्पर्श कौशल के मूल्यांकन में बालक की स्पर्श संवेदनशीलता, विभिन्न बनावटों में अंतर करने की क्षमता, वस्तुओं को छूकर पहचानने की योग्यता, आकार एवं आकृति की पहचान, हाथों के समन्वय तथा ब्रेल चिह्नों को पहचानने की क्षमता का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा जाता है कि बालक स्पर्श आधारित शिक्षण सामग्री, मॉडल, मानचित्र तथा अन्य त्रि-आयामी सामग्री का उपयोग कितनी प्रभावी ढंग से कर सकता है।

मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

स्पर्श कौशल के मूल्यांकन के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन, कार्य-आधारित गतिविधियाँ, स्पर्श परीक्षण सामग्री, ब्रेल तत्परता परीक्षण (Braille Readiness Assessment), वस्तु पहचान गतिविधियाँ तथा विकासात्मक चेकलिस्ट का उपयोग किया जाता है। विशेष शिक्षक बालक को विभिन्न आकार, बनावट एवं प्रतीकों वाली सामग्री देकर उसकी पहचान एवं समझने की क्षमता का

आकलन करते हैं। आवश्यकता के अनुसार ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट भी हाथों की कार्यक्षमता एवं सूक्ष्म मोटर कौशल का मूल्यांकन करते हैं।

शैक्षिक महत्व

स्पर्श कौशल के मूल्यांकन के आधार पर शिक्षक यह निर्णय लेते हैं कि बालक के लिए ब्रेल शिक्षा, स्पर्श आधारित शिक्षण सामग्री तथा अन्य वैकल्पिक अधिगम साधन किस प्रकार उपयोगी होंगे। यह मूल्यांकन ब्रेल सीखने की तैयारी, सहायक उपकरणों के चयन तथा कक्षा में उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों के निर्धारण में सहायता करता है। साथ ही यह बालक की स्वतंत्रता, आत्मविश्वास एवं दैनिक जीवन कौशल के विकास को भी बढ़ावा देता है।

अतः, स्पर्श कौशल का मूल्यांकन दृष्टिबाधित एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य आधार है। इसके माध्यम से बालक की स्पर्श संबंधी क्षमताओं की पहचान कर उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं, जिससे वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम विकास कर सके।

4.4.5 संचार कौशल का मूल्यांकन (Assessment of Communication Skills)

दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक मूल्यांकन में संचार कौशल (Communication Skills) का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक घटक है। संचार व्यक्ति के सामाजिक, शैक्षिक एवं भावनात्मक विकास का आधार होता है। किसी भी बालक के लिए अपनी आवश्यकताओं, विचारों, भावनाओं एवं अनुभवों को व्यक्त करने तथा दूसरों के संदेशों को समझने की क्षमता अत्यंत आवश्यक होती है। दृष्टिबाधिता के साथ अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति में संचार संबंधी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो बालक के अधिगम, सामाजिक सहभागिता एवं आत्मनिर्भरता को प्रभावित करती हैं। इसलिए संचार कौशल का व्यवस्थित एवं कार्यात्मक मूल्यांकन आवश्यक होता है।

संचार कौशल का अर्थ

संचार कौशल से अभिप्राय बालक की उस क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह मौखिक भाषा, संकेतों, हाव-भाव, स्पर्श, प्रतीकों अथवा वैकल्पिक एवं सहायक संचार माध्यमों द्वारा अपनी बात व्यक्त करता है तथा दूसरों के संदेशों को समझता है। संचार कौशल में केवल बोलने की क्षमता ही शामिल नहीं होती, बल्कि सुनना, समझना, प्रतिक्रिया देना, सामाजिक संवाद स्थापित करना तथा आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त संचार माध्यम का उपयोग करना भी सम्मिलित होता है।

संचार कौशल के मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

संचार कौशल के मूल्यांकन में बालक की भाषा समझने की क्षमता (Receptive Language), भाषा अभिव्यक्ति (Expressive Language), शब्द भंडार, वाक्य निर्माण, निर्देशों का पालन, प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता, सामाजिक संचार तथा वैकल्पिक संचार प्रणालियों के उपयोग का अध्ययन किया जाता है। दृष्टिबाधित बच्चों के संदर्भ में यह भी देखा जाता है कि बालक श्रवण, स्पर्श अथवा अन्य माध्यमों से प्राप्त जानकारी को किस प्रकार समझता और व्यक्त करता है।

मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

संचार कौशल के मूल्यांकन के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन, अभिभावक एवं शिक्षक साक्षात्कार, भाषा विकास मापनी, संचार चेकलिस्ट, व्यवहार विश्लेषण तथा मानकीकृत भाषा परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। यदि बालक मौखिक संचार में कठिनाई अनुभव करता है, तो वैकल्पिक एवं सहायक संचार (Augmentative and Alternative Communication–AAC) की आवश्यकता का भी मूल्यांकन किया जाता है।

शैक्षिक महत्व

संचार कौशल के मूल्यांकन से शिक्षक एवं विशेषज्ञ यह निर्धारित कर सकते हैं कि बालक के लिए कौन-सा संचार माध्यम अधिक प्रभावी होगा। इसके आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक अनुकूलन, संचार रणनीतियाँ तथा सहायक उपकरणों का चयन किया जाता है। प्रभावी संचार कौशल बालक की कक्षा में सहभागिता, सामाजिक संबंधों के विकास तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अतः, संचार कौशल का मूल्यांकन कार्यात्मक मूल्यांकन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो बालक की संचार संबंधी क्षमताओं एवं आवश्यकताओं को स्पष्ट करता है। इसके आधार पर उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाएँ प्रदान कर बालक के समग्र विकास एवं समावेशी शिक्षा में प्रभावी सहभागिता सुनिश्चित की जा सकती है।

4.5 कार्यात्मक मूल्यांकन में अभिलेखन, व्याख्या एवं प्रतिवेदन (Recording, Interpretation and Reporting of Functional Assessment)

कार्यात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया केवल जानकारी एकत्रित करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि प्राप्त सूचनाओं का व्यवस्थित अभिलेखन (Recording), वैज्ञानिक व्याख्या (Interpretation) तथा स्पष्ट प्रतिवेदन (Reporting) तैयार करना भी इसका महत्वपूर्ण भाग है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन से प्राप्त सूचनाएँ तभी उपयोगी मानी जाती हैं, जब उन्हें उचित रूप से दर्ज किया जाए,

उनका विश्लेषण किया जाए तथा संबंधित व्यक्तियों तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जाए। दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के संदर्भ में अभिलेखन एवं प्रतिवेदन की प्रक्रिया और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं, पुनर्वास सेवाओं एवं व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) का निर्धारण किया जाता है।

कार्यात्मक मूल्यांकन का अभिलेखन (Recording of Functional Assessment)

अभिलेखन से आशय मूल्यांकन के दौरान प्राप्त सूचनाओं को व्यवस्थित एवं प्रमाणिक रूप से लिखित रूप में संकलित करने से है। इसमें बालक की व्यक्तिगत जानकारी, दिव्यांगता का विवरण, मूल्यांकन की तिथि, प्रयुक्त विधियाँ एवं उपकरण, अवलोकन से प्राप्त तथ्य, बालक की क्षमताएँ, कठिनाइयाँ तथा आवश्यक सहयोग का विवरण शामिल किया जाता है।

कार्यात्मक मूल्यांकन का अभिलेखन स्पष्ट, उद्देश्यपूर्ण तथा तथ्यात्मक होना चाहिए। इसमें केवल बालक की कमियों का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उसकी उपलब्ध क्षमताओं एवं संभावनाओं को भी प्रमुखता दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, दृष्टि कौशल के मूल्यांकन में केवल दृष्टि की सीमा का उल्लेख न करके यह भी दर्ज किया जाना चाहिए कि बालक किस प्रकाश व्यवस्था, दूरी या आकार की सामग्री में बेहतर प्रदर्शन करता है।

मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या (Interpretation of Assessment Results)

मूल्यांकन के पश्चात प्राप्त सूचनाओं की उचित व्याख्या करना आवश्यक होता है। व्याख्या का उद्देश्य केवल परिणामों को बताना नहीं, बल्कि यह समझना होता है कि इन परिणामों का बालक की शिक्षा एवं दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। विशेषज्ञ मूल्यांकन परिणामों का विश्लेषण करके यह निर्धारित करते हैं कि बालक की प्रमुख आवश्यकताएँ क्या हैं और उसके लिए किस प्रकार के हस्तक्षेप (Intervention) आवश्यक होंगे।

उदाहरण के लिए, यदि कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि बालक बड़े अक्षरों वाली सामग्री से बेहतर सीख सकता है, तो शिक्षक उसके लिए लार्ज प्रिंट सामग्री एवं उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था की व्यवस्था कर सकते हैं। इसी प्रकार यदि संचार मूल्यांकन में कठिनाई पाई जाती है, तो वैकल्पिक संचार माध्यमों की आवश्यकता निर्धारित की जा सकती है।

कार्यात्मक मूल्यांकन प्रतिवेदन (Functional Assessment Report)

कार्यात्मक मूल्यांकन प्रतिवेदन एक औपचारिक दस्तावेज होता है, जिसमें मूल्यांकन की पूरी प्रक्रिया एवं निष्कर्षों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। एक प्रभावी प्रतिवेदन में सामान्यतः निम्नलिखित भाग सम्मिलित होते हैं—

- बालक की सामान्य जानकारी एवं पृष्ठभूमि।
- मूल्यांकन का उद्देश्य।
- प्रयुक्त विधियाँ एवं उपकरण।
- विभिन्न कौशल क्षेत्रों में प्राप्त निष्कर्ष।
- बालक की शक्तियाँ एवं आवश्यकताएँ।
- शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी सुझाव।
- आवश्यक अनुकूलन एवं सहायक सेवाएँ।

प्रतिवेदन की भाषा स्पष्ट, वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक होनी चाहिए, ताकि शिक्षक, अभिभावक तथा अन्य विशेषज्ञ इसे आसानी से समझ सकें और इसके आधार पर उचित निर्णय ले सकें।

शैक्षिक महत्व

कार्यात्मक मूल्यांकन का उचित अभिलेखन एवं प्रतिवेदन व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे शिक्षक को बालक के लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिलती है तथा समय-समय पर उसकी प्रगति का मूल्यांकन किया जा सकता है। साथ ही यह बहु-विषयक विशेषज्ञ दल के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करने में सहायक होता है।

अतः, कार्यात्मक मूल्यांकन में अभिलेखन, व्याख्या एवं प्रतिवेदन केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि शैक्षिक निर्णय लेने की एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सुव्यवस्थित अभिलेखन एवं सटीक व्याख्या के माध्यम से ही बालक की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान कर उसे प्रभावी, आवश्यकता-आधारित एवं समावेशी शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

4.6 कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications of Functional Assessment)

कार्यात्मक मूल्यांकन विशेष शिक्षा में एक महत्वपूर्ण आधारभूत प्रक्रिया है, जो बालक की वास्तविक क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा अधिगम संबंधी विशेषताओं को समझने में सहायता प्रदान करती है। दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए कार्यात्मक मूल्यांकन का विशेष महत्व है, क्योंकि ऐसे बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएँ केवल चिकित्सकीय स्थिति या दिव्यांगता की श्रेणी से निर्धारित नहीं की जा सकतीं। बालक अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग

किस प्रकार करता है, किन क्षेत्रों में उसे सहयोग की आवश्यकता है तथा उसके लिए कौन-सी शिक्षण पद्धति प्रभावी होगी, इसका निर्धारण कार्यात्मक मूल्यांकन के आधार पर किया जाता है।

व्यक्तिगत शैक्षिक योजना का निर्माण (Development of Individualized Educational Programme–IEP)

कार्यात्मक मूल्यांकन का प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण से संबंधित है। मूल्यांकन द्वारा बालक की वर्तमान कार्यक्षमता, अधिगम स्तर, रुचियों, क्षमताओं एवं कठिनाइयों की पहचान की जाती है। इन जानकारियों के आधार पर बालक के लिए यथार्थवादी एवं आवश्यकता-आधारित शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। IEP में बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधियाँ, सहायक सेवाएँ तथा मूल्यांकन की उपयुक्त प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं रणनीतियों का चयन

कार्यात्मक मूल्यांकन शिक्षक को यह समझने में सहायता करता है कि बालक किस प्रकार के अधिगम अनुभवों से अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। दृष्टिबाधिता वाले कुछ बच्चे श्रवण माध्यम से बेहतर सीखते हैं, जबकि कुछ बच्चे स्पर्श आधारित सामग्री अथवा अपनी अवशिष्ट दृष्टि के उपयोग से प्रभावी अधिगम कर सकते हैं। मूल्यांकन के आधार पर शिक्षक बहु-संवेदी शिक्षण (Multisensory Teaching), अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि आधारित शिक्षण तथा व्यक्तिगत शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग कर सकता है।

अधिगम माध्यम एवं शिक्षण सामग्री का निर्धारण

कार्यात्मक मूल्यांकन बालक के लिए उपयुक्त अधिगम माध्यम के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि बालक के लिए ब्रेल, प्रिंट, बड़े अक्षरों वाली सामग्री (Large Print), श्रव्य सामग्री या सहायक तकनीकी साधनों में से कौन-सा माध्यम अधिक प्रभावी होगा। साथ ही शिक्षण सामग्री के आकार, रंग, प्रकाश व्यवस्था, प्रस्तुतीकरण शैली तथा स्पर्श आधारित सामग्री की आवश्यकता का भी निर्धारण किया जाता है।

कक्षा वातावरण में अनुकूलन (Classroom Adaptation)

कार्यात्मक मूल्यांकन के निष्कर्षों के आधार पर कक्षा वातावरण में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं। दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए उपयुक्त बैठने की व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश, स्पष्ट निर्देश, बाधा-रहित वातावरण तथा शिक्षण सामग्री में अनुकूलन आवश्यक हो सकता है। ऐसे परिवर्तन बच्चे को कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने और आत्मविश्वास के साथ सीखने में सहायता करते हैं।

सहायक उपकरण एवं सहायक प्रौद्योगिकी का उपयोग

कार्यात्मक मूल्यांकन से यह जानकारी प्राप्त होती है कि बालक को किस प्रकार के सहायक उपकरणों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, लो-विजन उपकरण, मैग्नीफायर, स्क्रीन रीडर, ब्रेल उपकरण, ऑडियो सामग्री तथा वैकल्पिक संचार साधन आदि। उचित सहायक उपकरणों का चयन बालक की स्वतंत्रता, सूचना तक पहुँच तथा शैक्षिक सहभागिता को बढ़ाने में सहायक होता है।

समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाना

समावेशी शिक्षा में प्रत्येक बच्चे को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार अवसर प्रदान करना आवश्यक है। कार्यात्मक मूल्यांकन शिक्षक एवं विद्यालय को यह समझने में सहायता करता है कि दिव्यांग बालक को समान अवसर प्रदान करने के लिए किस प्रकार के सहयोग एवं अनुकूलन आवश्यक हैं। इससे विद्यालय में ऐसा वातावरण विकसित किया जा सकता है जहाँ बालक अपनी क्षमताओं के अनुसार सीख सके और सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सके।

परिवार एवं विशेषज्ञों के साथ समन्वय

कार्यात्मक मूल्यांकन के परिणाम परिवार, विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक तथा अन्य विशेषज्ञों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करने में सहायक होते हैं। मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी के आधार पर सभी संबंधित व्यक्ति बालक के विकास एवं शिक्षा के लिए समान दिशा में कार्य कर सकते हैं। परिवार को भी बालक की आवश्यकताओं, प्रशिक्षण एवं सहयोग के तरीकों की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है।

निरंतर मूल्यांकन एवं प्रगति की समीक्षा

कार्यात्मक मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है। बालक की क्षमताओं एवं आवश्यकताओं में समय के साथ परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए नियमित रूप से उसकी प्रगति का मूल्यांकन आवश्यक होता है। पुनर्मूल्यांकन के आधार पर शिक्षण रणनीतियों, लक्ष्यों तथा सहायता सेवाओं में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थ बालक-केंद्रित शिक्षा, प्रभावी शिक्षण योजना, उपयुक्त संसाधनों के चयन तथा समावेशी शैक्षिक वातावरण के निर्माण से जुड़े हुए हैं। यह प्रक्रिया शिक्षक को बालक की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी क्षमताओं के अधिकतम विकास के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान करने में सहायता करती है।

4.7 सारांश (Summary)

कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment) विशेष शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की वास्तविक कार्यक्षमता, क्षमताओं तथा आवश्यकताओं का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। यह मूल्यांकन केवल दिव्यांगता की पहचान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बालक की उपलब्ध क्षमताओं, अधिगम शैली, दैनिक जीवन कौशल, संचार क्षमता तथा सामाजिक सहभागिता को समझने का अवसर प्रदान करता है।

इस इकाई में कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा, अर्थ एवं महत्व का अध्ययन किया गया। कार्यात्मक मूल्यांकन बालक के वास्तविक जीवन में प्रदर्शन पर आधारित होता है, जिसमें यह देखा जाता है कि वह अपनी उपलब्ध क्षमताओं का उपयोग विद्यालय, परिवार एवं सामाजिक वातावरण में किस प्रकार करता है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से उन बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, जिनमें दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताएँ भी उपस्थित होती हैं, क्योंकि उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण केवल चिकित्सकीय परीक्षणों के आधार पर नहीं किया जा सकता।

कार्यात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत विभिन्न विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्यक्ष अवलोकन, साक्षात्कार, चेकलिस्ट, मानकीकृत परीक्षण, प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन तथा कार्यात्मक परीक्षणों के माध्यम से बालक की क्षमताओं एवं कठिनाइयों का विश्लेषण किया जाता है। इन विधियों से प्राप्त जानकारी बालक की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने तथा उपयुक्त शैक्षिक सेवाओं की योजना बनाने में सहायता करती है।

इस इकाई में शारीरिक कौशल, दृष्टि कौशल, श्रवण कौशल, स्पर्श कौशल एवं संचार कौशल के मूल्यांकन का विस्तृत अध्ययन किया गया। शारीरिक कौशल का मूल्यांकन बालक की गतिशीलता, संतुलन, समन्वय एवं दैनिक गतिविधियों की स्वतंत्रता को समझने में सहायक होता है। दृष्टि कौशल के मूल्यांकन द्वारा अवशिष्ट दृष्टि के उपयोग, उपयुक्त अधिगम माध्यम तथा आवश्यक दृश्य सहायता का निर्धारण किया जाता है। श्रवण कौशल का मूल्यांकन बालक की ध्वनि पहचान, निर्देशों को समझने तथा श्रवण माध्यम से सीखने की क्षमता को स्पष्ट करता है। स्पर्श कौशल का मूल्यांकन विशेष रूप से ब्रेल अधिगम, वस्तु पहचान एवं स्पर्श आधारित अधिगम के लिए आवश्यक होता है। संचार कौशल का मूल्यांकन बालक की भाषा समझने, अभिव्यक्ति करने तथा वैकल्पिक संचार माध्यमों के उपयोग की आवश्यकता को निर्धारित करता है।

कार्यात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया में केवल मूल्यांकन करना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि प्राप्त सूचनाओं का उचित अभिलेखन, व्याख्या एवं प्रतिवेदन तैयार करना भी आवश्यक होता है। व्यवस्थित अभिलेखन के माध्यम से बालक की प्रगति, आवश्यकताओं एवं हस्तक्षेपों का स्पष्ट विवरण प्राप्त

होता है। मूल्यांकन परिणामों की सही व्याख्या शिक्षक एवं विशेषज्ञों को उपयुक्त शैक्षिक निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है।

कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थ अत्यंत व्यापक हैं। यह व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण, उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों के चयन, शिक्षण सामग्री के अनुकूलन, सहायक उपकरणों के निर्धारण तथा समावेशी कक्षा वातावरण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके आधार पर शिक्षक बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी शिक्षण व्यवस्था विकसित कर सकते हैं।

कार्यात्मक मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें समय-समय पर बालक की प्रगति एवं बदलती आवश्यकताओं का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है। यह प्रक्रिया विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, अभिभावक एवं अन्य विशेषज्ञों के बीच सहयोग को मजबूत करती है तथा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार कार्यात्मक मूल्यांकन दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों की शिक्षा, पुनर्वास एवं आत्मनिर्भरता के लिए एक आवश्यक आधारभूत प्रक्रिया है।

4.8 शब्दावली

1.कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment) – बालक की वास्तविक कार्यक्षमता का व्यवस्थित अध्ययन।

2.अवशिष्ट दृष्टि (Residual Vision) – बची हुई दृष्टि का उपयोग करने की क्षमता।

3.व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) – बालक की आवश्यकताओं पर आधारित शैक्षिक योजना।

4.कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision) – दैनिक कार्यों में दृष्टि के प्रभावी उपयोग की क्षमता।

5.सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) – सहायता प्रदान करने वाले तकनीकी साधन।

6.स्पर्श कौशल (Tactual Skills) – स्पर्श द्वारा वस्तुओं एवं सूचनाओं को समझने की क्षमता।

7.संचार कौशल (Communication Skills) – विचारों एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान की क्षमता।

8.मूल्यांकन उपकरण (Assessment Tools) – क्षमता मापने के लिए प्रयुक्त साधन।

9.बहु-विषयक दल (Multidisciplinary Team) – विभिन्न विशेषज्ञों का संयुक्त समूह।

10.समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) – सभी बच्चों को साथ शिक्षा देने की व्यवस्था।

4.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1.कार्यात्मक मूल्यांकन की अवधारणा एवं विशेष शिक्षा में इसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।

2.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के लिए कार्यात्मक मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?

3.शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श एवं संचार कौशल के मूल्यांकन की प्रमुख विधियों का वर्णन कीजिए।

4.कार्यात्मक मूल्यांकन के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) के निर्माण की प्रक्रिया को समझाइए।

5.कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थों एवं समावेशी शिक्षा में इसकी भूमिका की व्याख्या कीजिए।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1.कार्यात्मक मूल्यांकन का अर्थ, अवधारणा एवं महत्व स्पष्ट करते हुए विशेष शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक मूल्यांकन की विभिन्न विधियों एवं उपकरणों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

3.शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, स्पर्श एवं संचार कौशल के मूल्यांकन की प्रक्रिया तथा उनके शैक्षिक महत्व की व्याख्या कीजिए।

4.कार्यात्मक मूल्यांकन के दौरान प्राप्त सूचनाओं के अभिलेखन, व्याख्या एवं प्रतिवेदन तैयार करने की प्रक्रिया को समझाइए।

5.कार्यात्मक मूल्यांकन किस प्रकार व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) एवं समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने में सहायक होता है? चर्चा कीजिए।

6.दृष्टिबाधिता एवं अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास में कार्यात्मक मूल्यांकन के शैक्षिक निहितार्थों का विश्लेषण कीजिए।

4.11 सन्दर्भ ग्रंथ सूची (References)

1.Corn, A. L., & Koenig, A. J. (2002). Foundations of Low Vision: Clinical and Functional Perspectives. New York: American Foundation for the Blind.

2.Koenig, A. J., & Holbrook, M. C. (Eds.). (2000). Foundations of Education: Instructional Strategies for Teaching Children and Youths with Visual Impairments. New York: AFB Press.

3.World Health Organization. (2019). World Report on Vision. Geneva: World Health Organization.

4.Rehabilitation Council of India. (2015). Status of Disability in India: Rehabilitation and Special Education Perspective. New Delhi: Rehabilitation Council of India.

5.Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Government of India

इकाई–5 : दृष्टि हानि के निहितार्थ एवं दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन के प्रभाव (Implications of Vision Loss in Adapting Available Tools of Assessment for Persons with Visual Impairment)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

5.2 उद्देश्य (Objectives)

5.3 दृष्टि हानि: अवधारणा, प्रकार एवं प्रभाव (Vision Loss: Concept, Types and Implications)

5.4 दृष्टि हानि के कार्यात्मक निहितार्थ (Functional Implications of Vision Loss)

5.4.1 संज्ञानात्मक एवं अधिगम संबंधी प्रभाव (Cognitive and Learning Implications)

5.4.2 सामाजिक एवं भावनात्मक प्रभाव (Social and Emotional Implications)

5.4.3 गतिशीलता एवं दैनिक जीवन कौशल पर प्रभाव (Implications on Mobility and Activities of Daily Living)

5.5 दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Assessment for Persons with Visual Impairment)

5.6 दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध मूल्यांकन उपकरण (Available Assessment Tools for Persons with Visual Impairment)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

5.7 मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की अवधारणा एवं आवश्यकता (Concept and Need of Adaptation of Assessment Tools)

5.8 दृष्टिबाधित व्यक्तियों हेतु मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की विधियाँ (Methods of Adapting Assessment Tools for Persons with Visual Impairment)

5.8.1 ब्रेल आधारित अनुकूलन (Braille Adaptation)

5.8.2 श्रव्य एवं डिजिटल अनुकूलन (Audio and Digital Adaptation)

5.8.3 स्पर्श आधारित अनुकूलन (Tactual Adaptation)

5.8.4 बड़े अक्षर एवं दृश्य अनुकूलन (Large Print and Visual Adaptation)

5.9 अनुकूलित मूल्यांकन में विश्वसनीयता एवं वैधता के मुद्दे (Issues of Reliability and Validity in Adapted Assessment)

5.10 मूल्यांकन प्रक्रिया में विशेष शिक्षक एवं विशेषज्ञों की भूमिका (Role of Special Educators and Professionals in Assessment Process)

5.11 सारांश (Summary)

5.12 शब्दावली (Glossary)

5.13 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

5.14 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

5.15 संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

दृष्टि मानव जीवन की प्रमुख संवेदी क्षमताओं में से एक है, जो व्यक्ति को अपने परिवेश को समझने, सूचनाओं को ग्रहण करने तथा विभिन्न दैनिक एवं शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने में सहायता प्रदान करती है। दृष्टि हानि (Vision Loss) के कारण व्यक्ति की दृश्य सूचनाओं तक पहुँच सीमित हो जाती है, जिसका प्रभाव केवल देखने की क्षमता पर ही नहीं, बल्कि उसके अधिगम, संचार, गतिशीलता, सामाजिक सहभागिता एवं आत्मनिर्भरता पर भी पड़ता है। विशेष रूप से बच्चों

एवं युवाओं में दृष्टि हानि उनके विकासात्मक अनुभवों, शैक्षिक अवसरों तथा पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया को प्रभावित कर सकती है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन की प्रक्रिया सामान्य व्यक्तियों से भिन्न होती है, क्योंकि अधिकांश पारंपरिक मूल्यांकन उपकरण दृश्य सूचनाओं, चित्रों, लिखित सामग्री एवं दृश्य संकेतों पर आधारित होते हैं। ऐसे उपकरणों का बिना किसी अनुकूलन के उपयोग दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन करने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि मूल्यांकन उपकरणों एवं प्रक्रियाओं में ऐसे परिवर्तन किए जाएँ, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन उपयुक्त एवं समान अवसरों के साथ कर सके।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का उद्देश्य केवल व्यक्ति की कठिनाइयों की पहचान करना नहीं है, बल्कि उसकी क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं अधिगम की संभावनाओं को समझना भी है। दृष्टिबाधिता के संदर्भ में कार्यात्मक मूल्यांकन, शैक्षिक मूल्यांकन तथा मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए उपलब्ध उपकरणों को व्यक्ति की दृष्टि स्थिति, कार्यात्मक आवश्यकताओं तथा वैकल्पिक संवेदी माध्यमों के अनुरूप अनुकूलित करना आवश्यक होता है।

इस इकाई में दृष्टि हानि की अवधारणा, उसके विभिन्न कार्यात्मक एवं शैक्षिक प्रभावों तथा दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की आवश्यकता एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही यह भी समझा जाएगा कि किस प्रकार ब्रेल, श्रव्य सामग्री, स्पर्श आधारित सामग्री, बड़े अक्षरों तथा सहायक तकनीकी साधनों के माध्यम से मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक समावेशी एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपयुक्त मूल्यांकन व्यवस्था विकसित करना समान अवसर, व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पहचान तथा प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रकार मूल्यांकन उपकरणों का उचित अनुकूलन व्यक्ति-केंद्रित शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए आवश्यक आधार प्रदान करता है।

5.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी —

1.दृष्टि हानि की अवधारणा, प्रकार एवं व्यक्ति के कार्यात्मक, शैक्षिक तथा सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को समझ सकेंगे।

2.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन की आवश्यकता, महत्व एवं मूल्यांकन प्रक्रिया की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

3.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों एवं उनके उपयोग को समझ सकेंगे।

4.दृष्टिबाधिता के संदर्भ में मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की अवधारणा, आवश्यकता एवं विभिन्न विधियों की व्याख्या कर सकेंगे।

5.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपयुक्त अनुकूलित मूल्यांकन व्यवस्था विकसित करने में विशेष शिक्षकों एवं विशेषज्ञों की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

5.3 दृष्टि हानि: अवधारणा, प्रकार एवं प्रभाव (Vision Loss: Concept, Types and Implications)

दृष्टि हानि की अवधारणा (Concept of Vision Loss)

दृष्टि हानि (Vision Loss) से आशय व्यक्ति की देखने की क्षमता में होने वाली कमी या पूर्ण अभाव से है, जिसके कारण व्यक्ति दृश्य सूचनाओं को सामान्य रूप से ग्रहण करने में कठिनाई अनुभव करता है। दृष्टि हानि एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें पूर्ण दृष्टिहीनता (Blindness) से लेकर अल्प दृष्टि (Low Vision) तक विभिन्न अवस्थाएँ सम्मिलित होती हैं। यह स्थिति जन्मजात भी हो सकती है तथा जीवन के किसी भी चरण में बीमारी, दुर्घटना, आनुवंशिक कारणों अथवा अन्य चिकित्सकीय स्थितियों के कारण विकसित हो सकती है।

दृष्टि व्यक्ति के अधिगम एवं पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया का एक प्रमुख माध्यम है। जब किसी व्यक्ति की दृष्टि प्रभावित होती है, तो उसके अनुभवों को प्राप्त करने, सूचनाओं को समझने तथा विभिन्न कार्यों को स्वतंत्र रूप से करने के तरीकों में परिवर्तन आ सकता है। इसलिए दृष्टि हानि को केवल दृष्टि क्षमता की कमी के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि इसे व्यक्ति की कार्यात्मक क्षमताओं एवं जीवन अनुभवों को प्रभावित करने वाली स्थिति के रूप में समझा जाता है।

दृष्टि हानि के प्रकार (Types of Vision Loss)

दृष्टि हानि को सामान्यतः दृष्टि की कार्यात्मक स्थिति एवं कानूनी मानदंडों के आधार पर मुख्य रूप से निम्न प्रकारों में समझा जाता है—

1. दृष्टिहीनता (Blindness)

परिभाषा (Definition):दृष्टिहीनता ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति की दृष्टि इतनी अधिक प्रभावित होती है कि वह सामान्य दृश्य माध्यमों द्वारा जानकारी प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता या उसे अधिगम

एवं दैनिक कार्यों के लिए वैकल्पिक माध्यमों जैसे—ब्रेल, श्रवण सामग्री एवं स्पर्श आधारित साधनों की आवश्यकता होती है।

RPWD Act, 2016 के अनुसार:

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (Rights of Persons with Disabilities Act, 2016) के अनुसार दृष्टिहीनता (Blindness) से आशय ऐसी स्थिति से है जिसमें व्यक्ति में निम्नलिखित में से कोई एक अवस्था पाई जाती है—

दोनों आँखों में दृष्टि का पूर्ण अभाव; अथवा

बेहतर आँख में सर्वोत्तम संभव सुधार (Best Corrected Vision) के बाद दृष्टि तीक्ष्णता 3/60 से कम अथवा 10/200 (Snellen) से कम होना; अथवा

दृष्टि क्षेत्र (Field of Vision) का विस्तार 10 डिग्री से कम होना।

दृष्टिहीनता की स्थिति में व्यक्ति के लिए अधिगम एवं सूचना प्राप्त करने हेतु वैकल्पिक संवेदी माध्यमों का प्रयोग आवश्यक हो सकता है।

2. अल्प दृष्टि (Low Vision)

परिभाषा (Definition)

अल्प दृष्टि ऐसी दृष्टि स्थिति है जिसमें व्यक्ति की दृष्टि क्षमता कम होती है, लेकिन उसमें कुछ उपयोगी दृष्टि उपलब्ध रहती है, जिसका प्रयोग उचित प्रशिक्षण, प्रकाश व्यवस्था एवं सहायक उपकरणों की सहायता से दैनिक जीवन एवं शैक्षिक कार्यों में किया जा सकता है।

RPWD Act, 2016 के अनुसार

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुसार कम दृष्टि (Low Vision) से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जहाँ सर्वोत्तम संभव सुधार (चश्मे या इलाज) के बाद भी बेहतर आंख में दृश्य तीक्ष्णता 6/18 से अधिक नहीं या 20/60 से कम से लेकर 3/60 या 10/200 (स्नेलेन) तक होती है, या दृष्टि क्षेत्र 40 डिग्री से 10 डिग्री तक सीमित होता है।

अल्प दृष्टि वाले व्यक्तियों के लिए उनकी उपलब्ध दृष्टि का अधिकतम उपयोग करने हेतु लो-विजन मूल्यांकन एवं प्रशिक्षण आवश्यक होता है।

दृष्टि हानि के अन्य कार्यात्मक प्रकार (Functional Types of Vision Loss)

1. केंद्रीय दृष्टि हानि (Central Vision Loss)

इस स्थिति में व्यक्ति को देखने के केंद्रीय क्षेत्र में कठिनाई होती है। इसके कारण पढ़ने, सूक्ष्म कार्य करने तथा चेहरे पहचानने में समस्या हो सकती है। मैक्युलर डिजनरेशन जैसी स्थितियाँ केंद्रीय दृष्टि को प्रभावित कर सकती हैं।

2. परिधीय दृष्टि हानि (Peripheral Vision Loss)

इसमें व्यक्ति को आसपास के क्षेत्र को देखने में कठिनाई होती है। इससे गतिशीलता, दिशा ज्ञान एवं सुरक्षित आवागमन प्रभावित हो सकता है।

3. धुंधली दृष्टि (Blurred Vision)

इस स्थिति में व्यक्ति को वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई नहीं देतीं। इससे पढ़ने, लिखने एवं दृश्य विवरणों को समझने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।

4. प्रकाश संवेदनशीलता संबंधी दृष्टि हानि (Light Sensitivity Problems)

कुछ व्यक्तियों को अधिक प्रकाश या कम प्रकाश में देखने में कठिनाई होती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था एवं दृश्य अनुकूलन आवश्यक होता है।

दृष्टि हानि के प्रभाव (Implications of Vision Loss)

दृष्टि हानि का प्रभाव व्यक्ति के विकास के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ता है। शैक्षिक क्षेत्र में यह पढ़ने, लिखने, चित्रों एवं दृश्य सामग्री को समझने तथा कक्षा गतिविधियों में भागीदारी को प्रभावित कर सकती है। इसलिए दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए शिक्षण सामग्री एवं विधियों में आवश्यक अनुकूलन करना आवश्यक होता है।

सामाजिक एवं भावनात्मक स्तर पर दृष्टि हानि व्यक्ति के आत्मविश्वास, सामाजिक संबंधों तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। उचित प्रशिक्षण, सहयोग एवं सकारात्मक वातावरण के माध्यम से इन प्रभावों को कम किया जा सकता है।

दैनिक जीवन एवं गतिशीलता के क्षेत्र में दृष्टि हानि के कारण व्यक्ति को वातावरण की पहचान, सुरक्षित आवागमन तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने में कठिनाई हो सकती है। इसके लिए अभिविन्यास एवं गतिशीलता प्रशिक्षण (Orientation and Mobility Training), सहायक उपकरणों तथा पर्यावरणीय अनुकूलन की आवश्यकता होती है।

दृष्टि हानि के प्रभावों को समझना मूल्यांकन एवं शैक्षिक योजना निर्माण के लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे व्यक्ति की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान कर उसके लिए उपयुक्त सहायता एवं सेवाओं का निर्धारण किया जा सकता है।

5.4 दृष्टि हानि के कार्यात्मक निहितार्थ (Functional Implications of Vision Loss)

दृष्टि व्यक्ति के विकास एवं पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया का एक प्रमुख माध्यम है। दृष्टि हानि होने पर व्यक्ति की दृश्य सूचनाओं तक पहुँच सीमित हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप उसके कार्यात्मक व्यवहार, अधिगम प्रक्रिया, संचार, गतिशीलता, सामाजिक सहभागिता तथा दैनिक जीवन कौशल पर प्रभाव पड़ सकता है। दृष्टि हानि के कार्यात्मक निहितार्थों को समझना विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके आधार पर व्यक्ति की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान कर उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाई जाती है।

दृष्टि हानि का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति में समान नहीं होता। इसका प्रभाव दृष्टि हानि की प्रकृति, प्रारंभिक अवस्था, दृष्टि हानि की मात्रा, अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति, परिवार एवं पर्यावरण से प्राप्त सहयोग तथा व्यक्ति द्वारा विकसित वैकल्पिक कौशलों पर निर्भर करता है। इसलिए दृष्टिबाधित व्यक्तियों का मूल्यांकन करते समय उनकी व्यक्तिगत परिस्थितियों एवं कार्यात्मक क्षमताओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

1. अधिगम एवं शैक्षिक कार्यों पर प्रभाव (Impact on Learning and Educational Activities)

दृष्टि हानि का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव व्यक्ति की सीखने की प्रक्रिया पर दिखाई देता है। सामान्य बालक अपने प्रारंभिक ज्ञान एवं अनुभवों का एक बड़ा भाग देखकर प्राप्त करता है, जबकि दृष्टिबाधित बालक को वही जानकारी श्रवण, स्पर्श एवं अनुभवात्मक माध्यमों से प्राप्त करनी पड़ती है। दृश्य सामग्री जैसे—चित्र, चार्ट, मानचित्र, आरेख एवं लिखित सामग्री तक पहुँच में कठिनाई के कारण उसे वैकल्पिक शिक्षण माध्यमों की आवश्यकता होती है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल, श्रव्य सामग्री, स्पर्श आधारित शिक्षण सामग्री, बड़े अक्षरों वाली पुस्तकें तथा सहायक तकनीकी उपकरण अधिगम को प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं। शिक्षक को शिक्षण विधियों एवं सामग्री में आवश्यक अनुकूलन करना आवश्यक होता है।

2. संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव (Impact on Cognitive Development)

दृष्टि हानि संज्ञानात्मक विकास को सीधे रूप से प्रभावित नहीं करती, लेकिन जानकारी प्राप्त करने के तरीकों को प्रभावित करती है। दृश्य अनुभवों की कमी के कारण अवधारणाओं के निर्माण में

कठिनाई हो सकती है, विशेषकर उन विषयों में जिनमें दृश्य संकेतों का अधिक उपयोग होता है। उदाहरण के लिए, आकार, दूरी, स्थानिक संबंध एवं पर्यावरणीय अवधारणाओं को समझने के लिए स्पर्श एवं अनुभव आधारित गतिविधियों की आवश्यकता होती है।

उचित शिक्षण अनुभव, अन्वेषण के अवसर एवं बहु-संवेदी शिक्षण के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति प्रभावी संज्ञानात्मक विकास कर सकता है।

3. गतिशीलता एवं अभिविन्यास पर प्रभाव (Impact on Orientation and Mobility)

दृष्टि व्यक्ति को अपने परिवेश को समझने और सुरक्षित रूप से चलने में सहायता करती है। दृष्टि हानि के कारण व्यक्ति को स्थानों की पहचान, दिशा निर्धारण, बाधाओं से बचाव तथा स्वतंत्र आवागमन में कठिनाई हो सकती है। विशेष रूप से जन्मजात दृष्टिबाधिता वाले बच्चों में पर्यावरण संबंधी अनुभव सीमित हो सकते हैं।

इन कठिनाइयों को कम करने के लिए अभिविन्यास एवं गतिशीलता प्रशिक्षण (Orientation and Mobility Training), सफेद छड़ी प्रशिक्षण, दिशा ज्ञान तथा पर्यावरणीय अनुकूलन महत्वपूर्ण होते हैं।

4. संचार एवं सामाजिक सहभागिता पर प्रभाव (Impact on Communication and Social Interaction)

दृष्टि सामाजिक संचार का एक महत्वपूर्ण भाग है। चेहरे के भाव, हाव-भाव एवं गैर-मौखिक संकेतों को समझने में दृष्टि सहायता करती है। दृष्टिबाधिता के कारण सामाजिक संकेतों को समझने में कठिनाई हो सकती है, जिससे सामाजिक सहभागिता प्रभावित हो सकती है।

उचित संचार प्रशिक्षण, सामाजिक कौशल विकास तथा सहयोगी वातावरण के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति प्रभावी सामाजिक संबंध स्थापित कर सकता है।

5. दैनिक जीवन कौशल एवं आत्मनिर्भरता पर प्रभाव (Impact on Activities of Daily Living)

दृष्टि हानि का प्रभाव दैनिक जीवन की गतिविधियों जैसे व्यक्तिगत देखभाल, भोजन करना, वस्तुओं की पहचान, घरेलू कार्यों एवं स्वतंत्र निर्णय लेने पर पड़ सकता है। प्रशिक्षण एवं अभ्यास के माध्यम से व्यक्ति इन कौशलों को विकसित कर सकता है और अधिक आत्मनिर्भर बन सकता है।

दृष्टि हानि के कार्यात्मक निहितार्थों का अध्ययन मूल्यांकन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि व्यक्ति को किन क्षेत्रों में सहायता, प्रशिक्षण एवं अनुकूलन की

आवश्यकता है। विशेष शिक्षा में यही जानकारी व्यक्तिगत शैक्षिक योजना, शिक्षण रणनीतियों एवं पुनर्वास सेवाओं के निर्धारण का आधार बनती है।

5.4.1 संज्ञानात्मक एवं अधिगम संबंधी प्रभाव (Cognitive and Learning Implications)

दृष्टि हानि का प्रभाव व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं एवं अधिगम प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण रूप से पड़ सकता है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य व्यक्ति की सोचने, समझने, तर्क करने, समस्या समाधान करने तथा अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करने की क्षमता से है। दृष्टि सामान्यतः पर्यावरण से जानकारी प्राप्त करने का प्रमुख माध्यम होती है, इसलिए दृष्टि हानि की स्थिति में जानकारी प्राप्त करने के तरीकों में परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

दृष्टिबाधित बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा कम अनुभव प्राप्त नहीं करते, बल्कि उनके अनुभव प्राप्त करने के माध्यम अलग होते हैं। वे दृश्य अनुभवों के स्थान पर श्रवण, स्पर्श एवं अन्य संवेदी माध्यमों का अधिक उपयोग करते हैं। यदि उन्हें उचित अवसर, प्रशिक्षण एवं अनुकूल शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो वे प्रभावी संज्ञानात्मक विकास कर सकते हैं।

दृष्टि हानि का प्रमुख प्रभाव अवधारणा निर्माण (Concept Formation) पर दिखाई दे सकता है। अनेक अवधारणाएँ जैसे—आकार, दूरी, स्थान, दिशा, रंग एवं वस्तुओं की विशेषताएँ सामान्यतः दृश्य अनुभवों से विकसित होती हैं। दृष्टिबाधित बच्चों को इन अवधारणाओं के विकास के लिए स्पर्श आधारित सामग्री, वास्तविक वस्तुओं का अनुभव, मौखिक विवरण एवं गतिविधि आधारित शिक्षण की आवश्यकता होती है।

अधिगम प्रक्रिया में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री तक पहुँच, चित्रों एवं आरेखों की समझ, लिखित सामग्री के उपयोग तथा कक्षा गतिविधियों में भागीदारी के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए ब्रेल, श्रव्य सामग्री, डिजिटल तकनीक, स्पर्शनीय चित्र एवं अनुकूलित शिक्षण सामग्री प्रभावी माध्यम सिद्ध होते हैं।

दृष्टि हानि स्वयं बुद्धि या सीखने की क्षमता को कम नहीं करती, लेकिन जानकारी प्राप्त करने के अवसरों एवं तरीकों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए शिक्षक को बालक की क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए बहु-संवेदी शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए। व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP), उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ एवं आवश्यक अनुकूलन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

दृष्टि हानि के संज्ञानात्मक एवं अधिगम संबंधी प्रभावों को समझना विशेष शिक्षक के लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे वह बालक की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान कर उपयुक्त

शैक्षिक अवसर प्रदान कर सकता है। उचित सहयोग एवं अनुकूल वातावरण के माध्यम से दृष्टिबाधित विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकते हैं।

5.4.2 सामाजिक एवं भावनात्मक प्रभाव (Social and Emotional Implications)

दृष्टि हानि का प्रभाव व्यक्ति के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर भी पड़ सकता है। सामाजिक विकास से तात्पर्य व्यक्ति की दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने, सामाजिक परिस्थितियों में भाग लेने तथा समाज के नियमों एवं व्यवहारों को समझने की क्षमता से है। भावनात्मक विकास में आत्मविश्वास, आत्म-धारणा, भावनाओं का नियंत्रण तथा स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास शामिल होता है।

दृष्टिबाधिता के कारण व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों में कुछ विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। दृष्टि के माध्यम से प्राप्त होने वाले गैर-मौखिक संकेत जैसे—चेहरे के भाव, शारीरिक हाव-भाव एवं सामाजिक प्रतिक्रियाओं को समझने में कठिनाई हो सकती है। इसके कारण सामाजिक संवाद एवं संबंधों के निर्माण में कुछ बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

दृष्टिबाधित बच्चों में कभी-कभी आत्मविश्वास की कमी, दूसरों पर निर्भरता, सामाजिक संकोच या अलगाव की भावना विकसित हो सकती है, विशेष रूप से तब जब उन्हें परिवार, विद्यालय या समाज से पर्याप्त सहयोग एवं सकारात्मक अवसर प्राप्त नहीं होते। साथियों के साथ सहभागिता के सीमित अवसर भी उनके सामाजिक कौशल के विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

उचित वातावरण, परिवार का सहयोग, विद्यालय में समावेशी दृष्टिकोण तथा सामाजिक कौशल प्रशिक्षण दृष्टिबाधित व्यक्तियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को कक्षा में सहयोगात्मक गतिविधियों, समूह कार्यों एवं सहपाठी सहयोग (Peer Support) के अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे दृष्टिबाधित विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ सहभागिता कर सकें।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझना उतना ही आवश्यक है जितना कि उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को समझना। सकारात्मक प्रोत्साहन, स्वतंत्र कार्य करने के अवसर तथा निर्णय लेने में भागीदारी उनके आत्मनिर्भरता एवं आत्मसम्मान को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

दृष्टि हानि के सामाजिक एवं भावनात्मक प्रभावों का उचित मूल्यांकन करके आवश्यक परामर्श, प्रशिक्षण एवं सहयोग सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। इससे दृष्टिबाधित व्यक्ति समाज में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपने व्यक्तित्व का समग्र विकास कर सकते हैं।

5.4.3 गतिशीलता एवं दैनिक जीवन कौशल पर प्रभाव (Implications on Mobility and Activities of Daily Living)

दृष्टि हानि का प्रभाव व्यक्ति की गतिशीलता (Mobility) तथा दैनिक जीवन की गतिविधियों (Activities of Daily Living–ADL) पर महत्वपूर्ण रूप से पड़ सकता है। दृष्टि व्यक्ति को अपने आसपास के वातावरण को समझने, स्थानों की पहचान करने, सुरक्षित रूप से चलने तथा विभिन्न कार्यों को स्वतंत्र रूप से करने में सहायता प्रदान करती है। दृष्टि हानि की स्थिति में व्यक्ति को पर्यावरण संबंधी जानकारी प्राप्त करने एवं उसका उपयोग करने के लिए वैकल्पिक कौशलों का विकास करना आवश्यक होता है।

गतिशीलता से आशय व्यक्ति की एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुरक्षित, स्वतंत्र एवं प्रभावी रूप से जाने की क्षमता से है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों को दिशा पहचानने, मार्ग में आने वाली बाधाओं को समझने, स्थानों की पहचान करने तथा नए वातावरण में अनुकूलन करने में कठिनाई हो सकती है। विशेष रूप से जन्मजात दृष्टिबाधिता वाले बच्चों में स्थानिक अवधारणाओं (Spatial Concepts) एवं पर्यावरणीय समझ के विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

दृष्टि हानि के कारण दैनिक जीवन की गतिविधियाँ जैसे—व्यक्तिगत देखभाल, भोजन करना, कपड़े पहनना, वस्तुओं की पहचान करना, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना तथा घरेलू कार्यों को स्वतंत्र रूप से करना प्रभावित हो सकता है। हालांकि उचित प्रशिक्षण एवं अभ्यास के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति इन कौशलों को विकसित कर आत्मनिर्भर जीवन जी सकते हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास एवं गतिशीलता प्रशिक्षण (Orientation and Mobility Training) अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसके अंतर्गत शरीर की जागरूकता, दिशा ज्ञान, स्थान की पहचान, सुरक्षित चलने की तकनीक, सफेद छड़ी का उपयोग तथा सार्वजनिक स्थानों में स्वतंत्र आवागमन जैसे कौशल विकसित किए जाते हैं।

दैनिक जीवन कौशल प्रशिक्षण (Daily Living Skills Training) व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को स्वतंत्र रूप से पूरा करने में सहायता करता है। विशेष शिक्षक एवं पुनर्वास विशेषज्ञ बालक की आवश्यकताओं के अनुसार इन कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

दृष्टि हानि के कारण उत्पन्न गतिशीलता एवं दैनिक जीवन संबंधी कठिनाइयों को कम करने के लिए सहायक उपकरण, अनुकूलित वातावरण तथा निरंतर प्रशिक्षण आवश्यक होते हैं। इन क्षेत्रों का मूल्यांकन दृष्टिबाधित व्यक्ति की स्वतंत्रता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

5.5 दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Assessment for Persons with Visual Impairment)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन (Assessment) विशेष शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। मूल्यांकन का उद्देश्य केवल व्यक्ति की दिव्यांगता की पहचान करना नहीं होता, बल्कि उसकी क्षमताओं, आवश्यकताओं, अधिगम शैली, कार्यात्मक कौशल तथा विकास की संभावनाओं को समझना भी होता है। दृष्टिबाधिता वाले व्यक्तियों के संदर्भ में मूल्यांकन की प्रक्रिया को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं एवं कार्यात्मक क्षमताओं के अनुरूप विकसित करना आवश्यक होता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की शैक्षिक एवं पुनर्वास आवश्यकताएँ एक समान नहीं होतीं। प्रत्येक व्यक्ति में दृष्टि हानि की प्रकृति, मात्रा, प्रारंभिक अवस्था, अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति तथा उपलब्ध सहायता के आधार पर विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। इसलिए व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पहचान के लिए व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन आवश्यक होता है।

मूल्यांकन के माध्यम से व्यक्ति की दृष्टि क्षमता, अवशिष्ट दृष्टि का उपयोग, संचार कौशल, गतिशीलता कौशल, दैनिक जीवन कौशल, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि व्यक्ति को किस प्रकार की शैक्षिक सामग्री, प्रशिक्षण एवं सहायता सेवाओं की आवश्यकता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individualized Educational Programme–IEP) के निर्माण का आधार प्रदान करता है। मूल्यांकन परिणामों के आधार पर उपयुक्त शिक्षण माध्यम जैसे—ब्रेल, बड़े अक्षरों वाली सामग्री, श्रव्य सामग्री या सहायक तकनीकी साधनों का चयन किया जाता है। साथ ही कक्षा में आवश्यक अनुकूलन, शिक्षण रणनीतियाँ एवं मूल्यांकन विधियों का निर्धारण भी किया जाता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन में सामान्य मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग हमेशा प्रभावी नहीं होता, क्योंकि अनेक उपकरण दृश्य सूचनाओं पर आधारित होते हैं। इसलिए मूल्यांकन उपकरणों का उचित अनुकूलन आवश्यक होता है, जिससे व्यक्ति अपनी वास्तविक क्षमताओं का प्रदर्शन कर सके और मूल्यांकन के परिणाम अधिक विश्वसनीय प्राप्त हो सकें।

मूल्यांकन प्रक्रिया विशेष शिक्षक, अभिभावक एवं विभिन्न विशेषज्ञों के बीच सहयोग स्थापित करने में भी सहायता करती है। इसके माध्यम से बालक की प्रगति की निगरानी, आवश्यक हस्तक्षेपों का निर्धारण तथा पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाई जा सकती है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए प्रभावी मूल्यांकन समान अवसर, आवश्यकता-आधारित शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन है। यह व्यक्ति की सीमाओं की अपेक्षा उसकी क्षमताओं और संभावनाओं को पहचानने पर केंद्रित होता है, जिससे उसके सर्वांगीण विकास को उचित दिशा प्रदान की जा सके।

5.6 दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध मूल्यांकन उपकरण (Available Assessment Tools for Persons with Visual Impairment)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन के लिए ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है, जो उनकी दृष्टि स्थिति, कार्यात्मक क्षमताओं, शैक्षिक आवश्यकताओं एवं पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित आकलन कर सकें। NIEPVD (National Institute for Empowerment of Persons with Visual Disabilities) तथा विशेष शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन उपकरण विकसित एवं प्रयुक्त किए जाते हैं। इन उपकरणों का उद्देश्य व्यक्ति की सीमाओं की पहचान करना नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं एवं आवश्यक सहयोग को निर्धारित करना होता है।

1. कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन उपकरण (Functional Vision Assessment Tools)

Functional Vision Assessment (FVA) Format – उपलब्ध दृष्टि के दैनिक जीवन एवं शैक्षिक गतिविधियों में उपयोग का मूल्यांकन।

Functional Vision Screening Checklist – दृष्टि के कार्यात्मक उपयोग की प्रारंभिक पहचान के लिए।

Low Vision Assessment Record – अल्प दृष्टि वाले व्यक्तियों की दृश्य क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के आकलन के लिए।

2. लो-विजन मूल्यांकन उपकरण (Low Vision Assessment Tools)

Low Vision Evaluation Kit – अवशिष्ट दृष्टि का मूल्यांकन करने एवं उपयुक्त सहायक उपकरणों के चयन के लिए।

Near Vision Chart – निकट दृष्टि क्षमता का परीक्षण करने के लिए।

Distance Vision Chart (Snellen Chart) – दूर दृष्टि तीक्ष्णता के आकलन के लिए।

Contrast Sensitivity Test – वस्तुओं एवं पृष्ठभूमि के बीच अंतर पहचानने की क्षमता के लिए।

Magnification Assessment Tools – मैग्नीफायर एवं अन्य दृश्य सहायक उपकरणों की आवश्यकता निर्धारित करने के लिए।

3. शैक्षिक मूल्यांकन उपकरण (Educational Assessment Tools)

Educational Assessment Checklist for Children with Visual Impairment – शैक्षिक कौशल एवं आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए।

Learning Media Assessment (LMA) – बच्चे के लिए उपयुक्त अधिगम माध्यम (प्रिंट, ब्रेल, श्रव्य सामग्री) निर्धारित करने के लिए।

Braille Readiness Assessment – ब्रेल सीखने की तैयारी एवं स्पर्श कौशल के मूल्यांकन के लिए।

Braille Reading and Writing Assessment – ब्रेल पठन एवं लेखन क्षमता के आकलन के लिए।

4. कार्यात्मक कौशल मूल्यांकन उपकरण (Functional Skills Assessment Tools)

Functional Assessment Checklist – दैनिक जीवन एवं कार्यात्मक कौशल के मूल्यांकन के लिए।

Independent Living Skills Assessment – व्यक्तिगत देखभाल एवं स्वतंत्र जीवन कौशल के आकलन के लिए।

Activities of Daily Living (ADL) Checklist – दैनिक गतिविधियों में स्वतंत्रता का मूल्यांकन करने के लिए।

5. अभिविन्यास एवं गतिशीलता मूल्यांकन उपकरण (Orientation and Mobility Assessment Tools)

Orientation and Mobility Assessment Format – दिशा ज्ञान एवं गतिशीलता कौशल के मूल्यांकन के लिए।

Cane Skills Assessment Checklist – सफेद छड़ी के उपयोग एवं गतिशीलता कौशल के आकलन के लिए।

Environmental Awareness Assessment – परिवेश की पहचान एवं सुरक्षित आवागमन की क्षमता के लिए।

6. मनोवैज्ञानिक एवं विकासात्मक मूल्यांकन उपकरण (Psychological and Developmental Assessment Tools)

Developmental Assessment Checklist – विकासात्मक स्तर के मूल्यांकन के लिए।

Adaptive Behaviour Assessment Tools – अनुकूलन व्यवहार एवं स्वतंत्रता के स्तर को समझने के लिए।

Intelligence Tests Adapted for Visual Impairment – दृष्टिबाधित व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमताओं के आकलन के लिए अनुकूलित परीक्षण।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का चयन करते समय उनकी आयु, दृष्टि की स्थिति, कार्यात्मक क्षमता एवं मूल्यांकन के उद्देश्य को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

5.7 मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की अवधारणा एवं आवश्यकता (Concept and Need of Adaptation of Assessment Tools)

मूल्यांकन उपकरणों का अनुकूलन (Adaptation of Assessment Tools) से आशय किसी उपलब्ध मूल्यांकन उपकरण में ऐसे आवश्यक परिवर्तन करने से है, जिससे वह दृष्टिबाधित व्यक्तियों की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयोगी एवं प्रभावी बन सके। अधिकांश पारंपरिक मूल्यांकन उपकरण दृश्य सूचनाओं, चित्रों, लिखित सामग्री तथा दृश्य संकेतों पर आधारित होते हैं, जिनका प्रयोग दृष्टिबाधित व्यक्तियों के साथ बिना परिवर्तन के करने पर उनकी वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन नहीं हो पाता।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का अनुकूलन उनकी दृष्टि स्थिति, कार्यात्मक क्षमता एवं अधिगम माध्यम को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। उदाहरण के लिए, लिखित सामग्री को ब्रेल में परिवर्तित करना, बड़े अक्षरों (Large Print) का प्रयोग करना, चित्रों एवं आकृतियों को स्पर्शनीय रूप में प्रस्तुत करना तथा डिजिटल एवं श्रव्य माध्यमों का उपयोग करना मूल्यांकन उपकरणों के प्रमुख अनुकूलन हैं।

मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए समान अवसर मिलना चाहिए। यदि उपकरण केवल दृश्य माध्यम पर आधारित होंगे, तो दृष्टिबाधित व्यक्ति की वास्तविक योग्यता के स्थान पर उसकी दृश्य सीमा का मूल्यांकन हो सकता है। उचित अनुकूलन मूल्यांकन की विश्वसनीयता (Reliability) एवं वैधता (Validity) को बनाए रखने में सहायता करता है।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलित मूल्यांकन उपकरण व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP), शिक्षण रणनीतियों के चयन, सहायक उपकरणों की आवश्यकता निर्धारण तथा पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन में उपकरणों का अनुकूलन एक आवश्यक प्रक्रिया है, जो समावेशी एवं व्यक्ति-केंद्रित मूल्यांकन व्यवस्था को प्रभावी बनाती है।

5.8 दृष्टिबाधित व्यक्तियों हेतु मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की विधियाँ

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का अनुकूलन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत उपलब्ध मूल्यांकन उपकरणों में ऐसे परिवर्तन किए जाते हैं, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमताओं एवं ज्ञान का उचित प्रदर्शन कर सके। अनुकूलन का उद्देश्य मूल्यांकन के मूल उद्देश्य को बनाए रखते हुए प्रस्तुतीकरण, प्रतिक्रिया देने के तरीके तथा सामग्री के स्वरूप में आवश्यक परिवर्तन करना होता है। दृष्टिबाधिता की प्रकृति (पूर्ण दृष्टिहीनता या अल्प दृष्टि), कार्यात्मक क्षमता एवं व्यक्ति द्वारा उपयोग किए जाने वाले अधिगम माध्यम के आधार पर अनुकूलन की विधियाँ निर्धारित की जाती हैं।

1. प्रस्तुतीकरण में अनुकूलन (Adaptation in Presentation Format)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन सामग्री को ऐसे स्वरूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है, जिसे वे आसानी से ग्रहण कर सकें। सामान्य मुद्रित सामग्री को ब्रेल, इलेक्ट्रॉनिक टेक्स्ट, ऑडियो प्रारूप या बड़े अक्षरों में परिवर्तित किया जा सकता है। प्रश्नों एवं निर्देशों को स्पष्ट, सरल एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है, जिससे व्यक्ति बिना अतिरिक्त कठिनाई के मूल्यांकन प्रक्रिया में भाग ले सके।

2. ब्रेल अनुकूलन (Braille Adaptation)

पूर्ण दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए लिखित मूल्यांकन सामग्री को ब्रेल में परिवर्तित करना एक महत्वपूर्ण अनुकूलन है। ब्रेल आधारित प्रश्न पत्र, निर्देश एवं उत्तर लेखन की सुविधा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है। ब्रेल सामग्री तैयार करते समय ब्रेल कोड, प्रारूप एवं तकनीकी मानकों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

9. श्रव्य अनुकूलन (Audio Adaptation)

कुछ दृष्टिबाधित व्यक्ति श्रवण माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से जानकारी प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रश्नों एवं निर्देशों को ऑडियो रूप में उपलब्ध कराया जा सकता है। स्क्रीन रीडर, ऑडियो रिकॉर्डिंग तथा डिजिटल संसाधनों का उपयोग मूल्यांकन को अधिक सुलभ बनाता है।

4. स्पर्शनीय अनुकूलन (Tactual Adaptation)

चित्र, मानचित्र, ज्यामितीय आकृतियाँ एवं दृश्य सामग्री आधारित प्रश्नों को स्पर्शनीय रूप में परिवर्तित करना आवश्यक हो सकता है। स्पर्शनीय आरेख (Tactile Diagrams), उभरी हुई आकृतियाँ (Raised Diagrams) तथा वास्तविक वस्तुओं के उपयोग से दृष्टिबाधित व्यक्ति अवधारणाओं को बेहतर समझ सकता है।

5. दृश्य अनुकूलन (Visual Adaptation for Low Vision)

अल्प दृष्टि वाले व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन सामग्री में दृश्य परिवर्तन किए जाते हैं। इसमें बड़े अक्षरों का प्रयोग, स्पष्ट कंट्रास्ट, उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था, अक्षरों एवं पृष्ठ के बीच पर्याप्त अंतर तथा मैग्नीफिकेशन उपकरणों का उपयोग शामिल होता है। यह अनुकूलन व्यक्ति की अवशिष्ट दृष्टि के प्रभावी उपयोग में सहायता करता है।

6. प्रतिक्रिया के तरीके में अनुकूलन (Adaptation in Response Mode)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए वैकल्पिक माध्यम उपलब्ध कराए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए—ब्रेल में लिखना, टाइपराइटर या कंप्यूटर का उपयोग, मौखिक उत्तर देना अथवा सहायक तकनीकी उपकरणों के माध्यम से प्रतिक्रिया देना। इससे व्यक्ति अपनी वास्तविक योग्यता को प्रदर्शित कर सकता है।

7. अतिरिक्त समय एवं सहायक व्यक्ति की व्यवस्था (Provision of Extra Time and Scribe Support)

कुछ परिस्थितियों में दृष्टिबाधित व्यक्तियों को मूल्यांकन पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता हो सकती है। आवश्यकता पड़ने पर लेखक (Scribe) की सुविधा भी प्रदान की जा सकती है। लेखक का उपयोग करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि वह केवल लिखने में सहायता करे, उत्तरों को प्रभावित न करे।

8. पर्यावरणीय अनुकूलन (Environmental Adaptation)

मूल्यांकन केवल उपकरणों तक सीमित नहीं होता, बल्कि मूल्यांकन का वातावरण भी महत्वपूर्ण होता है। शांत स्थान, उचित प्रकाश व्यवस्था, बैठने की उपयुक्त व्यवस्था तथा बाधा-रहित वातावरण दृष्टिबाधित व्यक्ति के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का प्रभावी अनुकूलन उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। उचित अनुकूलन मूल्यांकन प्रक्रिया को समान अवसर, निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता प्रदान करता है तथा व्यक्ति की वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन करने में सहायता करता है।

5.9 अनुकूलित मूल्यांकन में विश्वसनीयता एवं वैधता के मुद्दे (Issues of Reliability and Validity in Adapted Assessment)

मूल्यांकन किसी भी व्यक्ति की क्षमताओं, ज्ञान, कौशल एवं आवश्यकताओं को समझने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए जब सामान्य मूल्यांकन उपकरणों में आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं, तो इसे अनुकूलित मूल्यांकन (Adapted Assessment) कहा जाता है। अनुकूलित मूल्यांकन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि दृष्टिबाधित व्यक्ति अपनी वास्तविक क्षमता का प्रदर्शन कर सके तथा मूल्यांकन उसकी दिव्यांगता के स्थान पर उसके कौशल एवं ज्ञान को मापे।

अनुकूलित मूल्यांकन उपकरणों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए विश्वसनीयता (Reliability) एवं वैधता (Validity) महत्वपूर्ण आधार होते हैं। यदि किसी उपकरण में अनुकूलन किया गया है, तो यह आवश्यक है कि वह उपकरण अपने मूल उद्देश्य को प्रभावी रूप से पूरा करे और प्राप्त परिणाम स्थिर एवं उपयोगी हों।

विश्वसनीयता (Reliability)

विश्वसनीयता से आशय मूल्यांकन उपकरण की उस क्षमता से है, जिसके द्वारा वह बार-बार प्रयोग किए जाने पर समान या लगभग समान परिणाम प्रदान करता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपकरणों को ब्रेल, श्रव्य, स्पर्शनीय या डिजिटल रूप में परिवर्तित करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि अनुकूलन के कारण परिणामों में अनावश्यक परिवर्तन न आए।

उदाहरण के लिए, यदि किसी शैक्षिक परीक्षण को ब्रेल में परिवर्तित किया जाता है, तो यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रश्नों का अर्थ, कठिनाई स्तर एवं मूल्यांकन का उद्देश्य मूल परीक्षण के समान बना रहे। इसी प्रकार स्पर्शनीय चित्रों या श्रव्य सामग्री के निर्माण में भी मानकीकरण बनाए रखना आवश्यक होता है।

वैधता (Validity)

वैधता से आशय यह है कि मूल्यांकन उपकरण वास्तव में उसी क्षमता का मापन करे, जिसके लिए उसे तैयार किया गया है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि कई पारंपरिक उपकरण दृश्य क्षमता पर आधारित होते हैं।

यदि किसी परीक्षण में चित्र, आरेख या दृश्य संकेतों का प्रयोग किया गया है, तो दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिए उनका उपयुक्त अनुकूलन आवश्यक है। उदाहरण के लिए, किसी अवधारणा के ज्ञान का मूल्यांकन करते समय केवल चित्र देखने की क्षमता का परीक्षण नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यक्ति की समझ एवं ज्ञान का आकलन होना चाहिए।

अनुकूलित मूल्यांकन में प्रमुख मुद्दे (Major Issues)

अनुकूलित मूल्यांकन तैयार करते समय कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। सबसे प्रमुख चुनौती यह होती है कि उपकरण को सुलभ बनाते समय उसकी मूल संरचना एवं मापन क्षमता प्रभावित न हो। अत्यधिक परिवर्तन करने से परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता कम हो सकती है।

अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों में उपयुक्त अनुकूलन विधि का चयन, मानकीकृत सामग्री की उपलब्धता, मूल्यांकनकर्ताओं का प्रशिक्षण तथा विभिन्न दृष्टि स्थितियों वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त सामग्री तैयार करना शामिल है। विशेष रूप से अल्प दृष्टि वाले व्यक्तियों के लिए प्रकाश, अक्षर आकार, कंट्रास्ट एवं सहायक उपकरणों की आवश्यकता का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए प्रभावी अनुकूलित मूल्यांकन विकसित करने हेतु मूल्यांकनकर्ता को व्यक्ति की दृष्टि स्थिति, कार्यात्मक आवश्यकताओं एवं अधिगम माध्यम की जानकारी होना आवश्यक है। उचित अनुकूलन के माध्यम से मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक निष्पक्ष, विश्वसनीय एवं व्यक्ति-केंद्रित बनाया जा सकता है।

5.10 मूल्यांकन प्रक्रिया में विशेष शिक्षक एवं विशेषज्ञों की भूमिका (Role of Special Educators and Professionals in Assessment Process)

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन की प्रक्रिया एक बहुआयामी एवं सहयोगात्मक प्रक्रिया है, जिसमें विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, चिकित्सकीय विशेषज्ञ, पुनर्वास विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक एवं अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दृष्टिबाधिता से संबंधित आवश्यकताओं को केवल एक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता, इसलिए विभिन्न विशेषज्ञों के समन्वित प्रयासों द्वारा व्यक्ति की वास्तविक क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का व्यापक मूल्यांकन किया जाता है।

विशेष शिक्षक (Special Educator) मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रमुख भाग होता है। विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित व्यक्ति की शैक्षिक आवश्यकताओं, अधिगम शैली, ब्रेल कौशल, कार्यात्मक दृष्टि, संचार क्षमता, दैनिक जीवन कौशल तथा अभिविन्यास एवं गतिशीलता कौशल का आकलन करता है। वह मूल्यांकन परिणामों के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP) तैयार करने तथा उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों के चयन में सहायता करता है।

विशेष शिक्षक की भूमिका केवल परीक्षण करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह मूल्यांकन उपकरणों के चयन एवं अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। वह यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति के लिए ब्रेल, बड़े अक्षर, श्रव्य सामग्री, स्पर्शनीय सामग्री या सहायक तकनीकी साधनों में से कौन-सा माध्यम अधिक उपयुक्त रहेगा।

दृष्टि विशेषज्ञ एवं लो-विजन विशेषज्ञ (Eye Care and Low Vision Professionals) व्यक्ति की दृष्टि स्थिति, अवशिष्ट दृष्टि के उपयोग तथा आवश्यक दृश्य सहायक उपकरणों की पहचान में सहायता करते हैं। उनके द्वारा प्रदान की गई जानकारी शैक्षिक अनुकूलन एवं सहायक उपकरणों के चयन में उपयोगी होती है।

मनोवैज्ञानिक एवं पुनर्वास विशेषज्ञ व्यक्ति के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों का मूल्यांकन करते हैं तथा आवश्यक परामर्श एवं सहयोग सेवाएँ प्रदान करते हैं। अभिभावकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे व्यक्ति के व्यवहार, दैनिक जीवन कौशल एवं वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रभावी मूल्यांकन के लिए सभी विशेषज्ञों के बीच समन्वय एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक होता है। बहु-विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति की क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं विकास की संभावनाओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इससे उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना अधिक प्रभावी रूप से बनाई जा सकती है।

5.11 सारांश (Summary)

दृष्टि हानि व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण स्थिति है, जिसका प्रभाव केवल देखने की क्षमता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अधिगम, संचार, गतिशीलता, सामाजिक सहभागिता एवं दैनिक जीवन कौशल पर भी पड़ता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों की आवश्यकताओं को समझने के लिए वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित मूल्यांकन प्रक्रिया आवश्यक होती है।

इस इकाई में दृष्टि हानि की अवधारणा, प्रकार एवं इसके कार्यात्मक प्रभावों का अध्ययन किया गया। दृष्टिहीनता एवं अल्प दृष्टि की कानूनी एवं शैक्षिक अवधारणाओं को समझते हुए यह स्पष्ट किया गया कि प्रत्येक दृष्टिबाधित व्यक्ति की आवश्यकताएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का उचित चयन एवं अनुकूलन महत्वपूर्ण होता है। ब्रेल, श्रव्य सामग्री, स्पर्शनीय सामग्री, बड़े अक्षर, डिजिटल तकनीक तथा अन्य सहायक साधनों के माध्यम से मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सुलभ बनाया जा सकता है। अनुकूलित मूल्यांकन में विश्वसनीयता एवं वैधता बनाए रखना आवश्यक होता है, जिससे व्यक्ति की वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन किया जा सके।

विशेष शिक्षक एवं अन्य विशेषज्ञ मूल्यांकन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके सहयोग से व्यक्तिगत शैक्षिक योजना, उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ एवं पुनर्वास सेवाओं का प्रभावी निर्धारण किया जा सकता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए अनुकूलित एवं समावेशी मूल्यांकन व्यवस्था समान अवसर एवं प्रभावी शिक्षा का आधार प्रदान करती है।

5.12 शब्दावली

1.दृष्टि हानि (Vision Loss) – देखने की क्षमता में कमी या अभाव।

2.दृष्टिहीनता (Blindness) – दृष्टि का पूर्ण अभाव या अत्यधिक कमी।

3.अल्प दृष्टि (Low Vision) – कम दृष्टि जो सहायक साधनों से उपयोग की जा सके।

4.कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision) – दैनिक कार्यों में दृष्टि के उपयोग की क्षमता।

5.मूल्यांकन (Assessment) – क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित अध्ययन।

6.अनुकूलन (Adaptation) – आवश्यकतानुसार उपकरणों में परिवर्तन।

7.ब्रेल (Braille) – दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए स्पर्श आधारित लिपि।

8.सहायक तकनीक (Assistive Technology) – सहायता प्रदान करने वाले तकनीकी साधन।

9.विश्वसनीयता (Reliability) – समान परिणाम देने की क्षमता।

10.वैधता (Validity) – वास्तविक गुण के मापन की क्षमता।

5.13 स्व-मूल्यांकन प्रश्न (Self-Assessment Questions)

1.दृष्टि हानि की अवधारणा एवं इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

2.दृष्टिहीनता एवं अल्प दृष्टि की परिभाषा RPWD Act, 2016 के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

3.दृष्टि हानि के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं दैनिक जीवन संबंधी प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

4.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की आवश्यकता एवं विधियों को समझाइए।

5.अनुकूलित मूल्यांकन में विश्वसनीयता एवं वैधता के महत्व की चर्चा कीजिए।

5.14 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1.दृष्टि हानि की अवधारणा, प्रकार एवं व्यक्ति के कार्यात्मक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों एवं उनके उपयोग की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

3.दृष्टिबाधित व्यक्तियों हेतु मूल्यांकन उपकरणों के अनुकूलन की आवश्यकता एवं विभिन्न विधियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

4.अनुकूलित मूल्यांकन उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण कीजिए।

5.दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन में विशेष शिक्षक एवं विभिन्न विशेषज्ञों की भूमिका का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

5.15 संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1.Corn, A. L., & Koenig, A. J. (2002). Foundations of Low Vision: Clinical and Functional Perspectives. New York: American Foundation for the Blind.

2.Koenig, A. J., & Holbrook, M. C. (Eds.). (2000). Foundations of Education: Instructional Strategies for Teaching Children and Youths with Visual Impairments. New York: AFB Press.

3.National Institute for Empowerment of Persons with Visual Disabilities. (NIEPVD). Training Materials and Manuals on Visual Impairment and Rehabilitation. Dehradun: NIEPVD.

4.Rehabilitation Council of India. (2015). Status of Disability in India: Rehabilitation and Special Education Perspective. New Delhi: Rehabilitation Council of India.

5.Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. New Delhi: Government of India.

6.World Health Organization. (2019). World Report on Vision. Geneva: World Health Organization.

इकाई 6 कार्यात्मक दृष्टि आकलन:आवश्यकताएँ एवं रणनीतियाँ तथा दृश्य दक्षता प्रशिक्षण : अवधारणा एवं विधियाँ

6.1 प्रस्तावना

6.2 अधिगम के उद्देश्य

6.3 कार्यात्मक दृष्टि की अवधारणा

6.4 कार्यात्मक दृष्टि आकलन : अर्थ, स्वरूप एवं आवश्यकता

6.4.1 नैदानिक दृष्टि परीक्षण और कार्यात्मक दृष्टि आकलन में अंतर

6.4.2 कार्यात्मक दृष्टि आकलन के प्रमुख क्षेत्र

6.5 कार्यात्मक दृष्टि आकलन की आवश्यकताएँ

6.6 कार्यात्मक दृष्टि आकलन की प्रक्रिया एवं रणनीतियाँ

6.6.1 पृष्ठभूमि सूचना एवं केस-इतिहास

6.6.2 प्राकृतिक परिवेश में अवलोकन

6.6.3 संरचित कार्य एवं गतिविधि-आधारित आकलन

6.6.4 प्रकाश, कंट्रास्ट एवं दूरी का विश्लेषण

6.6.5 साक्षात्कार एवं बहु-विषयक सहयोग

6.7 कार्यात्मक दृष्टि आकलन के उपकरण एवं अभिलेखन

6.8 दृश्य दक्षता की अवधारणा

6.9 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्य

6.10 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के प्रमुख घटक

6.11 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की विधियाँ एवं रणनीतियाँ

6.11.1 दृश्य जागरूकता एवं ध्यान प्रशिक्षण

6.11.2 दृष्टि स्थिरता एवं अनुगमन प्रशिक्षण

6.11.3 दृश्य खोज एवं स्कैनिंग प्रशिक्षण

6.11.4 निकट एवं दूर दृष्टि कार्यों का प्रशिक्षण

6.11.5 आकृति, प्रतीक एवं वस्तु पहचान प्रशिक्षण

6.11.6 प्रकाश एवं कंट्रास्ट का उपयोग

6.11.7 ऑप्टिकल एवं नॉन-ऑप्टिकल उपकरणों का प्रशिक्षण

6.12 कक्षा एवं घर में दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का एकीकरण

6.13 विशेष शिक्षक एवं अन्य विशेषज्ञों की भूमिका

6.14 प्रगति का मूल्यांकन एवं अभिलेखन

6.15 नैतिक विचार एवं सावधानियाँ

6.16 निष्कर्ष

6.17 अभ्यास प्रश्न

6.18 संदर्भ

6.1 प्रस्तावना

दृष्टि व्यक्ति के अधिगम, संचार, गतिशीलता, सामाजिक सहभागिता तथा दैनिक जीवन की अनेक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से बच्चों के संदर्भ में दृश्य अनुभव उनके आसपास के वातावरण को समझने, वस्तुओं एवं व्यक्तियों की पहचान करने, शैक्षिक सामग्री तक पहुँच बनाने तथा विभिन्न कार्यों में स्वतंत्रता विकसित करने में सहायक होते हैं। दृष्टिबाधिता या कम दृष्टि की स्थिति में इन गतिविधियों का स्वरूप प्रभावित हो सकता है।केवल नेत्र चिकित्सकीय परीक्षण से यह पूर्ण रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता कि कोई बच्चा विद्यालय, घर या समुदाय में अपनी उपलब्ध दृष्टि का किस प्रकार उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे की दृष्टि तीक्ष्णता चिकित्सकीय परीक्षण में एक निश्चित स्तर की हो सकती है, लेकिन वही बच्चा कक्षा में दूर स्थित श्यामपट्ट की सामग्री पढ़ने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसी प्रकार, कोई विद्यार्थी पर्याप्त रोशनी में पुस्तक पढ़ सकता है, लेकिन कम प्रकाश, तेज चमक या कम कंट्रास्ट वाली सामग्री में उसका प्रदर्शन घट सकता है।इस प्रकार दृष्टि की चिकित्सकीय स्थिति और दृष्टि के वास्तविक जीवन में उपयोग के बीच अंतर हो सकता है। इस अंतर को समझने के लिए कार्यात्मक दृष्टि आकलन अत्यंत उपयोगी है।

कार्यात्मक दृष्टि आकलन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि विद्यार्थी अपनी उपलब्ध दृष्टि का उपयोग वास्तविक कार्यों और परिस्थितियों में किस प्रकार करता है। इसके माध्यम से उसकी दृश्य शक्तियों, कठिनाइयों, पर्यावरणीय आवश्यकताओं और शैक्षिक अनुकूलनों की पहचान की जा सकती है।

इसी आधार पर दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की योजना बनाई जाती है। दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का उद्देश्य दृष्टि को चिकित्सकीय रूप से बढ़ाने का दावा करना नहीं है, बल्कि उपलब्ध दृष्टि का अधिक प्रभावी, उद्देश्यपूर्ण और स्वतंत्र उपयोग विकसित करना है।

6.2 अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी:

1. कार्यात्मक दृष्टि की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।

2. कार्यात्मक दृष्टि आकलन के अर्थ, स्वरूप और आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।

9. नैदानिक दृष्टि परीक्षण तथा कार्यात्मक दृष्टि आकलन के बीच अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

4. कार्यात्मक दृष्टि आकलन के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे।

5. कार्यात्मक दृष्टि आकलन में प्रयुक्त विभिन्न प्रक्रियाओं एवं रणनीतियों का वर्णन कर सकेंगे।

6. प्राकृतिक परिवेश में दृष्टि के अवलोकन के महत्व को समझ सकेंगे।

7. प्रकाश, कंट्रास्ट, दूरी और वस्तु के आकार जैसे पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।

8. दृश्य दक्षता की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

9. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के उद्देश्यों और प्रमुख घटकों की व्याख्या कर सकेंगे।

10. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की विभिन्न विधियों को उदाहरण सहित समझा सकेंगे।

11. कक्षा और घर में दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के समाकलन की योजना बना सकेंगे।

12. विशेष शिक्षक तथा अन्य विशेषज्ञों की भूमिकाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

19. विद्यार्थी की प्रगति के मूल्यांकन और अभिलेखन की उपयुक्त विधियों का चयन कर सकेंगे।

14. कार्यात्मक दृष्टि आकलन तथा प्रशिक्षण में नैतिक सिद्धांतों और सावधानियों को लागू कर सकेंगे।

6.3 कार्यात्मक दृष्टि की अवधारणा

कार्यात्मक दृष्टि से आशय उस दृष्टि-क्षमता से है जिसका व्यक्ति वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में किसी उद्देश्यपूर्ण गतिविधि को पूरा करने के लिए उपयोग करता है। इसलिए कार्यात्मक दृष्टि केवल दृष्टि की तीक्ष्णता अथवा नेत्रों की चिकित्सकीय स्थिति तक सीमित अवधारणा नहीं है।

किसी विद्यार्थी के लिए कार्यात्मक दृष्टि का अर्थ यह हो सकता है कि वह पुस्तक पढ़ सके, शिक्षक को देख सके, बोर्ड पर लिखी सामग्री पहचान सके, कक्षा में अपना सामान खोज सके, सीढ़ियों या मार्ग में बाधाओं को पहचान सके अथवा खेल गतिविधियों में दृश्य संकेतों का उपयोग कर सके।

कार्यात्मक दृष्टि अनेक आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होती है। इनमें दृष्टि की मात्रा और गुणवत्ता, दृश्य क्षेत्र, प्रकाश, चमक, कंट्रास्ट, दूरी, वस्तु का आकार, वस्तु की गति, थकान, कार्य की जटिलता, वातावरण की परिचितता तथा विद्यार्थी की प्रेरणा प्रमुख हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई विद्यार्थी पुस्तक को सामान्य दूरी पर पढ़ने में कठिनाई अनुभव करता है, लेकिन पुस्तक को पास लाने पर स्पष्ट रूप से पढ़ लेता है, तो उसकी कार्यात्मक दृष्टि का उपयोग दूरी के अनुसार बदल रहा है। इसी प्रकार यदि कोई विद्यार्थी अलग-अलग रंगों की वस्तुओं को स्पष्ट रूप से पहचानता है, लेकिन समान रंग की पृष्ठभूमि में रखी वस्तु खोजने में कठिनाई करता है, तो कंट्रास्ट उसके दृश्य प्रदर्शन को प्रभावित कर रहा है।

इससे स्पष्ट होता है कि कार्यात्मक दृष्टि का आकलन व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच होने वाली दृश्य अंतःक्रिया को समझने की प्रक्रिया है।

6.4 कार्यात्मक दृष्टि आकलन : अर्थ, स्वरूप एवं आवश्यकता

कार्यात्मक दृष्टि आकलन एक व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि विद्यार्थी अपनी उपलब्ध दृष्टि का उपयोग दैनिक जीवन, शैक्षिक गतिविधियों, सामाजिक सहभागिता तथा गतिशीलता से संबंधित कार्यों में किस प्रकार करता है।

इस आकलन का केंद्रबिंदु यह प्रश्न होता है कि विद्यार्थी अपनी वर्तमान दृश्य क्षमता के आधार पर वास्तविक परिस्थितियों में क्या कर सकता है, किन परिस्थितियों में कठिनाई अनुभव करता है तथा किस प्रकार के अनुकूलन से उसके प्रदर्शन में सुधार हो सकता है।

कार्यात्मक दृष्टि आकलन के माध्यम से निम्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है:

1. विद्यार्थी किस दूरी पर सामग्री को अधिक स्पष्ट रूप से देखता है।

2. किस आकार की मुद्रित सामग्री उसके लिए अधिक उपयोगी है।

3. किस प्रकार का प्रकाश उसके प्रदर्शन को बेहतर बनाता है।

4. क्या तेज रोशनी अथवा चमक उसके प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

5. क्या उच्च कंट्रास्ट वाली सामग्री अधिक उपयोगी है।

6. क्या विद्यार्थी दृश्य क्षेत्र में उपस्थित वस्तुओं को आसानी से खोज पाता है।

7. क्या वह चलती वस्तुओं का अनुगमन कर सकता है।

8. क्या वह निकट तथा दूर दोनों प्रकार की सामग्री का प्रभावी उपयोग कर सकता है।

9. दृश्य कार्य करते समय उसे कितनी सहायता या अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार कार्यात्मक दृष्टि आकलन शैक्षिक योजना, कक्षा-अनुकूलन, सहायक उपकरणों के चयन तथा दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

6.4.1 नैदानिक दृष्टि परीक्षण और कार्यात्मक दृष्टि आकलन में अंतर

नैदानिक दृष्टि परीक्षण मुख्यतः नेत्र एवं दृष्टि तंत्र की चिकित्सकीय स्थिति और दृष्टि की मापनीय विशेषताओं का अध्ययन करता है। इसके विपरीत, कार्यात्मक दृष्टि आकलन यह समझने का प्रयास करता है कि उपलब्ध दृष्टि का वास्तविक कार्यों में किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है।

दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं

नैदानिक दृष्टि परीक्षण में दृष्टि तीक्ष्णता, अपवर्तन संबंधी स्थिति, दृश्य क्षेत्र तथा अन्य नेत्र संबंधी विशेषताओं का परीक्षण किया जा सकता है। इन परीक्षणों से चिकित्सकीय निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

कार्यात्मक दृष्टि आकलन में विद्यार्थी को वास्तविक या अनुकरणीय कार्यों में देखा जाता है। इसमें यह समझने का प्रयास किया जाता है कि वह पुस्तक, बोर्ड, चित्र, वस्तु, संकेत अथवा व्यक्ति को किस प्रकार देखता और पहचानता है।

इस अंतर को निम्न प्रकार समझा जा सकता है:

नैदानिक दृष्टि परीक्षण का प्रश्न है:\

“विद्यार्थी की दृष्टि की मापनीय स्थिति क्या है?”

कार्यात्मक दृष्टि आकलन का प्रश्न है:\

“विद्यार्थी अपनी उपलब्ध दृष्टि का वास्तविक जीवन में किस प्रकार उपयोग करता है?”

इसलिए दोनों प्रकार की सूचनाओं को एकीकृत करने से विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं का अधिक समग्र चित्र प्राप्त होता है।

6.4.2 कार्यात्मक दृष्टि आकलन के प्रमुख क्षेत्र

कार्यात्मक दृष्टि आकलन व्यापक प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत निम्न प्रमुख क्षेत्रों का अध्ययन किया जा सकता है:

1. निकट दृष्टि

पुस्तक, चित्र, लेखन सामग्री, मोबाइल अथवा कंप्यूटर स्क्रीन तथा छोटी वस्तुओं को देखने की क्षमता।

2. दूर दृष्टि

श्यामपट्ट, प्रोजेक्टर, संकेत-पट्ट, दूर स्थित व्यक्ति तथा अन्य वस्तुओं को पहचानने की क्षमता।

3. प्रकाश संबंधी आवश्यकता

विभिन्न प्रकाश स्तरों में विद्यार्थी के प्रदर्शन का अध्ययन।

4. चमक और ग्लेयर

चमकदार सतह, तेज प्रकाश या प्रकाश के सीधे स्रोत का विद्यार्थी के प्रदर्शन पर प्रभाव।

5. कंट्रास्ट

वस्तु और उसकी पृष्ठभूमि के बीच दृश्य अंतर का प्रभाव।

6. दृश्य ध्यान

किसी दृश्य लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने और उसे बनाए रखने की क्षमता।

7. दृष्टि स्थिरता

किसी लक्ष्य पर दृष्टि बनाए रखने की क्षमता।

8. दृश्य अनुगमन

चलती हुई वस्तु अथवा व्यक्ति को दृष्टि से अनुसरण करने की क्षमता।

9. दृश्य खोज

कई वस्तुओं अथवा दृश्य सूचनाओं में से आवश्यक लक्ष्य खोजने की क्षमता।

10. वस्तु, आकृति और प्रतीक पहचान

वास्तविक वस्तुओं, चित्रों, आकृतियों, अक्षरों, संख्याओं तथा प्रतीकों की पहचान।

11. दृश्य संगठन

एक पृष्ठ, कक्षा अथवा वातावरण में उपलब्ध अनेक दृश्य सूचनाओं को व्यवस्थित रूप से ग्रहण करने की क्षमता।

6.5 कार्यात्मक दृष्टि आकलन की आवश्यकताएँ

कार्यात्मक दृष्टि आकलन की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि आकलन किस प्रकार नियोजित और संचालित किया गया है। विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए आकलन करना आवश्यक है।

प्रमुख आवश्यकताएँ निम्न हैं:

1. विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण

प्रत्येक विद्यार्थी की दृष्टि संबंधी आवश्यकता अलग हो सकती है। इसलिए सभी विद्यार्थियों के लिए एक समान आकलन पद्धति उचित नहीं होती।

2. वास्तविक परिस्थितियों का समावेश

जहाँ संभव हो, विद्यार्थी का अवलोकन उसकी सामान्य कक्षा, घर तथा दैनिक गतिविधियों में किया जाना चाहिए।

3. पर्याप्त समय

विद्यार्थी को कार्य समझने, दृश्य लक्ष्य खोजने और प्रतिक्रिया देने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

4. थकान का नियंत्रण

लंबे समय तक दृश्य कार्य करने से प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। इसलिए आवश्यकता के अनुसार विश्राम दिया जाना चाहिए।

5. संचार आवश्यकताओं का ध्यान

यदि विद्यार्थी को अतिरिक्त संचार सहायता की आवश्यकता है, तो आकलन प्रक्रिया में उसका समुचित उपयोग किया जाना चाहिए।

6. बहु-स्रोत सूचना

विद्यार्थी, परिवार, सामान्य शिक्षक, विशेष शिक्षक तथा संबंधित विशेषज्ञों से प्राप्त जानकारी को एकीकृत करना अधिक उपयोगी होता है।

7. शक्तियों पर आधारित दृष्टिकोण

आकलन में केवल कठिनाइयों को दर्ज करने के बजाय उन परिस्थितियों की भी पहचान करनी चाहिए जिनमें विद्यार्थी सफलतापूर्वक कार्य करता है।

6.6 कार्यात्मक दृष्टि आकलन की प्रक्रिया एवं रणनीतियाँ

कार्यात्मक दृष्टि आकलन को चरणबद्ध प्रक्रिया के रूप में संचालित किया जा सकता है। प्रारंभ में विद्यार्थी की पृष्ठभूमि और दृष्टि संबंधी जानकारी एकत्र की जाती है। इसके बाद प्राकृतिक परिस्थितियों में उसका अवलोकन किया जाता है और आवश्यकतानुसार संरचित गतिविधियों का उपयोग किया जाता है।आकलन के दौरान पर्यावरणीय परिस्थितियों, जैसे प्रकाश, कंट्रास्ट और दूरी, को भी व्यवस्थित रूप से देखा जाता है। अंत में प्राप्त जानकारी को परिवार और विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ साझा करके शैक्षिक योजना विकसित की जाती है।

6.6.1 पृष्ठभूमि सूचना एवं केस-इतिहास

आकलन प्रारंभ करने से पहले विद्यार्थी की पृष्ठभूमि से संबंधित उपलब्ध जानकारी का अध्ययन करना आवश्यक है।

इसमें निम्न जानकारी उपयोगी हो सकती है:

1. दृष्टि संबंधी चिकित्सकीय इतिहास।

2. पूर्व में किए गए दृष्टि परीक्षणों की उपलब्ध जानकारी।

3. विद्यार्थी की वर्तमान शैक्षिक स्थिति।

4. परिवार द्वारा बताई गई दृश्य कठिनाइयाँ।

5. विद्यालय में दिखाई देने वाली कठिनाइयाँ।

6. वर्तमान में प्रयुक्त सहायक उपकरण।

7. विद्यार्थी की रुचियाँ और पसंदीदा गतिविधियाँ।

8. ऐसी परिस्थितियाँ जिनमें विद्यार्थी बेहतर या कमजोर प्रदर्शन करता है।

केस-इतिहास आकलनकर्ता को विद्यार्थी की वर्तमान आवश्यकताओं की पृष्ठभूमि समझने में सहायता करता है।

6.6.2 प्राकृतिक परिवेश में अवलोकन\

प्राकृतिक परिवेश में अवलोकन कार्यात्मक दृष्टि आकलन का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। इससे यह पता चलता है कि विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में अपनी दृष्टि का स्वतःस्फूर्त उपयोग किस प्रकार करता है। अवलोकन निम्न स्थानों पर किया जा सकता है:

1. कक्षा-कक्ष

2. पुस्तकालय

3. खेल का मैदान

4. विद्यालय का गलियारा

5. भोजन का समय

6. घर

7. विद्यालय परिसर

8. अन्य दैनिक जीवन की परिस्थितियाँ

अवलोकन के दौरान विद्यार्थी की मुद्रा, सामग्री रखने की दूरी, सिर की स्थिति, वस्तुओं को खोजने की रणनीति, प्रकाश की पसंद तथा दृश्य कार्य की अवधि जैसे व्यवहारों को ध्यानपूर्वक दर्ज किया जा सकता है।

6.6.3 संरचित कार्य एवं गतिविधि-आधारित आकलन

प्राकृतिक अवलोकन के साथ-साथ आवश्यकता के अनुसार संरचित गतिविधियाँ भी कराई जा सकती हैं।उदाहरण के लिए:

1. विभिन्न आकार की वस्तुओं की पहचान।

2. अलग-अलग दूरी पर रखी वस्तुओं को पहचानना।

3. किसी पृष्ठ पर निर्धारित अक्षर या शब्द खोजना।

4. चित्र में किसी विशेष वस्तु को पहचानना।

5. चलती हुई वस्तु का अनुसरण करना।

6. अलग-अलग कंट्रास्ट वाली सामग्री की पहचान करना।

7. विभिन्न प्रकाश स्थितियों में समान कार्य करना।

कार्य को विद्यार्थी की वर्तमान क्षमता के अनुसार प्रारंभ किया जाना चाहिए। सफलता मिलने पर धीरे-धीरे कार्य की जटिलता बढ़ाई जा सकती है।

6.6.4 प्रकाश, कंट्रास्ट एवं दूरी का विश्लेषण

दृश्य प्रदर्शन केवल विद्यार्थी की दृष्टि पर निर्भर नहीं करता। पर्यावरणीय परिस्थितियाँ भी उसके प्रदर्शन को पर्याप्त रूप से प्रभावित कर सकती हैं।आकलन में निम्न परिस्थितियों की तुलना की जा सकती है:

1. कम और पर्याप्त प्रकाश।

2. सीधा और अप्रत्यक्ष प्रकाश।

3. अलग-अलग दूरी।

4. बड़े और छोटे आकार की सामग्री।

5. उच्च और निम्न कंट्रास्ट।

6. चमकदार तथा कम चमक वाली सतह।

उदाहरण के लिए, कोई विद्यार्थी गहरे अक्षरों को हल्की पृष्ठभूमि पर आसानी से पढ़ सकता है, लेकिन समान रंगों के कम कंट्रास्ट वाले अक्षरों को पहचानने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

इस जानकारी के आधार पर शिक्षण सामग्री और पर्यावरण में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

6.6.5 साक्षात्कार एवं बहु-विषयक सहयोग

विद्यार्थी के कार्यात्मक दृष्टि उपयोग को समझने के लिए साक्षात्कार महत्वपूर्ण साधन है। विद्यार्थी की आयु और संचार क्षमता के अनुसार उससे स्वयं भी जानकारी प्राप्त की जानी चाहिए।

परिवार से निम्न प्रकार की जानकारी ली जा सकती है:

1. घर में विद्यार्थी किन वस्तुओं को आसानी से पहचानता है।

2. किन परिस्थितियों में उसे कठिनाई होती है।

3. क्या वह दैनिक कार्यों में किसी विशेष प्रकाश या दूरी को पसंद करता है।

4. क्या वह किसी विशेष उपकरण का उपयोग करता है।

सामान्य शिक्षक से कक्षा संबंधी जानकारी ली जा सकती है, जबकि विशेष शिक्षक प्राप्त जानकारी को शैक्षिक कार्यक्रम से जोड़ सकता है। आवश्यकतानुसार नेत्र विशेषज्ञ, ऑप्टोमेट्रिस्ट, पुनर्वास विशेषज्ञ, व्यावसायिक चिकित्सक तथा अन्य संबंधित विशेषज्ञों के साथ समन्वय किया जा सकता है।

6.7 कार्यात्मक दृष्टि आकलन के उपकरण एवं अभिलेखन

कार्यात्मक दृष्टि आकलन के लिए किसी एक उपकरण पर निर्भर रहना आवश्यक नहीं है। विभिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त उपकरणों और अभिलेखन प्रणालियों का चयन किया जा सकता है।

उपयोगी साधनों में निम्न शामिल हो सकते हैं:

1. अवलोकन प्रपत्र।

2. संरचित गतिविधि सूची।

3. साक्षात्कार अनुसूची।

4. कार्य-प्रदर्शन रिकॉर्ड।

5. विद्यार्थी के कार्य नमूने।

6. प्रगति चार्ट।

7. कक्षा-अवलोकन रिकॉर्ड।

अभिलेखन करते समय केवल "विद्यार्थी को कठिनाई है" जैसी सामान्य टिप्पणी पर्याप्त नहीं होती। कठिनाई की प्रकृति, परिस्थिति और उपयोगी अनुकूलन को स्पष्ट रूप से दर्ज करना अधिक उपयोगी है।

उदाहरण:

शक्ति:

विद्यार्थी उच्च कंट्रास्ट वाली सामग्री को निकट दूरी से स्पष्ट रूप से पहचानता है।

कठिनाई:

बहुत अधिक दृश्य सामग्री वाले पृष्ठ पर लक्ष्य सूचना खोजने में अतिरिक्त समय लेता है।

अनुकूलन:

स्पष्ट लेआउट, पर्याप्त रिक्त स्थान और उच्च कंट्रास्ट वाली सामग्री उपयोगी रहती है।

6.8 दृश्य दक्षता की अवधारणा

दृश्य दक्षता से आशय उपलब्ध दृष्टि को किसी उद्देश्यपूर्ण गतिविधि के लिए प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता से है।यह केवल "देख पाने" की क्षमता नहीं है। इसमें दृश्य सूचना को ग्रहण करना, उस पर ध्यान देना, लक्ष्य को स्थिर रूप से देखना, उसका अनुगमन करना, आवश्यक सूचना खोजना, पहचानना तथा प्राप्त सूचना का कार्य में उपयोग करना सम्मिलित है

दृश्य दक्षता के प्रमुख आयाम हैं:

1. दृश्य जागरूकता।

2. दृश्य ध्यान।

3. दृष्टि स्थिरता।

4. दृश्य अनुगमन।

5. दृश्य खोज।

6. व्यवस्थित स्कैनिंग।

7. वस्तु पहचान।

8. आकृति और प्रतीक पहचान।

9. निकट दृष्टि कार्य।

10. दूर दृष्टि कार्य।

11. दृश्य संगठन।

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का उद्देश्य इन कौशलों को विद्यार्थी की वास्तविक शैक्षिक और दैनिक गतिविधियों से जोड़ना है।

6.9 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्य

कम दृष्टि वाले अनेक विद्यार्थी अपनी उपलब्ध दृष्टि का स्वतः प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते। उन्हें उचित वातावरण, अभ्यास और रणनीतियों के माध्यम से अपनी दृश्य क्षमता का बेहतर उपयोग करना सिखाया जा सकता है।

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. दृश्य उद्दीपनों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

2. दृश्य ध्यान की अवधि और गुणवत्ता में सुधार करना।

3. किसी लक्ष्य पर दृष्टि बनाए रखने की क्षमता विकसित करना।

4. गतिशील वस्तुओं का दृश्य अनुगमन विकसित करना।

5. आवश्यक वस्तु या सूचना खोजने की क्षमता बढ़ाना।

6. व्यवस्थित स्कैनिंग की आदत विकसित करना।

7. आकृतियों, प्रतीकों और वस्तुओं की पहचान में दक्षता बढ़ाना।

8. पढ़ने और लिखने जैसे शैक्षिक कार्यों में उपलब्ध दृष्टि का प्रभावी उपयोग करना।

9. प्रकाश और कंट्रास्ट जैसी पर्यावरणीय परिस्थितियों का उपयुक्त उपयोग करना।

10. सहायक उपकरणों का कार्यात्मक उपयोग विकसित करना।

11. दैनिक जीवन में अधिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना।

6.10 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के प्रमुख घटक

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण को विभिन्न कौशलों में विभाजित करके व्यवस्थित रूप से संचालित किया जा सकता है।दृश्य जागरूकता में विद्यार्थी को आसपास उपस्थित दृश्य वस्तुओं की जानकारी प्राप्त करना सिखाया जाता है।

दृश्य ध्यान में किसी विशिष्ट दृश्य लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता विकसित की जाती है।

दृष्टि स्थिरता में लक्ष्य पर दृष्टि बनाए रखने का अभ्यास कराया जाता है।

दृश्य अनुगमन में चलती हुई वस्तु की गति को दृष्टि से अनुसरण करने का अभ्यास कराया जाता है।

दृश्य खोज में अनेक वस्तुओं या सूचनाओं में से निर्धारित लक्ष्य को पहचानना सिखाया जाता है।

स्कैनिंग में किसी पृष्ठ या वातावरण को व्यवस्थित तरीके से देखने की रणनीति विकसित की जाती है।

वस्तु और प्रतीक पहचान में वास्तविक वस्तुओं से लेकर चित्र, आकृति, अक्षर और संख्या जैसी दृश्य सूचनाओं को पहचानने का अभ्यास कराया जाता है।

6.11 दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की विधियाँ एवं रणनीतियाँ

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की योजना बनाते समय विद्यार्थी की वर्तमान क्षमता, दृष्टि संबंधी आवश्यकता, आयु, शैक्षिक स्तर तथा दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

प्रशिक्षण के लिए कुछ सामान्य सिद्धांत उपयोगी हैं:

1. सरल गतिविधि से शुरुआत करना।

2. धीरे-धीरे कठिनाई बढ़ाना।

3. परिचित और अर्थपूर्ण वस्तुओं का प्रयोग करना।

4. उच्च रुचि वाली गतिविधियों को शामिल करना।

5. सफलता के अवसर उपलब्ध कराना।

6. पर्याप्त अभ्यास प्रदान करना।

7. आवश्यकता के अनुसार पर्यावरणीय अनुकूलन करना।

8. सीखे हुए कौशल को वास्तविक जीवन में लागू कराना।

6.11.1 दृश्य जागरूकता एवं ध्यान प्रशिक्षण\

दृश्य दक्षता के विकास का प्रारंभ दृश्य जागरूकता से किया जा सकता है। विद्यार्थी को वातावरण में उपस्थित दृश्य वस्तुओं और परिवर्तनों की ओर ध्यान देना सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक विद्यार्थी को एक स्पष्ट और उच्च कंट्रास्ट वाली वस्तु दिखाकर उसकी ओर देखने के लिए प्रेरित कर सकता है। बाद में वस्तु की स्थिति, दूरी और आकार में क्रमिक परिवर्तन किया जा सकता है।

ध्यान प्रशिक्षण के लिए निम्न गतिविधियाँ उपयोगी हो सकती हैं:

1. पसंदीदा खिलौने को देखना।

2. परिचित वस्तु को पहचानना।

3. किसी चित्र में निर्धारित वस्तु ढूँढना।

4. शिक्षक द्वारा दिखाए गए लक्ष्य की ओर देखना।

5. दृश्य संकेत के आधार पर किसी वस्तु का चयन करना।

6.11.2 दृष्टि स्थिरता एवं अनुगमन प्रशिक्षण

दृष्टि स्थिरता का अर्थ किसी दृश्य लक्ष्य पर दृष्टि बनाए रखना है। यह कौशल पढ़ने, वस्तु पहचानने और अनेक शैक्षिक गतिविधियों में आवश्यक है। प्रशिक्षण में प्रारंभ में स्थिर वस्तु का उपयोग किया जा सकता है। विद्यार्थी के प्रदर्शन में सुधार होने पर गतिशील वस्तुओं को शामिल किया जा सकता है।अनुगमन प्रशिक्षण में वस्तु को धीरे-धीरे विभिन्न दिशाओं में ले जाकर विद्यार्थी को उसकी गति का अनुसरण करने का अवसर दिया जाता है। गतिविधियों को विद्यार्थी की दृष्टि क्षमता के अनुसार समायोजित करना आवश्यक है।

6.11.3 दृश्य खोज एवं स्कैनिंग प्रशिक्षण

दृश्य खोज का अर्थ किसी निर्धारित लक्ष्य को उपलब्ध दृश्य सामग्री में से ढूँढना है। यह कौशल कक्षा, पुस्तक, खेल तथा दैनिक जीवन में अत्यंत उपयोगी है। उदाहरण के लिए विद्यार्थी को कई वस्तुओं में से अपना पेंसिल बॉक्स खोजने के लिए कहा जा सकता है।स्कैनिंग में विद्यार्थी को किसी दृश्य क्षेत्र को व्यवस्थित तरीके से देखने की रणनीति सिखाई जाती है। पढ़ने के संदर्भ में बाएँ से दाएँ

या ऊपर से नीचे की दिशा में व्यवस्थित दृष्टि गति विकसित की जा सकती है, यदि यह विद्यार्थी की कार्यात्मक आवश्यकता के अनुकूल हो।

उपयोगी गतिविधियों में शामिल हैं:

1. पृष्ठ पर किसी शब्द को खोजना।

2. समान वस्तुओं में से अलग वस्तु ढूँढना।

3. चित्र में निर्धारित वस्तु पहचानना।

4. कक्षा में आवश्यक सामग्री खोजकर लाना।

5. डिजिटल स्क्रीन पर निर्धारित विकल्प ढूँढना।

6.11.4 निकट एवं दूर दृष्टि कार्यों का प्रशिक्षण

निकट दृष्टि से संबंधित कार्यों में पुस्तक पढ़ना, लिखना, चित्र देखना, छोटी वस्तु पहचानना और स्क्रीन का उपयोग करना शामिल हो सकता है। दूर दृष्टि से संबंधित कार्यों में श्यामपट्ट देखना, संकेत पढ़ना, दूर स्थित व्यक्ति की पहचान करना तथा कक्षा में दूर रखी वस्तु को देखना शामिल हो सकता है। प्रशिक्षण के दौरान सामग्री की दूरी, आकार, स्थिति और प्रकाश को विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है। कक्षा में विद्यार्थी के बैठने की स्थिति भी महत्वपूर्ण हो सकती है। उचित स्थान का चयन विद्यार्थी को अनावश्यक दृश्य प्रयास से बचा सकता है।

6.11.5 आकृति, प्रतीक एवं वस्तु पहचान प्रशिक्षण

वस्तु पहचान प्रशिक्षण को ठोस और परिचित वस्तुओं से प्रारंभ करना उपयोगी हो सकता है। धीरे-धीरे अधिक अमूर्त दृश्य सामग्री की ओर बढ़ा जा सकता है।एक संभावित शिक्षण क्रम है:

वास्तविक वस्तु → वस्तु का चित्र → सरल आकृति → प्रतीक → अक्षर या संख्या

उदाहरण के लिए पहले विद्यार्थी वास्तविक कप को पहचान सकता है, फिर उसके चित्र को, उसके बाद कप का सरल चित्रात्मक प्रतीक और अंततः संबंधित मुद्रित शब्द को पहचानने का अभ्यास कर सकता है।

इस प्रकार प्रशिक्षण वास्तविक अनुभव और शैक्षिक प्रतीकों के बीच संबंध विकसित करने में सहायता करता है।

6.11.6 प्रकाश एवं कंट्रास्ट का उपयोग

प्रकाश की आवश्यकता प्रत्येक विद्यार्थी में समान नहीं होती। कुछ विद्यार्थियों को पर्याप्त प्रकाश में बेहतर प्रदर्शन होता है, जबकि कुछ विद्यार्थियों को तेज प्रकाश या चमक से असुविधा हो सकती है। इसलिए प्रकाश व्यवस्था का निर्धारण व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के आधार पर किया जाना चाहिए। कंट्रास्ट भी दृश्य पहचान को प्रभावित कर सकता है। वस्तु और पृष्ठभूमि के बीच स्पष्ट दृश्य अंतर होने पर कुछ विद्यार्थियों के लिए पहचान सरल हो सकती है।

कक्षा में निम्न उपाय उपयोगी हो सकते हैं:

1. स्पष्ट कंट्रास्ट वाली शिक्षण सामग्री।

2. अनावश्यक चमक को कम करना।

3. प्रकाश के स्रोत की उचित स्थिति।

4. आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत कार्य-प्रकाश उपलब्ध कराना।

5. पृष्ठभूमि और वस्तु के बीच पर्याप्त दृश्य अंतर रखना।

6.11.7 ऑप्टिकल एवं नॉन-ऑप्टिकल उपकरणों का प्रशिक्षण

कुछ विद्यार्थियों को उनकी कार्यात्मक आवश्यकता के अनुसार सहायक उपकरण उपयोगी हो सकते हैं। इनका चयन विद्यार्थी की आवश्यकता तथा संबंधित विशेषज्ञ की सलाह के आधार पर किया जाना चाहिए। ऑप्टिकल साधनों में उपयुक्त आवर्धक तथा दूर की वस्तुओं को देखने में सहायता करने वाले उपकरण शामिल हो सकते हैं।

नॉन-ऑप्टिकल साधनों में निम्न प्रकार के अनुकूलन शामिल हो सकते हैं:

1. बड़े अक्षरों वाली सामग्री।

2. उपयुक्त कार्य-प्रकाश।

3. रीडिंग स्टैंड।

4. उच्च कंट्रास्ट सामग्री।

5. डिजिटल आवर्धन।

6. स्क्रीन पर आकार अथवा प्रदर्शन में आवश्यक परिवर्तन।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
केवल उपकरण उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थी को उसका सुरक्षित, स्वतंत्र और कार्यात्मक उपयोग भी सिखाना आवश्यक है।

6.12 कक्षा एवं घर में दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का एकीकरण

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण को अलग-थलग गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यदि सीखे गए कौशल को दैनिक जीवन में प्रयोग करने के अवसर नहीं मिलते, तो उनका सामान्यीकरण सीमित रह सकता है।

कक्षा में शिक्षक निम्न उपाय अपना सकते हैं:

1. विद्यार्थी की दृश्य आवश्यकताओं के अनुसार बैठने की व्यवस्था करना।

2. मुद्रित सामग्री को पर्याप्त आकार और स्पष्टता में उपलब्ध कराना।

3. बोर्ड की सामग्री तक पहुँच के लिए उपयुक्त व्यवस्था करना।

4. अनावश्यक दृश्य अव्यवस्था को कम करना।

5. खोज और स्कैनिंग से संबंधित गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल करना।

6. पर्याप्त समय उपलब्ध कराना।

घर में परिवार निम्न प्रकार सहयोग कर सकता है:

1. दैनिक वस्तुओं को व्यवस्थित और पहचानने योग्य स्थान पर रखना।

2. आवश्यकतानुसार पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध कराना।

3. विद्यार्थी को स्वयं वस्तु खोजने के अवसर देना।

4. भोजन, कपड़े, खेल और व्यक्तिगत देखभाल जैसी गतिविधियों में दृश्य कौशल का उपयोग करवाना।

5. विद्यालय में सीखी रणनीतियों का घर में भी उपयोग करना।

इस प्रकार विद्यालय और घर के बीच निरंतरता दृश्य कौशल के सामान्यीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6.13 विशेष शिक्षक एवं अन्य विशेषज्ञों की भूमिका

विशेष शिक्षक कार्यात्मक दृष्टि आकलन से प्राप्त जानकारी को शैक्षिक कार्यक्रम में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विशेष शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारियों में शामिल हैं:

1. विद्यार्थी की कार्यात्मक दृश्य आवश्यकताओं की पहचान करना।

2. उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों का चयन करना।

3. शिक्षण सामग्री और कक्षा वातावरण में आवश्यक अनुकूलन करना।

4. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की योजना बनाना।

5. विद्यार्थी की प्रगति का नियमित अभिलेखन करना।

6. सामान्य शिक्षक को आवश्यक मार्गदर्शन देना।

7. परिवार को घर पर अभ्यास के लिए उपयुक्त सुझाव देना।

8. संबंधित विशेषज्ञों के साथ समन्वय करना।

नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सकीय पक्ष की जानकारी प्रदान कर सकते हैं। ऑप्टोमेट्रिस्ट दृष्टि संबंधी मापन और उपयुक्त दृश्य साधनों के चयन में योगदान कर सकता है। अन्य पुनर्वास विशेषज्ञ विद्यार्थी की कार्यात्मक स्वतंत्रता और दैनिक जीवन संबंधी आवश्यकताओं के संदर्भ में योगदान कर सकते हैं।बहु-विषयक सहयोग का उद्देश्य विभिन्न विशेषज्ञताओं को एकीकृत करके विद्यार्थी के लिए अधिक प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रम विकसित करना है।

6.14 प्रगति का मूल्यांकन एवं अभिलेखन

दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की प्रभावशीलता जानने के लिए नियमित मूल्यांकन आवश्यक है। प्रशिक्षण प्रारंभ करने से पहले विद्यार्थी के प्रदर्शन की आधार-रेखा तैयार की जा सकती है।

प्रगति के निम्न संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है:

1. लक्ष्य वस्तु पहचानने में लगने वाला समय।

2. सही प्रतिक्रियाओं का अनुपात।

3. कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक सहायता का स्तर।

4. दृश्य कार्य में बने रहने की अवधि।

5. अलग-अलग प्रकाश और दूरी में प्रदर्शन।

6. सीखे गए कौशल का नई परिस्थितियों में उपयोग।

7. दैनिक जीवन की गतिविधियों में स्वतंत्रता।

अभिलेखन में दिनांक, गतिविधि, विद्यार्थी का प्रदर्शन, आवश्यक सहायता और भविष्य की योजना को स्पष्ट रूप से दर्ज करना उपयोगी है।उदाहरण:

गतिविधि

चित्र में निर्धारित वस्तु की पहचान

प्रारंभिक प्रदर्शन

विद्यार्थी को मौखिक संकेत की आवश्यकता थी।

प्रशिक्षण के बाद

विद्यार्थी ने कम संकेत के साथ लक्ष्य पहचान लिया।

अगला लक्ष्य

अधिक जटिल दृश्य पृष्ठभूमि में वस्तु पहचानने का अभ्यास।

इस प्रकार अभिलेखन प्रशिक्षण की निरंतरता और निर्णय लेने में सहायता करता है।

6.15 नैतिक विचार एवं सावधानियाँ

कार्यात्मक दृष्टि आकलन और दृश्य दक्षता प्रशिक्षण में विद्यार्थी की गरिमा, सुरक्षा और अधिकारों का सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

प्रमुख नैतिक विचार निम्न हैं:

1. विद्यार्थी की गरिमा और आत्मसम्मान बनाए रखना।

2. व्यक्तिगत एवं चिकित्सकीय जानकारी की गोपनीयता सुरक्षित रखना।

3. आकलन एवं प्रशिक्षण के लिए सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना।

4. विद्यार्थी को अनावश्यक थकान या दबाव में कार्य करने के लिए बाध्य न करना।

5. उसकी व्यक्तिगत गति और प्रतिक्रिया का सम्मान करना।

6. प्रशिक्षण को उसकी वास्तविक आवश्यकता के अनुरूप रखना।

7. ऐसी भाषा से बचना जो विद्यार्थी को कमजोर, अक्षम या निर्भर के रूप में प्रस्तुत करे।

8. परिवार और विद्यार्थी को आवश्यक जानकारी प्रदान करना।

9. चिकित्सकीय निष्कर्षों के संबंध में अपनी पेशेवर सीमा का सम्मान करना।

10. सहायक उपकरणों के संबंध में संबंधित विशेषज्ञ की सलाह को ध्यान में रखना।

विशेष शिक्षक को यह समझना चाहिए कि कार्यात्मक दृष्टि आकलन शैक्षिक निर्णयों के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह चिकित्सकीय निदान का विकल्प नहीं है।

6.16 निष्कर्ष

कार्यात्मक दृष्टि आकलन कम दृष्टि और दृष्टिबाधिता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह दृष्टि की केवल चिकित्सकीय माप आवश्यकताओं और उपयोगी अनुकूलनों की पहचान की जा सकती है। आकलन से प्राप्त जानकारी पर निर्भर न रहकर विद्यार्थी द्वारा वास्तविक परिस्थितियों में उपलब्ध दृष्टि के उपयोग का अध्ययन करता है। इस आकलन के माध्यम से विद्यार्थी की दृश्य शक्तियों, कठिनाइयों, पर्यावरणीय आवश्यकताओं और उपयोगी अनुकूलनों की पहचान की जा सकती है। आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर दृश्य दक्षता प्रशिक्षण को विद्यार्थी की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ा जा सकता है। दृश्य दक्षता प्रशिक्षण में दृश्य जागरूकता, ध्यान, स्थिरता, अनुगमन, खोज, स्कैनिंग, वस्तु पहचान, निकट एवं दूर दृष्टि कार्य तथा सहायक उपकरणों के उपयोग जैसे कौशल सम्मिलित हो सकते हैं।

प्रभावी प्रशिक्षण की विशेषता यह है कि वह विद्यार्थी-केंद्रित, गतिविधि-आधारित, क्रमिक, अर्थपूर्ण और वास्तविक जीवन से जुड़ा हो। विद्यालय, परिवार और संबंधित विशेषज्ञों के सहयोग से इन कौशलों को दैनिक जीवन में सामान्यीकृत किया जा सकता है।

अंततः कार्यात्मक दृष्टि आकलन और दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का व्यापक उद्देश्य विद्यार्थी को उसकी उपलब्ध दृष्टि का अधिक प्रभावी उपयोग करने, शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा अधिकतम संभव स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायता करना है।

6.17 अभ्यास प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्यात्मक दृष्टि की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख निर्धारक कारकों की व्याख्या कीजिए।

2. कार्यात्मक दृष्टि आकलन के अर्थ, उद्देश्य और शैक्षिक महत्व की विस्तार से चर्चा कीजिए।

3. नैदानिक दृष्टि परीक्षण और कार्यात्मक दृष्टि आकलन के बीच अंतर की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

4. कार्यात्मक दृष्टि आकलन की विभिन्न प्रक्रियाओं और रणनीतियों का क्रमबद्ध वर्णन कीजिए।

5. कार्यात्मक दृष्टि आकलन में प्राकृतिक अवलोकन, संरचित गतिविधि और साक्षात्कार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

6. दृश्य दक्षता की अवधारणा तथा इसके प्रमुख घटकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

7. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की आवश्यकता, उद्देश्य और प्रमुख सिद्धांतों की चर्चा कीजिए।

8. दृश्य खोज, स्कैनिंग, स्थिरता और अनुगमन के प्रशिक्षण की विभिन्न विधियों को उदाहरण सहित समझाइए।

9. कक्षा एवं घर में दृश्य दक्षता प्रशिक्षण के प्रभावी एकीकरण की योजना प्रस्तुत कीजिए।

10. कार्यात्मक दृष्टि आकलन और दृश्य दक्षता प्रशिक्षण में विशेष शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

11. कार्यात्मक दृष्टि आकलन में प्रकाश, दूरी, कंट्रास्ट और वस्तु के आकार के महत्व की चर्चा कीजिए।

12. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण में ऑप्टिकल एवं नॉन-ऑप्टिकल साधनों के उपयोग की विवेचना कीजिए।

13. दृश्य दक्षता प्रशिक्षण की प्रगति के मूल्यांकन एवं अभिलेखन की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

14. कार्यात्मक दृष्टि आकलन एवं प्रशिक्षण में नैतिक विचारों और सावधानियों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

6.18 संदर्भ

1. Corn, A. L. एवं Koenig, A. J. Foundations of Low Vision: Clinical and Functional Perspectives.

2. Holbrook, M. C. एवं Koenig, A. J. Foundations of Education for Blind and Visually Impaired Children and Youth.

3. World Health Organization. World Report on Vision.

4. Rehabilitation Council of India. विशेष शिक्षा एवं दिव्यांगता से संबंधित व्यावसायिक एवं शैक्षिक संसाधन।

5. National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities. दृष्टिबाधिता एवं कम दृष्टि से संबंधित शैक्षिक एवं पुनर्वास संसाधन।

6. UNESCO. समावेशी शिक्षा एवं दिव्यांगता संबंधी शैक्षिक संसाधन।

6.19 सारांश

कार्यात्मक दृष्टि व्यक्ति की उपलब्ध दृष्टि के वास्तविक जीवन में उपयोग से संबंधित है। कार्यात्मक दृष्टि आकलन के माध्यम से विद्यार्थी की दृश्य क्षमताओं, कठिनाइयों और पर्यावरणीय आवश्यकताओं की पहचान की जाती है। नैदानिक दृष्टि परीक्षण जहाँ दृष्टि की चिकित्सकीय स्थिति के बारे में जानकारी देता है, वहीं कार्यात्मक दृष्टि आकलन वास्तविक गतिविधियों में दृष्टि के उपयोग को समझने पर केंद्रित रहता है।दृश्य दक्षता प्रशिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी को उपलब्ध दृष्टि का अधिक प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण उपयोग करने में सक्षम बनाना है। इसमें दृश्य ध्यान, स्थिरता, अनुगमन, खोज, स्कैनिंग, वस्तु पहचान, निकट एवं दूर दृष्टि कार्य तथा सहायक साधनों का उपयोग शामिल हो सकता है।एक प्रभावी कार्यक्रम विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, प्राकृतिक परिवेश, परिवार एवं विद्यालय के सहयोग तथा नियमित प्रगति अभिलेखन पर आधारित होना चाहिए।

इकाई 7: विद्यालय स्तर पर अंधता एवं अल्पदृष्टि वाले बच्चों की स्क्रीनिंग एवं पहचान

Screening and Identification of Children with Blindness and Low Vision at School)

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 अंधता एवं अल्पदृष्टि का अर्थ

7.4 विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग एवं पहचान का महत्व

7.5 दृष्टिबाधिता के कारण

7.6 दृष्टिबाधिता के प्रारंभिक संकेत

7.7 स्क्रीनिंग का अर्थ एवं उद्देश्य

7.8 विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग की प्रक्रिया

7.9 पहचान (Identification) की प्रक्रिया

7.10 कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन (Functional Vision Assessment)

7.11 स्क्रीनिंग में शिक्षक की भूमिका

7.12 अभिभावकों की भूमिका

7.13 स्क्रीनिंग में प्रयुक्त उपकरण

7.14 प्रारंभिक पहचान के लाभ

7.15 स्क्रीनिंग एवं पहचान में आने वाली चुनौतियाँ

7.16 चुनौतियों के समाधान

7.17 सारांश

7.18 शब्दावली

7.19 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

7.20 संदर्भ ग्रंथ सूची

7.1 प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक बालक का मौलिक अधिकार है। समावेशी शिक्षा की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि प्रत्येक बालक, चाहे वह किसी भी प्रकार की दिव्यांगता से प्रभावित हो, उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। दृष्टिबाधिता (Visual Impairment) बच्चों की सीखने की प्रक्रिया, सामाजिक सहभागिता, संचार तथा शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है। यदि दृष्टि संबंधी समस्याओं की समय पर पहचान नहीं की जाती, तो बालक की शैक्षिक प्रगति, आत्मविश्वास तथा सामाजिक विकास बाधित हो सकता है।विद्यालय वह स्थान है जहाँ बच्चे अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय व्यतीत करते हैं। शिक्षक बच्चों के व्यवहार, सीखने की गति, पढ़ने-लिखने की क्षमता तथा कक्षा में सहभागिता का निरंतर अवलोकन करते हैं। इसलिए विद्यालय स्तर पर अंधता एवं अल्पदृष्टि की प्रारम्भिक स्क्रीनिंग और पहचान अत्यंत आवश्यक है।स्क्रीनिंग एक प्रारंभिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ऐसे बच्चों की पहचान की जाती है जिनमें दृष्टि संबंधी कठिनाइयों के संकेत दिखाई देते हैं। पहचान (Identification) की प्रक्रिया में इन संकेतों का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार विशेषज्ञों के पास रेफरल किया जाता है। समय पर स्क्रीनिंग एवं पहचान से उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेप, सहायक उपकरण, पुनर्वास सेवाएँ तथा समावेशी शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकती है।

इस इकाई में अंधता एवं अल्पदृष्टि की अवधारणा, विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग एवं पहचान की आवश्यकता, प्रक्रियाएँ, उपकरण, शिक्षक की भूमिका, चुनौतियाँ तथा समाधान का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

1. अंधता एवं अल्पदृष्टि की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2. विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग एवं पहचान के महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

3. दृष्टिबाधिता के प्रारंभिक संकेतों की पहचान कर सकेंगे।

4. स्क्रीनिंग की विभिन्न विधियों एवं उपकरणों का अध्ययन कर सकेंगे।

5. दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान में शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

6. स्क्रीनिंग एवं पहचान की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

7. रेफरल एवं मूल्यांकन प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।

8. समावेशी शिक्षा में प्रारंभिक पहचान की उपयोगिता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

7.3 अंधता एवं अल्पदृष्टि का अर्थ

7.9.1 अंधता (Blindness)

अंधता ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति की दृष्टि इतनी कम हो जाती है कि वह सामान्य दृश्य माध्यमों से कार्य नहीं कर सकता। ऐसे व्यक्ति को सीखने के लिए ब्रेल, श्रव्य सामग्री तथा स्पर्श आधारित साधनों की आवश्यकता होती है।

अंधता की विशेषताएँ

प्रकाश का अनुभव न होना या अत्यंत सीमित होना।

मुद्रित सामग्री पढ़ने में असमर्थता।

स्वतंत्र रूप से दृश्य सूचनाएँ प्राप्त करने में कठिनाई।

ब्रेल अथवा वैकल्पिक माध्यमों की आवश्यकता।

7.9.2 अल्पदृष्टि (Low Vision)

अल्पदृष्टि ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति की दृष्टि कम होती है, परंतु उपयुक्त उपचार, चश्मा, आवर्धक उपकरण या विशेष तकनीकों की सहायता से वह कुछ दृश्य कार्य कर सकता है।

अल्पदृष्टि की विशेषताएँ

पढ़ने में कठिनाई।

दूर की वस्तुएँ स्पष्ट न दिखाई देना।

प्रकाश के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता।

बड़े अक्षरों की आवश्यकता।

आवर्धक उपकरणों से लाभ प्राप्त होना।

7.4 विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग एवं पहचान का महत्व

विद्यालय में बच्चों की दृष्टि संबंधी समस्याओं की प्रारंभिक पहचान अनेक कारणों से आवश्यक है।

शैक्षिक दृष्टि से

सीखने में आने वाली कठिनाइयों का समाधान।

पढ़ने-लिखने की क्षमता में सुधार।

शैक्षिक उपलब्धियों में वृद्धि।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से

आत्मविश्वास में वृद्धि।

निराशा एवं हताशा में कमी।

सकारात्मक आत्म-अवधारणा का विकास।

सामाजिक दृष्टि से

सहपाठियों के साथ बेहतर सहभागिता।

सामाजिक समायोजन में सहायता।

समावेशी वातावरण का निर्माण।

पुनर्वास दृष्टि से

समय पर चिकित्सकीय हस्तक्षेप।

सहायक उपकरणों की उपलब्धता।

विशेष सेवाओं तक पहुँच।

7.5 दृष्टिबाधिता के कारण

दृष्टिबाधिता जन्मजात अथवा अर्जित हो सकती है।

जन्मजात कारण

आनुवंशिक विकार

गर्भावस्था में संक्रमण

समयपूर्व जन्म

जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी

जन्मजात मोतियाबिंद

अर्जित कारण

आँखों की चोट

विटामिन-A की कमी

संक्रमण

मोतियाबिंद

ग्लूकोमा

रेटिना संबंधी विकार

7.6 दृष्टिबाधिता के प्रारंभिक संकेत

विद्यालय में शिक्षक निम्न संकेतों के आधार पर संभावित दृष्टिबाधिता की पहचान कर सकते हैं।

शारीरिक संकेत

आँखों का लाल होना।

अत्यधिक पानी आना।

आँखों को बार-बार मलना।

आँखों का भटकना (Squint)।

सिर को एक ओर झुकाकर देखना।

व्यवहारिक संकेत

पुस्तक को बहुत पास लाकर पढ़ना।

ब्लैकबोर्ड देखने में कठिनाई।

बार-बार ठोकर खाना।

वस्तुओं से टकराना।

पढ़ने से बचने का प्रयास करना।

शैक्षणिक संकेत

लिखने में त्रुटियाँ।

पढ़ने की धीमी गति।

अक्षरों की पहचान में कठिनाई।

कक्षा कार्य पूरा करने में अधिक समय लगना।

सामाजिक संकेत

खेल गतिविधियों में कम भागीदारी।

आत्मविश्वास की कमी।

समूह गतिविधियों से बचना।

7.7 स्क्रीनिंग का अर्थ एवं उद्देश्य

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

स्क्रीनिंग एक प्रारंभिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य उन बच्चों की पहचान करना है जिनमें दृष्टि संबंधी समस्या होने की संभावना हो।

स्क्रीनिंग के उद्देश्य

1. दृष्टि दोष के जोखिम वाले बच्चों की पहचान।

2. समय पर चिकित्सकीय परामर्श।

9. शैक्षिक सहायता की योजना बनाना।

4. गंभीर दृष्टिबाधिता को रोकना।

5. समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाना।

7.8 विद्यालय स्तर पर स्क्रीनिंग की प्रक्रिया

चरण 1 : प्रारंभिक अवलोकन

शिक्षक बच्चों के व्यवहार, पढ़ने-लिखने की शैली तथा कक्षा सहभागिता का अवलोकन करते हैं।

अवलोकन के बिंदु

ब्लैकबोर्ड देखने की क्षमता

पढ़ने की दूरी

प्रकाश की आवश्यकता

लिखने का तरीका

कक्षा में चलने-फिरने की क्षमता

चरण 2 : अभिभावकों से जानकारी

अभिभावकों से निम्न जानकारी प्राप्त की जाती है—

जन्म संबंधी इतिहास

पारिवारिक दृष्टि समस्याएँ

पूर्व चिकित्सा इतिहास

चश्मे का उपयोग

आँखों की सर्जरी का इतिहास

चरण 3 : दृष्टि परीक्षण (Vision Screening)

विद्यालय स्तर पर सरल दृष्टि परीक्षण किए जाते हैं।

स्नेलन चार्ट (Snellen Chart)

यह दूर दृष्टि परीक्षण का सबसे सामान्य उपकरण है।

E-Chart

छोटे बच्चों एवं निरक्षर व्यक्तियों के लिए उपयोगी।

चित्र चार्ट (Picture Chart)

पूर्व-प्राथमिक एवं प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयुक्त।

निकट दृष्टि चार्ट

निकट दूरी से पढ़ने की क्षमता का मूल्यांकन।

चरण 4 : रिकॉर्डिंग

स्क्रीनिंग के परिणामों को व्यवस्थित रूप से दर्ज किया जाता है।

रिकॉर्ड में शामिल बिंदु

छात्र का नाम

आयु

कक्षा

दृष्टि परीक्षण परिणाम

अवलोकन टिप्पणियाँ

रेफरल की आवश्यकता

चरण 5 : रेफरल

संदिग्ध मामलों को नेत्र विशेषज्ञ, नेत्र चिकित्सक या दृष्टिबाधिता विशेषज्ञ के पास भेजा जाता है।

7.9 पहचान (Identification) की प्रक्रिया

पहचान स्क्रीनिंग से अधिक विस्तृत प्रक्रिया है।

पहचान के चरण

1. प्रारंभिक स्क्रीनिंग

2. विस्तृत दृष्टि परीक्षण

9. कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन

4. चिकित्सा निदान

5. शैक्षिक मूल्यांकन

6. पुनर्वास आवश्यकताओं का निर्धारण

7.10 कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन (Functional Vision Assessment)

यह मूल्यांकन इस बात का अध्ययन करता है कि बच्चा अपनी उपलब्ध दृष्टि का दैनिक जीवन एवं शिक्षा में किस प्रकार उपयोग करता है।

मूल्यांकन के क्षेत्र

पढ़ना

लिखना

गतिशीलता

रंग पहचान

प्रकाश संवेदनशीलता

दूरी पहचान

महत्व

उपयुक्त शिक्षण रणनीति चयन

सहायक उपकरण निर्धारण

व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) निर्माण

7.11 स्क्रीनिंग में शिक्षक की भूमिका

विद्यालय स्तर पर शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षक के दायित्व

बच्चों का नियमित अवलोकन

प्रारंभिक संकेतों की पहचान

अभिभावकों को जागरूक करना

रिकॉर्ड बनाए रखना

रेफरल प्रक्रिया में सहयोग

समावेशी कक्षा वातावरण तैयार करना

शिक्षक में अपेक्षित कौशल

अवलोकन कौशल

संवेदनशीलता

संवाद कौशल

दस्तावेजीकरण क्षमता

समावेशी शिक्षण कौशल

7.12 अभिभावकों की भूमिका

बच्चे की दृष्टि संबंधी समस्याओं की जानकारी देना।

नियमित नेत्र परीक्षण करवाना।

चिकित्सकीय सलाह का पालन करना।

सहायक उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।

विद्यालय के साथ सहयोग बनाए रखना।

7.13 स्क्रीनिंग में प्रयुक्त उपकरण

पारंपरिक उपकरण

स्नेलन चार्ट

E चार्ट

चित्र चार्ट

निकट दृष्टि कार्ड

आधुनिक उपकरण

डिजिटल विज़न स्क्रीनर

कंप्यूटर आधारित स्क्रीनिंग प्रणाली

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

मोबाइल एप्लीकेशन आधारित स्क्रीनिंग

फोटो स्क्रीनिंग उपकरण

7.14 प्रारंभिक पहचान के लाभ

1. दृष्टि हानि की गंभीरता कम की जा सकती है।

2. शैक्षिक पिछड़ापन रोका जा सकता है।

3. उपयुक्त सहायक उपकरण समय पर उपलब्ध हो सकते हैं।

4. समावेशी शिक्षा को सफल बनाया जा सकता है।

5. सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में सहायता मिलती है।

6. स्वतंत्र जीवन कौशल विकसित होते हैं।

7.15 स्क्रीनिंग एवं पहचान में आने वाली चुनौतियाँ

विद्यालय स्तर की चुनौतियाँ

प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव

उपकरणों की कमी

समय की कमी

परिवार स्तर की चुनौतियाँ

जागरूकता का अभाव

आर्थिक कठिनाइयाँ

सामाजिक कलंक

प्रशासनिक चुनौतियाँ

विशेषज्ञ सेवाओं की कमी

रेफरल व्यवस्था का अभाव

संसाधनों की अपर्याप्तता

7.16 चुनौतियों के समाधान

शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण।

विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रमों का सुदृढ़ीकरण।

अभिभावक जागरूकता अभियान।

स्वास्थ्य एवं शिक्षा विभागों के बीच समन्वय।

नियमित नेत्र परीक्षण शिविर।

सहायक उपकरणों की उपलब्धता।

7.17 सारांश

विद्यालय स्तर पर अंधता एवं अल्पदृष्टि वाले बच्चों की स्क्रीनिंग एवं पहचान समावेशी शिक्षा की आधारशिला है। समय पर पहचान से बच्चों को आवश्यक शैक्षिक, चिकित्सकीय एवं पुनर्वास सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं। शिक्षक, अभिभावक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ तथा विद्यालय प्रशासन मिलकर इस प्रक्रिया को प्रभावी बना सकते हैं। प्रारंभिक स्क्रीनिंग एवं पहचान न केवल शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार करती है बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन की गुणवत्ता को भी बढ़ाती है।

7.18 शब्दावली

अंधता (Blindness) – दृष्टि का अत्यधिक या पूर्ण अभाव।

अल्पदृष्टि (Low Vision) – कम दृष्टि जो सहायक साधनों से उपयोगी हो सकती है।

स्क्रीनिंग– संभावित समस्या की प्रारंभिक जाँच प्रक्रिया।

पहचान (Identification) – विस्तृत मूल्यांकन द्वारा समस्या की पुष्टि।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन – उपलब्ध दृष्टि के उपयोग का आकलन।

रेफरल – विशेषज्ञ सेवाओं के लिए भेजना।

7.19 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. विद्यालय स्तर पर अंधता एवं अल्पदृष्टि की स्क्रीनिंग प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन कीजिए।

2. दृष्टिबाधिता के प्रारंभिक संकेतों की व्याख्या कीजिए।

3. स्क्रीनिंग एवं पहचान में शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

4. कार्यात्मक दृष्टि मूल्यांकन के महत्व की चर्चा कीजिए।

5. प्रारंभिक पहचान के शैक्षिक एवं सामाजिक लाभों का वर्णन कीजिए।

7.20 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Rehabilitation Council of India – Visual Impairment Teacher Education Material.

2. National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities Publications.

3. World Health Organization – Vision Screening Guidelines.

4. NCERT – Inclusive Education Modules.

5. RPwD Act, 2016.

6. MHRD/Ministry of Education – Samagra Shiksha Guidelines.

इकाई–8 दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

(Methods and Tools for Psychological Assessment and Clinical Assessment of Children with Visual Impairment)

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा

8.4 नैदानिक मूल्यांकन की अवधारणा

8.5 दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन की आवश्यकता

8.6 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

8.7 नैदानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

8.8 मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँ

8.9 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के प्रमुख उपकरण

8.10 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए परीक्षणों का अनुकूलन

8.11 दृश्य-निर्भरता एवं मूल्यांकन संबंधी समस्याएँ

8.12 बहु-स्रोत एवं बहु-विधि मूल्यांकन

8.13 विशेष शिक्षक की भूमिका

8.14 परिवार की भूमिका

8.15 मूल्यांकन में नैतिक सावधानियाँ

8.16 मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या

8.17 समग्र एवं कार्यात्मक मूल्यांकन का महत्व

8.18 मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन में अंतर

8.19 मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रमुख चरण

8.20 मूल्यांकन में आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ

8.21 दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में कार्यात्मक दृष्टिकोण

8.22 सारांश

8.23 अभ्यास प्रश्न

8.24 प्रमुख शब्दावली

8.25 संदर्भ

8.1 प्रस्तावना

बाल विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शारीरिक, संवेदी, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यवहारात्मक विकास शामिल होते हैं। दृष्टिबाधित बच्चों के विकास को समझने के लिए केवल उनकी दृष्टि की स्थिति का आकलन करना पर्याप्त नहीं है। उनकी सीखने की क्षमता, संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली, भाषा एवं संचार, सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक समायोजन, अनुकूलनात्मक व्यवहार तथा दैनिक जीवन में कार्य करने की क्षमता को भी समझना आवश्यक है।

मूल्यांकन विशेष शिक्षा की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसके माध्यम से बच्चे की क्षमताओं, आवश्यकताओं, कठिनाइयों और उपलब्ध संसाधनों की पहचान की जाती है। दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है, क्योंकि अनेक सामान्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण दृश्य उत्तेजनाओं, चित्रों, लिखित सामग्री अथवा दृश्य प्रतिक्रिया पर आधारित होते हैं। यदि ऐसे परीक्षणों को बिना आवश्यक अनुकूलन के प्रयोग किया जाए, तो प्राप्त परिणाम बच्चे की वास्तविक क्षमता को प्रदर्शित नहीं कर सकते।

दृष्टिबाधित बच्चे के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में उसकी दृष्टि की स्थिति, आयु, विकासात्मक स्तर, भाषा, अनुभव, शैक्षिक पृष्ठभूमि और उपयोग किए जाने वाले संचार माध्यम को ध्यान में रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, किसी ऐसे परीक्षण में जिसमें चित्र पहचानने, आकृति मिलाने या लिखित उत्तर देने की आवश्यकता होती है, दृष्टिबाधित बच्चे को वैकल्पिक स्पर्शनीय, मौखिक या श्रवण आधारित सामग्री की आवश्यकता हो सकती है।

नैदानिक मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चे की स्वास्थ्य एवं विकास संबंधी स्थिति को समझना तथा आवश्यकता पड़ने पर संबंधित विशेषज्ञों तक पहुँच बनाना है। इसमें चिकित्सकीय इतिहास, नेत्र संबंधी परीक्षण, विकासात्मक इतिहास, व्यवहार संबंधी जानकारी और अन्य आवश्यक नैदानिक सूचनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। नैदानिक मूल्यांकन और मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन को अलग-अलग देखने के बजाय बच्चे की समग्र आवश्यकताओं को समझने के लिए परस्पर पूरक रूप में देखना अधिक उपयोगी है।

इस इकाई में दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन की अवधारणा, उद्देश्य, प्रमुख क्षेत्र, विधियाँ, उपकरण, परीक्षणों के चयन के सिद्धांत, आवश्यक अनुकूलन तथा शिक्षक एवं विशेषज्ञों की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी—

1.मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2.नैदानिक मूल्यांकन के अर्थ एवं महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।

3.दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

4.मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे।

5.नैदानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे।

6.मूल्यांकन की प्रमुख विधियों जैसे अवलोकन, साक्षात्कार और केस हिस्ट्री को समझ सकेंगे।

7.मनोवैज्ञानिक परीक्षणों एवं अन्य मूल्यांकन उपकरणों के उपयोग को समझ सकेंगे।

8.दृष्टिबाधित बच्चों के लिए परीक्षणों के चयन के प्रमुख सिद्धांतों को समझ सकेंगे।

9.दृश्य-आधारित परीक्षणों की सीमाओं को पहचान सकेंगे।

10.मूल्यांकन में मौखिक, स्पर्शनीय और श्रवण आधारित अनुकूलनों की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

11.दृष्टिबाधित बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक एवं अनुकूलनात्मक व्यवहार के मूल्यांकन को समझ सकेंगे।

12.नैदानिक मूल्यांकन में नेत्र विशेषज्ञ तथा अन्य विशेषज्ञों की भूमिका समझ सकेंगे।

13.मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या करते समय सावधानियों को समझ सकेंगे।

14.मूल्यांकन में बच्चे, परिवार और शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।

15.समग्र एवं बाल-केंद्रित मूल्यांकन के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।

8.3 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति की संज्ञानात्मक, भावनात्मक, व्यवहारात्मक, सामाजिक तथा अन्य मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के बारे में जानकारी एकत्र की जाती है। इसमें विभिन्न विधियों और उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

दृष्टिबाधित बच्चों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह निर्धारित करना नहीं है कि बच्चा किसी कार्य में सफल है या नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि वह कार्य किस प्रकार करता है, उसे किन परिस्थितियों में कठिनाई होती है और किस प्रकार की सहायता उसके प्रदर्शन को बेहतर बना सकती है।

मूल्यांकन में बच्चे के पूर्व अनुभव को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। दृष्टिबाधित बच्चे को किसी ऐसी दृश्य सामग्री का अनुभव कम हो सकता है जिसका सामान्य दृष्टि वाले बच्चों को व्यापक अनुभव रहा हो। इसलिए किसी परीक्षण में कम प्रदर्शन को सीधे कम बौद्धिक क्षमता का संकेत नहीं माना जाना चाहिए।

8.4 नैदानिक मूल्यांकन की अवधारणा

नैदानिक मूल्यांकन का संबंध बच्चे की स्वास्थ्य, विकासात्मक तथा संबंधित चिकित्सकीय स्थिति की व्यवस्थित जानकारी प्राप्त करने से है। दृष्टिबाधित बच्चों में नैदानिक मूल्यांकन के माध्यम से दृष्टि

संबंधी स्थिति, उसके कारण, विकास पर संभावित प्रभाव तथा आवश्यक चिकित्सकीय या पुनर्वास सेवाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

नैदानिक मूल्यांकन में आवश्यकता के अनुसार निम्न प्रकार की जानकारी शामिल हो सकती है—

जन्म एवं प्रसव संबंधी इतिहास

विकासात्मक इतिहास

चिकित्सकीय इतिहास

दृष्टि संबंधी इतिहास

नेत्र परीक्षण की जानकारी

वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति

दवाओं अथवा उपचार संबंधी जानकारी

अन्य सहवर्ती स्थितियों की जानकारी

बच्चे की कार्यात्मक कठिनाइयाँ

परिवार द्वारा बताई गई स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी जानकारी

नैदानिक मूल्यांकन का उद्देश्य केवल किसी स्थिति का नाम निर्धारित करना नहीं है। प्राप्त जानकारी का उपयोग बच्चे की शिक्षा, पुनर्वास, सहायक तकनीक तथा अन्य आवश्यक सेवाओं की योजना बनाने में भी किया जा सकता है।

8.5 दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन की आवश्यकता

दृष्टिबाधित बच्चों का समुचित मूल्यांकन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है—

8.5.1 क्षमताओं की पहचान

मूल्यांकन से बच्चे की वर्तमान क्षमताओं तथा उन क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है जिनमें वह अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकता है।

8.5.2 शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

मूल्यांकन से यह समझने में सहायता मिलती है कि बच्चे को ब्रेल, बड़े अक्षरों, ऑडियो, डिजिटल सामग्री, आवर्धक उपकरण अथवा अन्य अनुकूलन की आवश्यकता है या नहीं।

8.5.3 व्यक्तिगत शैक्षिक योजना

मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चे के लिए उपयुक्त शिक्षण उद्देश्यों और रणनीतियों का निर्धारण किया जा सकता है।

8.5.4 सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान

कुछ बच्चों को सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा या भावनात्मक समायोजन के क्षेत्र में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

8.5.5 पुनर्वास एवं सहायक सेवाएँ

मूल्यांकन से यह निर्धारित करने में सहायता मिल सकती है कि बच्चे को किस प्रकार की पुनर्वास सेवाओं, सहायक उपकरणों या विशेषज्ञ सहायता की आवश्यकता है।

8.6 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में निम्न प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान दिया जा सकता है—

8.6.1 संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली

संज्ञानात्मक मूल्यांकन में तर्क, समस्या-समाधान, स्मृति, ध्यान, अवधारणा निर्माण तथा अन्य मानसिक प्रक्रियाओं से संबंधित क्षमताओं का अध्ययन किया जा सकता है।

दृष्टिबाधित बच्चे के संज्ञानात्मक मूल्यांकन में ऐसे कार्यों का प्रयोग सावधानी से किया जाना चाहिए जिनमें दृश्य अनुभव पर अत्यधिक निर्भरता हो। जहाँ आवश्यक हो, मौखिक या स्पर्शनीय विकल्प उपलब्ध कराए जा सकते हैं।

8.6.2 भाषा एवं संचार

भाषा का मूल्यांकन बच्चे की समझ, अभिव्यक्ति, शब्दावली, वाक्य निर्माण तथा संचार कौशल को समझने में सहायता करता है।

दृष्टिबाधित बच्चों के संदर्भ में यह भी देखना आवश्यक है कि बच्चा अपनी आवश्यकताओं, भावनाओं और अनुभवों को किस प्रकार व्यक्त करता है।

8.6.3 स्मृति एवं ध्यान

ध्यान और स्मृति सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्यांकन में यह देखा जा सकता है कि बच्चा मौखिक, श्रवण या स्पर्शनीय सूचना को कितनी देर तक ध्यानपूर्वक ग्रहण कर सकता है और बाद में उसका उपयोग कैसे करता है।

8.6.4 सामाजिक-भावनात्मक विकास

इस क्षेत्र में बच्चे की आत्म-अवधारणा, आत्मविश्वास, सामाजिक संबंध, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है।

8.6.5 अनुकूलनात्मक व्यवहार

अनुकूलनात्मक व्यवहार से आशय दैनिक जीवन में आवश्यक कार्यों को करने की क्षमता से है। इसमें व्यक्तिगत देखभाल, संचार, गतिशीलता, सामाजिक व्यवहार तथा दैनिक जीवन के कार्य शामिल हो सकते हैं।

8.6.6 व्यक्तित्व एवं व्यवहार

जहाँ आवश्यक हो, बच्चे के व्यवहार, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तथा व्यक्तित्व से संबंधित जानकारी भी एकत्र की जा सकती है। ऐसे मूल्यांकन में बच्चे की आयु, विकासात्मक स्तर और दृष्टि संबंधी अनुभवों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

8.7 नैदानिक मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र

नैदानिक मूल्यांकन में बच्चे की स्वास्थ्य एवं दृष्टि संबंधी स्थिति को व्यापक रूप से समझने का प्रयास किया जाता है।

8.7.1 नेत्र संबंधी मूल्यांकन

नेत्र विशेषज्ञ द्वारा दृष्टि संबंधी स्थिति का मूल्यांकन किया जा सकता है। इसमें दृष्टि की तीक्ष्णता, दृष्टि-क्षेत्र, नेत्र की संरचना तथा अन्य आवश्यक नेत्र संबंधी पहलुओं की जाँच शामिल हो सकती है।

8.7.2 चिकित्सकीय इतिहास

बच्चे के जन्म, बीमारी, चोट, उपचार तथा पूर्व चिकित्सकीय स्थितियों से संबंधित जानकारी महत्वपूर्ण हो सकती है।

8.7.3 विकासात्मक मूल्यांकन

बच्चे के मोटर, भाषा, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा अन्य विकासात्मक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

8.7.4 कार्यात्मक दृष्टि

चिकित्सकीय रिपोर्ट के साथ यह देखना भी आवश्यक है कि बच्चा अपनी उपलब्ध दृष्टि का वास्तविक जीवन में किस प्रकार उपयोग करता है। आपके स्रोत में कार्यात्मक दृष्टि को केवल दृष्टि की मात्रा के बजाय दैनिक जीवन और सीखने के कार्यों में उपलब्ध दृष्टि के उपयोग से जोड़ा गया है।

8.7.5 सहवर्ती स्थितियों का मूल्यांकन

यदि बच्चे में अन्य विकासात्मक, शारीरिक, संचारात्मक या व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ दिखाई देती हैं, तो संबंधित विशेषज्ञों से अतिरिक्त मूल्यांकन कराया जा सकता है।

8.8 मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँ

दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में एक ही विधि पर निर्भर रहने के बजाय विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करना अधिक उपयोगी होता है।

8.8.1 अवलोकन विधि

अवलोकन एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन विधि है। इसमें बच्चे के व्यवहार और कार्य-निष्पादन का वास्तविक परिस्थितियों में अध्ययन किया जाता है।

शिक्षक निम्न बातों का अवलोकन कर सकता है—

बच्चा निर्देशों का पालन कैसे करता है?

वह शिक्षण सामग्री का उपयोग कैसे करता है?

वह दूसरों के साथ किस प्रकार बातचीत करता है?

वह कक्षा में कैसे गतिशील होता है?

वह अपनी उपलब्ध दृष्टि का उपयोग किस प्रकार करता है?

उसे किन परिस्थितियों में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है?

आपके स्रोत में भी अवलोकन को प्राकृतिक वातावरण में बच्चे के व्यवहार, कार्य-निष्पादन और दैनिक गतिविधियों को समझने की विधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

8.8.2 साक्षात्कार विधि

साक्षात्कार के माध्यम से माता-पिता, शिक्षक, बच्चे तथा अन्य विशेषज्ञों से आवश्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अभिभावकों से बच्चे के विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और दैनिक जीवन से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। शिक्षक से शैक्षिक प्रदर्शन और कक्षा व्यवहार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

8.8.3 केस हिस्ट्री

केस हिस्ट्री बच्चे के चिकित्सकीय, विकासात्मक, पारिवारिक तथा शैक्षिक इतिहास को समझने की व्यवस्थित प्रक्रिया है।

इसमें निम्न जानकारी शामिल हो सकती है—

- जन्म का इतिहास
- दृष्टि संबंधी इतिहास
- चिकित्सकीय इतिहास
- विकासात्मक उपलब्धियाँ
- पूर्व शिक्षा
- पारिवारिक पृष्ठभूमि
- वर्तमान शैक्षिक स्थिति
- उपलब्ध सेवाएँ
- सहायक उपकरणों का उपयोग

8.8.4 चेकलिस्ट

चेकलिस्ट के माध्यम से किसी विशेष कौशल या व्यवहार की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति को व्यवस्थित रूप से दर्ज किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, दैनिक जीवन कौशल की चेकलिस्ट में कपड़े पहनना, भोजन करना, व्यक्तिगत स्वच्छता, वस्तुओं को व्यवस्थित करना और सरल घरेलू कार्यों से संबंधित कौशल शामिल किए जा सकते हैं।

8.8.5 रेटिंग स्केल

रेटिंग स्केल के माध्यम से किसी व्यवहार या कौशल की आवृत्ति, स्तर या गुणवत्ता का व्यवस्थित आकलन किया जा सकता है।

8.8.6 कार्य-आधारित मूल्यांकन

इसमें बच्चे को वास्तविक कार्य करने के लिए दिया जाता है और उसके प्रदर्शन का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे को पुस्तक व्यवस्थित करना, किसी वस्तु को पहचानना या दैनिक जीवन से संबंधित कोई कार्य करने के लिए कहा जा सकता है।

8.8.7 प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन

इसमें बच्चे की वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता पर ध्यान दिया जाता है। यह विशेष रूप से कार्यात्मक कौशल और दैनिक जीवन की स्वतंत्रता को समझने में उपयोगी हो सकता है।

8.9 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के उपकरण

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। उपकरण का चयन बच्चे की आयु, भाषा, दृष्टि की स्थिति, विकासात्मक स्तर और परीक्षण के उद्देश्य के आधार पर किया जाना चाहिए।

8.9.1 बुद्धि एवं संज्ञानात्मक परीक्षण

इनका उपयोग संज्ञानात्मक क्षमताओं, तर्क, समस्या-समाधान, स्मृति तथा अन्य मानसिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए किया जा सकता है।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ऐसे परीक्षणों का चयन आवश्यक है जिनमें अनावश्यक दृश्य निर्भरता कम हो या जिनके उपयुक्त अनुकूलित रूप उपलब्ध हों।

8.9.2 विकासात्मक परीक्षण

छोटे बच्चों के विकासात्मक स्तर को समझने के लिए विकासात्मक मूल्यांकन उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है।

8.9.3 व्यवहार मूल्यांकन उपकरण

इनका उपयोग बच्चे के व्यवहार, सामाजिक सहभागिता और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से संबंधित जानकारी एकत्र करने के लिए किया जा सकता है।

8.9.4 अनुकूलनात्मक व्यवहार मापन

इन उपकरणों के माध्यम से दैनिक जीवन, संचार, सामाजिक कौशल और स्वतंत्र कार्य करने की क्षमता का अध्ययन किया जा सकता है।

8.9.5 शिक्षक-निर्मित मूल्यांकन उपकरण

शिक्षक बच्चे के विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार चेकलिस्ट, कार्यपत्रक, अवलोकन प्रपत्र और प्रदर्शन-आधारित कार्य तैयार कर सकता है।

8.10 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए परीक्षणों का अनुकूलन

दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में परीक्षण की सामग्री और प्रक्रिया को बच्चे की आवश्यकता के अनुसार अनुकूलित करना आवश्यक हो सकता है।

प्रमुख अनुकूलन

1.मौखिक निर्देशों का प्रयोग।

2.स्पर्शनीय सामग्री का प्रयोग।

3.बड़े अक्षरों वाली सामग्री।

4.उच्च कंट्रास्ट वाली सामग्री।

5.ऑडियो सामग्री का उपयोग।

6.डिजिटल एवं स्क्रीन रीडर अनुकूल सामग्री।

7.अतिरिक्त समय।

8.उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था।

9.आवश्यकता के अनुसार आवर्धक उपकरण।

10.उत्तर देने के वैकल्पिक तरीके।

11.स्पर्शनीय चित्र या आकृतियाँ।

12.परीक्षण वातावरण में अनावश्यक दृश्य बाधाओं को कम करना।

हालाँकि, प्रत्येक अनुकूलन का उपयोग स्वतः नहीं किया जाना चाहिए। यह देखना आवश्यक है कि अनुकूलन परीक्षण के उद्देश्य को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है।

8.11 मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में दृश्य निर्भरता की समस्या

कई मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में चित्र, आकृतियाँ, दृश्य पैटर्न, लिखित निर्देश या दृश्य प्रतिक्रिया शामिल होती है। ऐसे परीक्षणों में दृष्टिबाधित बच्चे का कम प्रदर्शन उसकी वास्तविक संज्ञानात्मक क्षमता को प्रतिबिंबित न भी कर सकता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी परीक्षण में चित्रों के आधार पर समानता पहचानने का कार्य है, तो दृष्टिबाधित बच्चे को चित्र देखने में कठिनाई हो सकती है। ऐसी स्थिति में प्राप्त अंक की व्याख्या करते समय सावधानी आवश्यक है।

इसलिए मूल्यांकनकर्ता को यह विचार करना चाहिए कि परीक्षण वास्तव में किस क्षमता को माप रहा है और क्या बच्चे की दृष्टि संबंधी सीमा परीक्षण के प्रदर्शन को प्रभावित कर रही है।

8.12 मूल्यांकन में बहु-स्रोत सूचना का महत्व

दृष्टिबाधित बच्चे के बारे में केवल एक परीक्षण के आधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। मूल्यांकन में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को एक साथ देखा जाना चाहिए।

इन स्रोतों में शामिल हो सकते हैं—

बच्चा

माता-पिता

शिक्षक

विशेष शिक्षक

नेत्र विशेषज्ञ

मनोवैज्ञानिक

चिकित्सक

पुनर्वास विशेषज्ञ

अन्य संबंधित विशेषज्ञ

इस प्रकार प्राप्त जानकारी बच्चे की क्षमताओं और आवश्यकताओं की अधिक व्यापक समझ विकसित करने में सहायता करती है।

8.13 मूल्यांकन में विशेष शिक्षक की भूमिका

विशेष शिक्षक मूल्यांकन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक बच्चे को नियमित शैक्षिक परिस्थितियों में देखता है और उसके वास्तविक प्रदर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है।

विशेष शिक्षक को—

1.बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करनी चाहिए।

2.कक्षा में बच्चे के व्यवहार का व्यवस्थित अवलोकन करना चाहिए।

3.माता-पिता से आवश्यक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

4.संबंधित विशेषज्ञों के साथ सहयोग करना चाहिए।

5.उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों का चयन करना चाहिए।

6.आवश्यकता के अनुसार मूल्यांकन सामग्री को सुलभ बनाना चाहिए।

7.बच्चे के वास्तविक कार्य-निष्पादन को दर्ज करना चाहिए।

8.मूल्यांकन परिणामों का शैक्षिक योजना में उपयोग करना चाहिए।

9.बच्चे की शक्तियों और क्षमताओं पर भी ध्यान देना चाहिए।

10.मूल्यांकन को केवल कमी पहचानने की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखना चाहिए।

आपके स्रोत में भी शिक्षक की भूमिका को विद्यार्थी की वास्तविक कक्षा-प्रदर्शन, प्रकाश, बैठने की स्थिति, सामग्री देखने तथा दृश्य संकेतों के उपयोग के अवलोकन से जोड़ा गया है।

8.14 परिवार की भूमिका

परिवार बच्चे के विकास और व्यवहार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी का स्रोत है। माता-पिता बच्चे के जन्म से वर्तमान तक के विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार, रुचियों, दैनिक जीवन तथा घर पर कार्य करने की क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवार की भागीदारी से बच्चे की वास्तविक परिस्थितियों को समझने में सहायता मिलती है। परिवार द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी को अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी के साथ मिलाकर देखा जाना चाहिए।

8.15 मूल्यांकन की नैतिक सावधानियाँ

दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में नैतिक सिद्धांतों का पालन आवश्यक है।

8.15.1 सम्मान

बच्चे के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए और उसे केवल उसकी दृष्टि संबंधी स्थिति से परिभाषित नहीं किया जाना चाहिए।

8.15.2 गोपनीयता

मूल्यांकन से प्राप्त व्यक्तिगत और चिकित्सकीय जानकारी को गोपनीय रखा जाना चाहिए।

8.15.3 सूचित सहमति

जहाँ आवश्यक हो, मूल्यांकन प्रक्रिया के संबंध में अभिभावक या संबंधित व्यक्ति को उचित जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

8.15.4 भेदभाव से बचाव

मूल्यांकन की प्रक्रिया में बच्चे की दृष्टि संबंधी स्थिति के कारण अनुचित भेदभाव नहीं होना चाहिए।

8.15.5 उपयुक्त परीक्षण का चयन

ऐसे परीक्षणों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए जो बच्चे की दृष्टि संबंधी सीमा के कारण उसकी क्षमता का अनुचित रूप से कम अनुमान प्रस्तुत करें।

8.16 मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या

मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या करते समय केवल प्राप्त अंक पर निर्भर करना उचित नहीं है। बच्चे की आयु, विकासात्मक स्तर, दृष्टि की स्थिति, भाषा, शिक्षा, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, परीक्षण परिस्थितियों तथा किए गए अनुकूलनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

विशेष रूप से दृष्टिबाधित बच्चों के लिए यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि—

“बच्चा कितना कर सकता है?”

के साथ-साथ यह भी पूछा जाए—

“बच्चा किन परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करता है और उसे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है?”

इस प्रकार मूल्यांकन परिणाम शैक्षिक एवं पुनर्वास योजना के लिए अधिक उपयोगी बन सकते हैं।

8.17 समग्र मूल्यांकन का दृष्टिकोण

दृष्टिबाधित बच्चे का समग्र मूल्यांकन केवल एक परीक्षण या एक विशेषज्ञ के मूल्यांकन तक सीमित नहीं होना चाहिए। बच्चे के स्वास्थ्य, दृष्टि, संज्ञानात्मक क्षमता, भाषा, सामाजिक-भावनात्मक विकास, अनुकूलनात्मक व्यवहार, शैक्षिक प्रदर्शन और कार्यात्मक कौशल को एक साथ समझना आवश्यक है।

समग्र मूल्यांकन में निम्न पक्षों को जोड़ा जा सकता है—

चिकित्सकीय जानकारी → मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन → शैक्षिक मूल्यांकन → कार्यात्मक मूल्यांकन → परिवार की जानकारी → पर्यावरणीय विश्लेषण → व्यक्तिगत शैक्षिक योजना

इस प्रकार मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चे की कठिनाइयों को सूचीबद्ध करना मात्र नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के आधार पर उपयुक्त सहायता की योजना बनाना है।

8.18 मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन में अंतर

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

आधार मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन नैदानिक मूल्यांकन

मुख्य उद्देश्य मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक विशेषताओं को समझना स्वास्थ्य एवं नैदानिक स्थिति को समझना

प्रमुख क्षेत्र संज्ञान, भाषा, व्यवहार, भावनाएँ, सामाजिक विकास स्वास्थ्य, दृष्टि, विकासात्मक एवं चिकित्सकीय स्थिति

प्रमुख विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक/विशेषज्ञ चिकित्सक एवं संबंधित विशेषज्ञ

विधियाँ मनोवैज्ञानिक परीक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार, स्केल चिकित्सकीय इतिहास, परीक्षण, नेत्र परीक्षण एवं अन्य नैदानिक प्रक्रियाएँ

उपयोग शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक योजना उपचार, पुनर्वास एवं संबंधित सेवाओं की योजना

दृष्टिबाधित बच्चे के लिए महत्व सीखने और व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं की पहचान दृष्टि एवं स्वास्थ्य संबंधी स्थिति की पहचान

दोनों प्रकार के मूल्यांकन एक-दूसरे के पूरक हैं और बच्चे की समग्र आवश्यकताओं को समझने में सहायता करते हैं।

8.19 मूल्यांकन की प्रक्रिया

दृष्टिबाधित बच्चे के मूल्यांकन को निम्न चरणों में समझा जा सकता है—

चरण 1 – संदर्भ एवं उद्देश्य निर्धारित करना

यह स्पष्ट किया जाता है कि मूल्यांकन क्यों किया जा रहा है।

चरण 2 – प्रारंभिक जानकारी एकत्र करना

परिवार, शिक्षक और बच्चे से आवश्यक जानकारी प्राप्त की जाती है।

चरण 3 – केस हिस्ट्री तैयार करना

चिकित्सकीय, विकासात्मक और शैक्षिक इतिहास का अध्ययन किया जाता है।

चरण 4 – उपयुक्त उपकरणों का चयन

बच्चे की आवश्यकता और मूल्यांकन के उद्देश्य के अनुसार उपकरण चुने जाते हैं।

चरण 5 – मूल्यांकन का संचालन

उपयुक्त वातावरण में मूल्यांकन किया जाता है।

चरण 6 – अनुकूलन प्रदान करना

आवश्यकतानुसार मौखिक, स्पर्शनीय, श्रवण या अन्य सुलभ माध्यमों का प्रयोग किया जाता है।

चरण 7 – परिणामों का विश्लेषण

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण किया जाता है।

चरण 8 – आवश्यकताओं की पहचान

बच्चे की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सकीय और कार्यात्मक आवश्यकताओं की पहचान की जाती है।

चरण 9 – हस्तक्षेप एवं सहायता की योजना

मूल्यांकन परिणामों के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक एवं पुनर्वास योजना बनाई जाती है।

चरण 10 – पुनर्मूल्यांकन

समय-समय पर बच्चे की प्रगति का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है।

8.20 दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में प्रमुख चुनौतियाँ

दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में कुछ विशेष चुनौतियाँ हो सकती हैं—

1.दृश्य-आधारित परीक्षणों की अधिकता।

2.उपयुक्त अनुकूलित परीक्षणों की सीमित उपलब्धता।

3.परीक्षण सामग्री की असुलभता।

4.परीक्षक का दृष्टिबाधिता संबंधी पर्याप्त ज्ञान न होना।

5.बच्चे के पूर्व दृश्य अनुभव में अंतर।

6.भाषा और संचार से संबंधित कठिनाइयाँ।

7.परीक्षण वातावरण का अनुपयुक्त होना।

8.केवल चिकित्सकीय रिपोर्ट पर अत्यधिक निर्भरता।

9.बच्चे की वास्तविक कार्यात्मक क्षमता की उपेक्षा।

10.परिवार एवं शिक्षक से पर्याप्त जानकारी न लेना।

इन चुनौतियों को ध्यान में रखकर मूल्यांकन की योजना बनाना आवश्यक है।

8.21 मूल्यांकन में कार्यात्मक दृष्टिकोण

दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में कार्यात्मक दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है। किसी बच्चे की दृष्टि संबंधी रिपोर्ट उसके वास्तविक दैनिक प्रदर्शन की पूरी जानकारी नहीं देती।

कार्यात्मक मूल्यांकन में यह देखा जा सकता है कि बच्चा—

- कितनी दूरी से वस्तु देख सकता है।
- किस आकार के अक्षर पढ़ सकता है।
- किस प्रकाश में बेहतर कार्य करता है।
- रंगों और कंट्रास्ट का उपयोग कैसे करता है।
- चित्र और आकृतियों को कैसे पहचानता है।
- कक्षा में दृश्य सामग्री का उपयोग कैसे करता है।
- गतिशीलता के दौरान दृश्य संकेतों का उपयोग कैसे करता है।
- पुस्तक और बोर्ड के बीच ध्यान कैसे बदलता है।

आपके स्रोत में भी कार्यात्मक दृष्टि के आकलन के लिए इन्हीं प्रकार के वास्तविक प्रदर्शन-आधारित प्रश्नों पर बल दिया गया है।

8.22 सारांश

दृष्टिबाधित बच्चों का मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन उनकी समग्र क्षमताओं और आवश्यकताओं को समझने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के माध्यम से संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक-भावनात्मक, व्यवहारात्मक तथा अनुकूलनात्मक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जबकि नैदानिक मूल्यांकन बच्चे की स्वास्थ्य एवं दृष्टि संबंधी स्थिति को समझने में सहायता करता है।मूल्यांकन के लिए अवलोकन, साक्षात्कार, केस हिस्ट्री,

चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, कार्य-आधारित मूल्यांकन और प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन जैसी विभिन्न विधियों का उपयोग किया जा सकता है। आपके स्रोत में कार्यात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत भी इन विधियों को प्रमुख स्थान दिया गया है।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए मूल्यांकन उपकरणों का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। दृश्य-आधारित परीक्षणों का उपयोग करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि परीक्षण बच्चे की वास्तविक क्षमता के बजाय उसकी दृष्टि संबंधी सीमा को न मापे। आवश्यकता के अनुसार मौखिक, श्रवण, स्पर्शनीय, बड़े अक्षरों, उच्च कंट्रास्ट और डिजिटल माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है।

समग्र मूल्यांकन में बच्चे, परिवार, शिक्षक, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक, नेत्र विशेषज्ञ तथा अन्य संबंधित विशेषज्ञों से प्राप्त जानकारी को एकीकृत किया जाना चाहिए। मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य केवल कठिनाइयों की पहचान करना नहीं, बल्कि बच्चे की क्षमताओं को समझना तथा उसकी शिक्षा, पुनर्वास, स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता के लिए उपयुक्त सहायता की योजना बनाना है।

8.23 अभ्यास प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1.दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मूल्यांकन की अवधारणा, आवश्यकता और महत्व का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2.दृष्टिबाधित बच्चों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की प्रमुख विधियों एवं उपकरणों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

3.दृष्टिबाधित बच्चों के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के चयन एवं अनुकूलन के सिद्धांतों की चर्चा कीजिए।

4.नैदानिक एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए दोनों के महत्व की विवेचना कीजिए।

5.दृष्टिबाधित बच्चों के मूल्यांकन में अवलोकन, साक्षात्कार, केस हिस्ट्री और कार्य-आधारित मूल्यांकन की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

6.दृष्टिबाधित बच्चों के समग्र मूल्यांकन में बहु-विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

7.मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या करते समय किन सावधानियों का पालन किया जाना चाहिए? विस्तार से समझाइए।

8.24 प्रमुख शब्दावली

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (Psychological Assessment)

नैदानिक मूल्यांकन (Clinical Assessment)

संज्ञानात्मक मूल्यांकन (Cognitive Assessment)

कार्यात्मक मूल्यांकन (Functional Assessment)

अवलोकन (Observation)

साक्षात्कार (Interview)

केस हिस्ट्री (Case History)

चेकलिस्ट (Checklist)

रेटिंग स्केल (Rating Scale)

कार्य-आधारित मूल्यांकन (Task-Based Assessment)

प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Assessment)

अनुकूलनात्मक व्यवहार (Adaptive Behaviour)

कार्यात्मक दृष्टि (Functional Vision)

मूल्यांकन अनुकूलन (Assessment Adaptation)

बहु-विषयक टीम (Multidisciplinary Team)

नैदानिक परीक्षण (Clinical Testing)

8.25 संदर्भ

1.American Foundation for the Blind. (2023). Vision rehabilitation and educational practices. AFB Press.

2.Corn, A. L., & Erin, J. N. (2010). Foundations of low vision: Clinical and functional perspectives (2nd ed.). AFB Press.

3.Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). Exceptional learners: An introduction to special education (15th ed.). Pearson.

4.Heward, W. L. (2022). Exceptional children: An introduction to special education (12th ed.). Pearson Education.

5.Hyvärinen, L. (2019). Assessment of vision and vision for learning. Vision for Learning Publications.

6.Rehabilitation Council of India. (2022). Curriculum framework for B.Ed. and M.Ed. Special Education (Visual Impairment). New Delhi: Rehabilitation Council of India.

7.National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities. (2023). Educational management of children with visual impairment. Dehradun.

8.World Health Organization. (2019). World report on vision. Geneva: World Health Organization.

9.Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. New Delhi: Government of India.

10.Rehabilitation Council of India. (2021). Curriculum framework for special education. New Delhi: Rehabilitation Council of India.

इकाई 9 : लेखन प्रौद्योगिकियाँ (Writing Technologies for Persons with Visual Impairment)

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 लेखन प्रौद्योगिकी का अर्थ

9.4 ब्रेल स्लेट (Braille Slate)

9.5 ब्रेलर (Brailler)

9.6 कंप्यूटर आधारित लेखन प्रौद्योगिकियाँ

9.7 रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले (Refreshable Braille Display)

9.8 स्मार्ट ब्रेलर (Smart Brailler)

9.9 लेखन प्रौद्योगिकियों का शैक्षिक महत्व

9.10 सारांश

9.11 शब्दावली

9.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

9.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

9.1 प्रस्तावना

दृष्टिबाधित एवं दिव्यांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा, संचार तथा स्वतंत्र जीवन-यापन में लेखन एवं पठन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामान्य दृष्टि वाले व्यक्ति जहाँ मुद्रित सामग्री, पेन-पेंसिल तथा डिजिटल माध्यमों का उपयोग आसानी से कर लेते हैं, वहीं दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए विशेष लेखन प्रौद्योगिकियों का विकास किया गया है। इन प्रौद्योगिकियों ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक जीवन में समान अवसर प्रदान किए हैं।

ब्रेल लिपि के आविष्कार के बाद लेखन एवं पठन की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। समय के साथ ब्रेल स्लेट, ब्रेलर, कंप्यूटर आधारित स्क्रीन रीडर, स्क्रीन मैग्निफायर, रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले तथा स्मार्ट ब्रेलर जैसी आधुनिक तकनीकों का विकास हुआ। इन उपकरणों ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यह इकाई विभिन्न लेखन प्रौद्योगिकियों, उनके प्रकार, विशेषताओं, उपयोगिता तथा शैक्षिक महत्व का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

1. लेखन प्रौद्योगिकी की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2. विभिन्न प्रकार की ब्रेल स्लेटों का वर्णन कर सकेंगे।

3. यांत्रिक एवं विद्युत ब्रेलर के कार्य एवं उपयोगिता को समझ सकेंगे।

4. स्क्रीन रीडर एवं स्क्रीन मैग्निफायर की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

5. भारतीय भाषाओं के लिए उपलब्ध स्क्रीन रीडर तकनीकों का अध्ययन कर सकेंगे।

6. रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले की संरचना एवं कार्यप्रणाली को समझ सकेंगे।

7. स्मार्ट ब्रेलर के शैक्षिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

8. दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए आधुनिक लेखन प्रौद्योगिकियों की उपयोगिता का विश्लेषण कर सकेंगे।

9.3 लेखन प्रौद्योगिकी का अर्थ

लेखन प्रौद्योगिकी से आशय उन उपकरणों, तकनीकों एवं डिजिटल संसाधनों से है जिनकी सहायता से दृष्टिबाधित अथवा अल्पदृष्टि वाले व्यक्ति पढ़ने, लिखने, सूचना प्राप्त करने तथा संचार स्थापित करने में सक्षम होते हैं।

इन प्रौद्योगिकियों का उद्देश्य है—

शिक्षा तक पहुँच बढ़ाना।

स्वतंत्र अधिगम को प्रोत्साहित करना।

रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग सुनिश्चित करना।

समावेशी शिक्षा को सशक्त बनाना।

9.4 ब्रेल स्लेट (Braille Slate)

ब्रेल स्लेट दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए सबसे सरल एवं किफायती लेखन उपकरण है। इसकी सहायता से ब्रेल लिपि में लेखन किया जाता है।

9.4.1 ब्रेल स्लेट की संरचना

ब्रेल स्लेट दो भागों से मिलकर बनी होती है—

ऊपरी फ्रेम

निचला फ्रेम

दोनों भाग कागज को स्थिर रखने का कार्य करते हैं। लेखन स्टाइलस (Stylus) की सहायता से किया जाता है।

9.4.2 ब्रेल स्लेट के प्रकार

(क) साधारण ब्रेल स्लेट

सर्वाधिक प्रचलित।

धातु अथवा प्लास्टिक से निर्मित।

विद्यालयों में व्यापक उपयोग।

(ख) पॉकेट स्लेट

आकार में छोटी।

आसानी से साथ ले जाई जा सकती है।

त्वरित नोट्स लिखने के लिए उपयोगी।

(ग) इंटरपॉइंट स्लेट

कागज के दोनों ओर लेखन की सुविधा।

कागज की बचत होती है।

(घ) ज्योमेट्री स्लेट

गणितीय एवं ज्यामितीय आकृतियाँ बनाने हेतु।

STEM विषयों के अध्ययन में सहायक।

(ङ) टैकोमा स्लेट

उच्च गुणवत्ता वाले लेखन हेतु प्रयुक्त।

व्यावसायिक उपयोग में सहायक।

9.5 ब्रेलर (Brailler)

ब्रेलर एक यांत्रिक अथवा विद्युत मशीन है जिसके माध्यम से ब्रेल लेखन तेज एवं स्पष्ट रूप से किया जाता है।

9.5.1 यांत्रिक ब्रेलर (Mechanical Brailler)

परिचय

यांत्रिक ब्रेलर टाइपराइटर के समान कार्य करता है। इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण Perkins Brailler है।

प्रमुख भाग

छह ब्रेल कुंजियाँ

स्पेस बार

लाइन चेंजर

बैकस्पेस कुंजी

विशेषताएँ

मजबूत एवं टिकाऊ।

उच्च गुणवत्ता का ब्रेल लेखन।

विद्यालयों में व्यापक उपयोग।

बिजली की आवश्यकता नहीं।

सीमाएँ

वजन अधिक होता है।

कीमत अपेक्षाकृत अधिक।

9.5.2 विद्युत ब्रेलर (Electronic Brailler)

परिचय

विद्युत ब्रेलर आधुनिक तकनीक से युक्त उपकरण है जो बिजली या बैटरी द्वारा संचालित होता है।

विशेषताएँ

तेज लेखन।

त्रुटि सुधार की सुविधा।

डिजिटल संग्रहण क्षमता।

कंप्यूटर से जुड़ने की सुविधा।

लाभ

समय की बचत।

पेशेवर उपयोग हेतु उपयुक्त।

उच्च उत्पादकता।

9.6 कंप्यूटर आधारित लेखन प्रौद्योगिकियाँ

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए शिक्षा और रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं।

9.6.1 स्क्रीन रीडर (Screen Reader)

स्क्रीन रीडर ऐसा सॉफ्टवेयर है जो कंप्यूटर स्क्रीन पर प्रदर्शित सामग्री को आवाज़ के माध्यम से पढ़ता है।

प्रमुख स्क्रीन रीडर

JAWS

NVDA

Narrator

VoiceOver

विशेषताएँ

पाठ को आवाज़ में परिवर्तित करता है।

इंटरनेट ब्राउज़िंग में सहायता।

ई-मेल एवं दस्तावेज़ पढ़ने में सक्षम।

शैक्षिक सामग्री तक पहुँच प्रदान करता है।

शैक्षिक महत्व

स्वतंत्र अधिगम को बढ़ावा।

उच्च शिक्षा में सहायता।

डिजिटल साक्षरता का विकास।

9.6.2 भारतीय भाषाओं के लिए स्क्रीन रीडर

भारत बहुभाषी देश है। इसलिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए विशेष स्क्रीन रीडर विकसित किए गए हैं।

प्रमुख उदाहरण

NVDA हिन्दी समर्थन

JAWS हिन्दी समर्थन

eSpeak हिन्दी

Indic Screen Reader

उपयोगिता

मातृभाषा में अधिगम।

सरकारी सेवाओं तक पहुँच।

डिजिटल समावेशन।

9.6.3 स्क्रीन मैग्निफायर (Screen Magnifier)

स्क्रीन मैग्निफायर अल्पदृष्टि (Low Vision) वाले व्यक्तियों के लिए उपयोगी तकनीक है।

कार्य

स्क्रीन पर प्रदर्शित सामग्री को बड़ा करना।

कंट्रास्ट बढ़ाना।

रंगों में परिवर्तन करना।

प्रमुख उदाहरण

ZoomText

MAGic

Windows Magnifier

लाभ

अवशिष्ट दृष्टि का प्रभावी उपयोग।

पढ़ने की गति में वृद्धि।

आँखों पर कम दबाव।

9.7 रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले (Refreshable Braille Display)

रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जो कंप्यूटर अथवा मोबाइल स्क्रीन पर प्रदर्शित पाठ को ब्रेल बिंदुओं में परिवर्तित करता है।

कार्यप्रणाली

प्रत्येक ब्रेल सेल में छोटे पिन होते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक संकेतों द्वारा पिन ऊपर-नीचे होते हैं।

उपयोगकर्ता स्पर्श के माध्यम से सामग्री पढ़ता है।

विशेषताएँ

रियल टाइम ब्रेल आउटपुट।

कंप्यूटर एवं स्मार्टफोन से कनेक्टिविटी।

कागज की आवश्यकता नहीं।

डिजिटल सामग्री तक त्वरित पहुँच।

लाभ

उच्च शिक्षा में उपयोगी।

शोध कार्यों में सहायक।

रोजगार के अवसर बढ़ाता है।

सीमाएँ

अत्यधिक महंगा उपकरण।

तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता।

9.8 स्मार्ट ब्रेलर (Smart Brailler)

स्मार्ट ब्रेलर आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक ब्रेल लेखन उपकरण है जो ब्रेल सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सरल बनाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

ऑडियो फीडबैक

डिजिटल डिस्प्ले

त्रुटि पहचान

स्वचालित उच्चारण

इंटरैक्टिव अधिगम

शैक्षिक उपयोग

प्रारम्भिक ब्रेल शिक्षण

समावेशी कक्षाओं में उपयोग

शिक्षक एवं अभिभावक सहायता

लाभ

ब्रेल सीखना आसान बनाता है।

स्व-अध्ययन को प्रोत्साहित करता है।

शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाता है।

9.9 लेखन प्रौद्योगिकियों का शैक्षिक महत्व

1. स्वतंत्र अधिगम को प्रोत्साहन।

2. समावेशी शिक्षा को बढ़ावा।

3. डिजिटल संसाधनों तक पहुँच।

4. रोजगारपरक कौशल का विकास।

5. आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि।

6. सूचना के समान अवसर उपलब्ध कराना।

7. सामाजिक सहभागिता को बढ़ाना।

9.10 सारांश

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए लेखन प्रौद्योगिकियाँ शिक्षा और सामाजिक समावेशन का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ब्रेल स्लेट एवं ब्रेलर जैसी पारंपरिक तकनीकों से लेकर स्क्रीन रीडर, स्क्रीन मैग्निफायर, रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले तथा स्मार्ट ब्रेलर जैसी आधुनिक तकनीकों ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाया है। ये तकनीकें न केवल अधिगम को सरल बनाती हैं बल्कि स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और रोजगार के अवसरों को भी बढ़ाती हैं। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए इन तकनीकों का प्रभावी उपयोग अत्यंत आवश्यक है।

9.11 शब्दावली

ब्रेल स्लेट – ब्रेल लेखन हेतु प्रयुक्त सरल उपकरण।

ब्रेलर– ब्रेल टाइपराइटर जैसा लेखन उपकरण।

स्क्रीन रीडर – स्क्रीन पर प्रदर्शित सामग्री को आवाज़ में पढ़ने वाला सॉफ्टवेयर।

स्क्रीन मैग्निफायर – स्क्रीन की सामग्री को बड़ा करने वाला सॉफ्टवेयर।

रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले – डिजिटल पाठ को ब्रेल में परिवर्तित करने वाला इलेक्ट्रॉनिक उपकरण।

स्मार्ट ब्रेलर – ऑडियो एवं डिजिटल सुविधाओं से युक्त आधुनिक ब्रेल शिक्षण उपकरण।

9.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. विभिन्न प्रकार की ब्रेल स्लेटों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

2. यांत्रिक एवं विद्युत ब्रेलर की तुलना कीजिए।

3. स्क्रीन रीडर एवं स्क्रीन मैग्निफायर की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

4. रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले की कार्यप्रणाली एवं शैक्षिक महत्व की व्याख्या कीजिए।

5. दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए आधुनिक लेखन प्रौद्योगिकियों की भूमिका का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

9.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Koenig, A. J. & Holbrook, M. C. Foundations of Education for Blind and Visually Impaired Children.

2. Corn, A. L. & Erin, J. N. Foundations of Low Vision.

3. Bishop, V. E. Teaching Visually Impaired Children.

4. NCERT (Inclusive Education Guidelines).

5. RPwD Act, 2016.

6. Department of Empowerment of Persons with Disabilities, Government of India.

इकाई–10 : व्यावसायिक विकास—उभरते हुए रोजगार के अवसर

Vocational Development: Emerging Job Opportunities

10.1 प्रस्तावना

10.2 अधिगम उद्देश्य

10.3 व्यावसायिक विकास की अवधारणा

10.4 व्यावसायिक आवश्यकताएँ

10.5 उभरते हुए रोजगार के अवसर

10.6 व्यावसायिक मूल्यांकन एवं करियर परामर्श

10.7 सहायक तकनीक एवं उचित समायोजन

10.8 रोजगार में बाधाएँ एवं समाधान

10.9 परिवार, शिक्षण संस्थान एवं नियोक्ता की भूमिका

10.10 भारत में अधिकार एवं रोजगार सहायता

10.11 सारांश

10.12 प्रमुख शब्दावली

10.13 स्वमूल्यांकन प्रश्न

10.14 संदर्भ

10.1 प्रस्तावना

व्यावसायिक विकास मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं, शैक्षिक उपलब्धियों तथा व्यक्तिगत लक्ष्यों के अनुरूप व्यवसाय का चयन करता है और उसमें प्रगति करने के लिए आवश्यक ज्ञान एवं कौशल अर्जित करता है। रोजगार केवल आय अर्जित करने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, सामाजिक पहचान, आर्थिक सुरक्षा और समाज में सक्रिय भागीदारी के अवसर भी प्रदान करता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के संदर्भ में व्यावसायिक विकास का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि रोजगार उन्हें अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने, सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती देने और स्वतंत्र जीवन जीने का अवसर प्रदान करता है।

दृष्टिबाधिता किसी व्यक्ति की संपूर्ण कार्यक्षमता का निर्धारण नहीं करती। उचित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सहायक तकनीक, सुलभ कार्यस्थल तथा आवश्यक समायोजन उपलब्ध होने पर दृष्टिबाधित व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में प्रभावी योगदान दे सकते हैं। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, डिजिटल सेवाओं, ऑनलाइन शिक्षा, सॉफ्टवेयर परीक्षण, सामग्री लेखन, ग्राहक सहायता, अनुवाद, परामर्श और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में रोजगार की नई संभावनाएँ विकसित हुई हैं। इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए संबंधित व्यावसायिक योग्यता के साथ डिजिटल साक्षरता, संचार कौशल, समस्या-समाधान, समय-प्रबंधन तथा निरंतर सीखने की क्षमता आवश्यक है।

हालाँकि, दृष्टिबाधित व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त करने और उसमें प्रगति करने के दौरान अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। असुलभ भर्ती पोर्टल, दृष्टिबाधिता के प्रति नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण के सीमित अवसर, परिवहन संबंधी कठिनाइयाँ और सहायक तकनीक की अनुपलब्धता इन बाधाओं के प्रमुख कारण हैं। अतः व्यावसायिक विकास को केवल व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं माना जाना चाहिए। इसके लिए परिवार, शिक्षण संस्थान, व्यावसायिक प्रशिक्षक, पुनर्वास विशेषज्ञ, नियोक्ता तथा सरकार के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

इस इकाई में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के व्यावसायिक विकास की अवधारणा, आवश्यकताओं, रोजगार के उभरते क्षेत्रों, व्यावसायिक मूल्यांकन, सहायक तकनीक, उचित समायोजन तथा समावेशी रोजगार की रणनीतियों का अध्ययन किया जाएगा।

10.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

व्यावसायिक विकास की अवधारणा एवं महत्व को समझ सकेंगे।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की व्यावसायिक आवश्यकताओं का वर्णन कर सकेंगे।

व्यावसायिक मूल्यांकन एवं करियर परामर्श की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उभरते हुए रोजगार के अवसरों की पहचान कर सकेंगे।

सहायक तकनीक एवं उचित समायोजन के महत्व को समझ सकेंगे।

रोजगार प्राप्ति में आने वाली सामाजिक, शैक्षिक एवं तकनीकी बाधाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

समावेशी रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रस्तुत कर सकेंगे।

10.3 व्यावसायिक विकास की अवधारणा

व्यावसायिक विकास एक सतत एवं क्रमिक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों और जीवन-लक्ष्यों के अनुरूप व्यवसाय का चयन करता है तथा आवश्यक शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त करके अपने करियर को विकसित करता है। इसमें आत्म-मूल्यांकन, व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करना, करियर संबंधी निर्णय लेना, प्रशिक्षण प्राप्त करना, रोजगार खोजना, कार्यस्थल पर समायोजन करना और व्यावसायिक उन्नति करना शामिल है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए व्यावसायिक विकास का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करना है जिनमें वे अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य कर सकें। व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया व्यक्ति-केंद्रित होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि व्यवसाय का चयन करते समय व्यक्ति की पसंद, शैक्षिक पृष्ठभूमि, कार्यात्मक दृष्टि, सहायक तकनीक के उपयोग की क्षमता और आवश्यक सहायता को ध्यान में रखा जाए।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

दृष्टिबाधिता के आधार पर किसी व्यक्ति को किसी विशेष व्यवसाय के लिए अनुपयुक्त मानना उचित नहीं है। किसी कार्य की उपयुक्तता का निर्धारण उसकी वास्तविक आवश्यकताओं, आवश्यक कौशलों और उपलब्ध समायोजनों के आधार पर किया जाना चाहिए।

10.4 दृष्टिबाधित व्यक्तियों की व्यावसायिक आवश्यकताएँ

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की व्यावसायिक आवश्यकताएँ उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं, शैक्षिक पृष्ठभूमि, दृष्टि की स्थिति और चुने गए व्यवसाय के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं। इसलिए व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार सहायता की योजना प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार बनाई जानी चाहिए।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण रोजगार की आधारशिला हैं। प्रशिक्षण सामग्री ब्रेल, बड़े अक्षरों, सुलभ डिजिटल दस्तावेजों या ऑडियो प्रारूप में उपलब्ध कराई जा सकती है। प्रशिक्षण में केवल सैद्धांतिक जानकारी देने के बजाय वास्तविक कार्यों का अभ्यास भी कराया जाना चाहिए।

डिजिटल साक्षरता: आधुनिक रोजगार में कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, ऑनलाइन बैठक, डिजिटल दस्तावेज, स्प्रेडशीट और सहयोगी सॉफ्टवेयर का उपयोग महत्वपूर्ण हो गया है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों को स्क्रीन रीडर, स्क्रीन मैग्निफायर तथा अन्य सहायक तकनीकों के माध्यम से इन संसाधनों का उपयोग करना सिखाया जाना चाहिए।

अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता: कार्यस्थल तक सुरक्षित रूप से पहुँचने, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने, कार्यालय में स्थानों की पहचान करने तथा नए मार्गों पर चलने के लिए अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता प्रशिक्षण उपयोगी है।

संचार एवं सामाजिक कौशल: साक्षात्कार में भाग लेना, सहकर्मियों से संवाद करना, कार्य संबंधी निर्देश समझना, टीम में काम करना और समस्याओं का समाधान करना व्यावसायिक सफलता के महत्वपूर्ण घटक हैं।

आत्मविश्वास एवं आत्म-प्रतिनिधित्व: दृष्टिबाधित व्यक्ति को अपनी क्षमताओं, आवश्यकताओं और उचित समायोजन के बारे में स्पष्ट रूप से बताने के अवसर मिलने चाहिए। आत्म-प्रतिनिधित्व व्यक्ति को रोजगार संबंधी निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने में सहायता करता है।

10.5 उभरते हुए रोजगार के अवसर

तकनीकी प्रगति, डिजिटल अर्थव्यवस्था और समावेशी कार्यस्थलों के विकास के कारण दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए अनेक नए रोजगार विकल्प सामने आए हैं। इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए उपयुक्त योग्यता, प्रशिक्षण, अभिगम्यता और कार्यस्थल पर आवश्यक सहयोग महत्वपूर्ण हैं।

10.5.1 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तकनीकी सहायता, सॉफ्टवेयर परीक्षण, डिजिटल अभिगम्यता परीक्षण, डेटा प्रबंधन और कंप्यूटर आधारित ग्राहक सहायता जैसे कार्यों की संभावनाएँ हैं। डिजिटल अभिगम्यता परीक्षण में वेबसाइटों तथा मोबाइल अनुप्रयोगों की जाँच की जाती है कि क्या उन्हें कीबोर्ड और स्क्रीन रीडर जैसी तकनीकों से उपयोग किया जा सकता है। इस कार्य में तकनीकी समझ, परीक्षण कौशल और समस्याओं का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण आवश्यक होता है।

10.5.2 शिक्षा एवं प्रशिक्षण

शिक्षा दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण व्यावसायिक क्षेत्र है। आवश्यक शैक्षिक एवं व्यावसायिक योग्यताओं के आधार पर वे शिक्षक, विशेष शिक्षक, ट्यूटर, प्रशिक्षक, ब्रेल संसाधन निर्माता, शैक्षिक सामग्री लेखक या समावेशी शिक्षा से संबंधित अन्य भूमिकाओं में कार्य कर सकते हैं। डिजिटल शिक्षण संसाधनों और सुलभ अध्ययन सामग्री के निर्माण में भी अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

10.5.3 लेखन, संपादन एवं अनुवाद

भाषा और संचार में रुचि रखने वाले दृष्टिबाधित व्यक्ति सामग्री लेखन, अनुवाद, संपादन, प्रूफरीडिंग, शोध-सहायता और डिजिटल प्रकाशन से संबंधित कार्य कर सकते हैं। इन कार्यों में भाषा पर पकड़, शोध कौशल, तथ्य-जाँच और समय-सीमा का पालन आवश्यक है। सुलभ लेखन उपकरण तथा डिजिटल दस्तावेजों का उपयोग इस क्षेत्र में सहायक होता है।

10.5.4 ग्राहक सेवा एवं सहायता केंद्र

ग्राहक सेवा में फोन, ई-मेल, चैट या हेल्पडेस्क के माध्यम से ग्राहकों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। दृष्टिबाधित व्यक्ति आवश्यक प्रशिक्षण और सुलभ सॉफ्टवेयर के साथ इस क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं। स्पष्ट संवाद, धैर्य, समस्या-समाधान तथा गोपनीयता बनाए रखना इसके प्रमुख कौशल हैं।

10.5.5 प्रशासनिक एवं कार्यालयी कार्य

दस्तावेज तैयार करना, ई-मेल प्रबंधन, रिकॉर्ड रखना, बैठक की जानकारी व्यवस्थित करना, अनुसूची तैयार करना और कार्यालयी समन्वय जैसे कार्य भी संभावित रोजगार विकल्प हैं। इसके लिए सुलभ कार्यालयी सॉफ्टवेयर, डिजिटल दक्षता और व्यवस्थित कार्यशैली महत्वपूर्ण हैं।

10.5.6 उद्यमिता एवं स्वरोजगार

स्वरोजगार दृष्टिबाधित व्यक्तियों को अपनी रुचि और कौशल के अनुसार कार्य करने का अवसर प्रदान कर सकता है। ऑनलाइन शिक्षण, अनुवाद, लेखन, डिजिटल सेवाएँ, संगीत, प्रशिक्षण, परामर्श और स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यवसाय इसके उदाहरण हैं। सफल उद्यमिता के लिए बाजार की जानकारी, वित्तीय प्रबंधन, ग्राहक सेवा, डिजिटल भुगतान और व्यवसाय नियोजन आवश्यक हैं।

10.5.7 मीडिया एवं सांस्कृतिक क्षेत्र

संगीत, रेडियो, पॉडकास्ट, वॉइस-आधारित प्रस्तुति, लेखन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए संभावनाएँ हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में सफलता के लिए रुचि, नियमित अभ्यास, प्रशिक्षण और संबंधित कार्य का अनुभव महत्वपूर्ण है।

10.5.8 दूरस्थ एवं हाइब्रिड रोजगार

दूरस्थ कार्य के माध्यम से व्यक्ति घर से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर कार्य कर सकता है। इससे कुछ परिवहन संबंधी बाधाएँ कम हो सकती हैं। हालाँकि, दूरस्थ कार्य भी तभी प्रभावी है जब आवश्यक सॉफ्टवेयर सुलभ हो, इंटरनेट उपलब्ध हो और कर्मचारी को टीम के साथ संवाद, प्रशिक्षण तथा पदोन्नति के समान अवसर मिलें।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ये रोजगार क्षेत्र संभावित विकल्प हैं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुनिश्चित नौकरी नहीं। रोजगार का चयन योग्यता, रुचि, प्रशिक्षण और उपलब्ध अवसरों के आधार पर होना चाहिए।

10.6 व्यावसायिक मूल्यांकन एवं करियर परामर्श

व्यावसायिक मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति की रुचियों, योग्यताओं, व्यावहारिक कौशलों, शैक्षिक उपलब्धियों और प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान की जाती है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मूल्यांकन में उनकी कार्यात्मक दृष्टि, ब्रेल या डिजिटल साधनों का उपयोग,

सहायक तकनीक की दक्षता, संचार कौशल और अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता की आवश्यकताओं पर भी विचार किया जा सकता है।

मूल्यांकन के लिए साक्षात्कार, रुचि-सूची, कार्य-नमूने, व्यावहारिक गतिविधियाँ और पूर्व शैक्षिक अनुभवों का उपयोग किया जा सकता है। मूल्यांकन का उद्देश्य किसी व्यक्ति के लिए रोजगार विकल्पों को सीमित करना नहीं, बल्कि उपयुक्त प्रशिक्षण और समायोजन की पहचान करना होना चाहिए।

करियर परामर्श के माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न व्यवसायों, उनकी योग्यताओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्य की परिस्थितियों और रोजगार की संभावनाओं की जानकारी दी जाती है। परामर्श प्रक्रिया में व्यक्ति की प्राथमिकताओं को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

10.7 सहायक तकनीक एवं उचित समायोजन सहायक तकनीक

दृष्टिबाधित व्यक्तियों को सूचना प्राप्त करने, डिजिटल दस्तावेज पढ़ने, संवाद करने और व्यावसायिक कार्य पूरा करने में सहायता प्रदान करती है। इसमें स्क्रीन रीडर, स्क्रीन मैग्निफायर, ब्रेल डिस्प्ले, ब्रेल एम्बॉसर, ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन सॉफ्टवेयर और सुलभ स्मार्टफोन सुविधाएँ शामिल हो सकती हैं।

उचित समायोजन में सुलभ डिजिटल दस्तावेज, स्क्रीन रीडर के अनुकूल सॉफ्टवेयर, बड़े अक्षर, उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था, उच्च कंट्रास्ट, सुलभ कार्यस्थल मार्ग तथा कार्य-प्रक्रिया में आवश्यक बदलाव शामिल हो सकते हैं।

नियोक्ता को कर्मचारी की जरूरतों पर चर्चा करनी चाहिए और उसके लिए उपयुक्त समाधान निर्धारित करना चाहिए। समायोजन का उद्देश्य कार्य की आवश्यक जिम्मेदारियों को समाप्त करना नहीं, बल्कि अनावश्यक बाधाओं को कम करके समान अवसर उपलब्ध कराना है।

10.8 रोजगार प्राप्ति में बाधाएँ एवं समाधान

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के रोजगार में कई प्रकार की बाधाएँ सामने आ सकती हैं। इनमें सामाजिक पूर्वाग्रह, असुलभ भर्ती पोर्टल, प्रशिक्षण के सीमित अवसर, सहायक तकनीक की लागत, परिवहन संबंधी समस्याएँ और नियोक्ताओं में जागरूकता की कमी शामिल हैं।इन बाधाओं को दूर करने के लिए भर्ती प्रक्रिया को सुलभ बनाया जाना चाहिए। ऑनलाइन आवेदन-पत्र स्क्रीन रीडर के अनुकूल हों, साक्षात्कार में आवश्यक समायोजन उपलब्ध हों तथा चयन प्रक्रिया व्यक्ति की वास्तविक योग्यता पर आधारित होनी चाहिए।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
शिक्षण संस्थानों को व्यावसायिक मार्गदर्शन, इंटर्नशिप और कार्य-अनुभव उपलब्ध कराना चाहिए। नियोक्ताओं को दिव्यांगता संबंधी जागरूकता और अभिगम्यता का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साथ ही, रोजगार मिलने के बाद भी उचित वेतन, पदोन्नति, प्रशिक्षण और सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

10.9 परिवार, शिक्षण संस्थान एवं नियोक्ता की भूमिका परिवार

दृष्टिबाधित व्यक्ति को प्रोत्साहन, भावनात्मक समर्थन और व्यावहारिक अनुभव प्रदान कर सकता है। परिवार को व्यक्ति की रुचियों का सम्मान करना चाहिए और उसे अपने निर्णय लेने तथा दैनिक जिम्मेदारियाँ निभाने के अवसर देने चाहिए।

शिक्षण संस्थान सुलभ अध्ययन सामग्री, व्यावसायिक प्रशिक्षण, करियर परामर्श और इंटर्नशिप के माध्यम से रोजगार की तैयारी में सहयोग कर सकते हैं। विशेष शिक्षकों तथा पुनर्वास विशेषज्ञों की भूमिका व्यक्ति की आवश्यकताओं का आकलन करने और उचित तकनीक तथा प्रशिक्षण सुझाने में महत्वपूर्ण है।

नियोक्ताओं को योग्यता-आधारित चयन, सुलभ कार्यस्थल, उचित समायोजन और समान अवसर सुनिश्चित करने चाहिए। दृष्टिबाधित कर्मचारियों को संगठन के प्रशिक्षण, पदोन्नति और निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में समान भागीदारी मिलनी चाहिए।

10.10 भारत में अधिकार एवं रोजगार सहायता

भारत में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों, समानता, गरिमा और समावेशन के लिए महत्वपूर्ण कानूनी आधार प्रदान करता है। रोजगार, भेदभाव-निषेध और उचित समायोजन से संबंधित प्रावधानों को समझना दृष्टिबाधित व्यक्तियों तथा नियोक्ताओं दोनों के लिए उपयोगी है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार सहायता के लिए सरकारी कौशल-विकास कार्यक्रमों, व्यावसायिक पुनर्वास संस्थानों, रोजगार सेवाओं तथा दिव्यांगजन सशक्तीकरण से संबंधित संस्थाओं की सहायता ली जा सकती है। संबंधित योजनाओं की पात्रता और आवेदन प्रक्रिया के लिए वर्तमान आधिकारिक जानकारी की जाँच करना आवश्यक है।

10.11 सारांश

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

व्यावसायिक विकास दृष्टिबाधित व्यक्तियों की आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और सामाजिक सहभागिता से जुड़ी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, ग्राहक सेवा, लेखन, प्रशासन, उद्यमिता, मीडिया और दूरस्थ कार्य जैसे क्षेत्रों में संभावनाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल दक्षता, सहायक तकनीक और सुलभ कार्यस्थल आवश्यक हैं। समावेशी रोजगार तभी संभव है जब व्यक्ति की क्षमताओं को प्राथमिकता दी जाए और सामाजिक तथा संस्थागत बाधाओं को दूर किया जाए।

10.12 स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. व्यावसायिक विकास की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. दृष्टिबाधित व्यक्तियों की प्रमुख व्यावसायिक आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।
3. उभरते हुए पाँच रोजगार क्षेत्रों की व्याख्या कीजिए।
4. व्यावसायिक मूल्यांकन एवं करियर परामर्श का महत्व स्पष्ट कीजिए।
5. रोजगार में सहायक तकनीक और उचित समायोजन की भूमिका बताइए।
6. दृष्टिबाधित व्यक्तियों के रोजगार में आने वाली प्रमुख बाधाओं का विश्लेषण कीजिए।
7. समावेशी रोजगार को प्रोत्साहित करने के उपाय प्रस्तुत कीजिए।

इकाई–11 : दृष्टिबाधित व्यक्तियों में वयस्कता संबंधी मुद्दे

Adulthood Issues

11.1 प्रस्तावना

11.2 अधिगम उद्देश्य

11.3 वयस्कता की अवधारणा

11.4 वयस्कता संबंधी आवश्यकताएँ

11.5 स्वतंत्र जीवन की अवधारणा

11.6 दैनिक जीवन-कौशल एवं घरेलू प्रबंधन

11.7 अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता

11.8 आवास एवं सामाजिक सहभागिता

11.9 रोजगार एवं आर्थिक स्वतंत्रता

11.10 विवाह, संबंध एवं पारिवारिक जीवन

11.11 सामाजिक एवं मनोसामाजिक मुद्दे

11.12 स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं नागरिक अधिकार

11.13 पुनर्वास सेवाओं की भूमिका

11.14 वयस्कता संक्रमण योजना

11.15 चुनौतियाँ एवं समाधान

11.16 सारांश

11.17 प्रमुख शब्दावली

11.18 स्वमूल्यांकन प्रश्न

11.19 संदर्भ

11.1 प्रस्तावना

वयस्कता मानव विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें व्यक्ति शिक्षा से रोजगार, परिवार, सामाजिक उत्तरदायित्व और स्वतंत्र जीवन की ओर अग्रसर होता है। इस अवस्था में व्यक्ति को अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं, जैसे व्यवसाय का चयन, आर्थिक प्रबंधन, आवास की व्यवस्था, सामाजिक संबंधों का विकास और समुदाय में सहभागिता। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए वयस्कता विशेष महत्व रखती है, क्योंकि उन्हें सामान्य जीवन की चुनौतियों के साथ-साथ सुलभ सूचना, स्वतंत्र आवागमन, सहायक तकनीक और सामाजिक दृष्टिकोण से संबंधित कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ सकता है।दृष्टिबाधिता व्यक्ति की स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता या सामाजिक जीवन में भागीदारी को स्वतः समाप्त नहीं करती। उचित प्रशिक्षण, सुलभ वातावरण और आवश्यक सहायता के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, पारिवारिक जीवन और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। वयस्कता में उनकी आवश्यकताओं को समझने के लिए व्यक्ति की पसंद, कार्यात्मक क्षमताओं, सामाजिक परिस्थितियों और उपलब्ध संसाधनों पर ध्यान देना आवश्यक है।

कई बार परिवार और समाज दृष्टिबाधित व्यक्तियों के प्रति अत्यधिक संरक्षणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे सुरक्षा की चिंता के कारण व्यक्ति को स्वतंत्र यात्रा, रोजगार, सामाजिक संबंध या आर्थिक निर्णय लेने के अवसर नहीं देते। इससे आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता और व्यावहारिक अनुभव के विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है। इसलिए वयस्कता से संबंधित सेवाओं का उद्देश्य केवल सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति की स्वायत्तता, गरिमा और स्वतंत्र जीवन को प्रोत्साहित करना भी होना चाहिए।

यह इकाई दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वयस्कता संबंधी आवश्यकताओं, स्वतंत्र जीवन, दैनिक जीवन-कौशल, रोजगार, आर्थिक प्रबंधन, पारिवारिक जीवन, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक मुद्दों और पुनर्वास सेवाओं की भूमिका का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है।

11.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

- वयस्कता की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वयस्कता संबंधी आवश्यकताओं का वर्णन कर सकेंगे।
- स्वतंत्र जीवन एवं दैनिक जीवन-कौशल के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता से संबंधित आवश्यकताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- रोजगार एवं आर्थिक स्वतंत्रता के महत्व को समझ सकेंगे।
- विवाह, संबंध और पारिवारिक जीवन से जुड़े मुद्दों की व्याख्या कर सकेंगे।
- सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- पुनर्वास सेवाओं तथा परिवार की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे

11.3 वयस्कता की अवधारणा

वयस्कता मानव विकास की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगता है। इसमें आत्मनिर्णय, आत्मविश्वास, भावनात्मक परिपक्वता, जिम्मेदारी, सामाजिक संबंध और आर्थिक प्रबंधन जैसे आयाम शामिल हैं। वयस्कता का विकास केवल आयु पर निर्भर नहीं करता, बल्कि व्यक्ति के अनुभवों, शिक्षा, सामाजिक वातावरण, अवसरों और व्यक्तिगत परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के संदर्भ में वयस्कता का अर्थ केवल दृष्टिबाधिता के साथ जीवन जीना सीखना नहीं है, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने निर्णय स्वयं लेने और उपलब्ध अवसरों का उपयोग करने की क्षमता विकसित करना भी है। प्रत्येक दृष्टिबाधित व्यक्ति की आवश्यकताएँ समान नहीं होतीं। जन्म से दृष्टिबाधित व्यक्ति और जीवन के बाद के चरण में दृष्टि खोने वाले व्यक्ति के अनुभव अलग हो सकते हैं। इसलिए सहायता और प्रशिक्षण की योजना व्यक्ति की परिस्थितियों के अनुसार बनाई जानी चाहिए।

वयस्कता के प्रमुख आयामों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक संबंध, रोजगार, आर्थिक सुरक्षा, पारिवारिक जीवन, स्वास्थ्य संबंधी निर्णय और नागरिक सहभागिता शामिल हैं। किसी व्यक्ति को एक क्षेत्र में सहायता की आवश्यकता होने का अर्थ यह नहीं कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में दूसरों पर निर्भर है।

11.4 दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वयस्कता संबंधी आवश्यकताएँ

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वयस्कता संबंधी आवश्यकताओं में शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्वतंत्र जीवन-कौशल, आवागमन, आर्थिक प्रबंधन, सामाजिक संबंध और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच शामिल हैं।

शैक्षिक आवश्यकताएँ: वयस्कता में भी शिक्षा और निरंतर सीखने का महत्व बना रहता है। व्यक्ति को उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल कौशल तथा जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए। अध्ययन सामग्री ब्रेल, बड़े अक्षरों, सुलभ डिजिटल प्रारूप या ऑडियो में उपलब्ध कराई जा सकती है।

व्यावसायिक आवश्यकताएँ: रोजगार के लिए आवश्यक कौशल, करियर परामर्श, कार्य-अनुभव और सुलभ भर्ती प्रक्रिया महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने का अवसर मिलना चाहिए।

सामाजिक आवश्यकताएँ: मित्रता, सामाजिक गतिविधियाँ, सामुदायिक कार्यक्रम और पारस्परिक संबंध व्यक्ति के सामाजिक विकास में योगदान देते हैं। समाज को दृष्टिबाधित व्यक्तियों की भागीदारी के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

व्यक्तिगत आवश्यकताएँ: व्यक्तिगत देखभाल, दैनिक जीवन-कौशल, स्वतंत्र आवागमन, समय-प्रबंधन और निर्णय लेने की क्षमता वयस्क जीवन के महत्वपूर्ण भाग हैं।

भावनात्मक आवश्यकताएँ: आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, स्वीकार्यता और सामाजिक समर्थन व्यक्ति के मनोसामाजिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। आवश्यकता होने पर परामर्श और सहकर्मी सहायता उपयोगी हो सकती है।

11.5 स्वतंत्र जीवन की अवधारणा

स्वतंत्र जीवन का अर्थ केवल यह नहीं है कि व्यक्ति प्रत्येक कार्य बिना किसी सहायता के करे। इसका वास्तविक अर्थ है कि व्यक्ति अपने जीवन के निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाए, अपनी पसंद व्यक्त कर सके और आवश्यक सहायता अपनी जरूरतों के अनुसार प्राप्त कर सके। स्वतंत्र जीवन का संबंध स्वायत्तता, गरिमा, व्यक्तिगत नियंत्रण और समुदाय में सहभागिता से है।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए स्वतंत्र जीवन में घर, कार्यस्थल, शिक्षण संस्थान, बाजार, स्वास्थ्य केंद्र और सार्वजनिक परिवहन तक पहुँच शामिल है। यदि सार्वजनिक स्थानों पर उचित संकेत, सुरक्षित मार्ग, सुलभ सूचना और सहायक सुविधाएँ उपलब्ध हों, तो व्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ सकती है।

स्वतंत्र जीवन के विकास में व्यक्ति-केंद्रित योजना महत्वपूर्ण है। इसमें व्यक्ति के लक्ष्य, पसंद, क्षमताओं और सहायता संबंधी आवश्यकताओं को समझा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई दृष्टिबाधित व्यक्ति स्वतंत्र रूप से बाजार जाना चाहता है, तो उसे मार्ग पहचानने, परिवहन का उपयोग करने, वस्तुओं की पहचान करने और भुगतान करने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

स्वतंत्रता और सहायता एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। आवश्यकता के अनुसार सहयोग प्राप्त करना भी स्वतंत्र जीवन का हिस्सा है, बशर्ते सहायता व्यक्ति की इच्छा और निर्णय का सम्मान करे।

11.6 दैनिक जीवन-कौशल एवं घरेलू प्रबंधन

दैनिक जीवन-कौशल वे व्यावहारिक क्षमताएँ हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और घरेलू जिम्मेदारियों का प्रबंधन करता है। इनमें व्यक्तिगत स्वच्छता, वस्त्र चयन, भोजन तैयार करना, घरेलू उपकरणों का उपयोग, सफाई, कपड़े धोना, वस्तुओं को व्यवस्थित रखना और दैनिक कार्यक्रम बनाना शामिल हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए इन कौशलों का प्रशिक्षण व्यवस्थित एवं व्यावहारिक होना चाहिए। कार्यों को छोटे चरणों में विभाजित करके प्रदर्शन, अभ्यास और प्रतिक्रिया के माध्यम से सिखाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, रसोई में वस्तुओं को निश्चित स्थान पर रखना, स्पर्शनीय लेबल का उपयोग करना और उपकरणों की सुरक्षित कार्यप्रणाली समझना घरेलू कार्यों को अधिक व्यवस्थित बना सकता है।

समय प्रबंधन भी दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। बोलने वाली घड़ी, मोबाइल की सहायक सुविधाएँ और श्रव्य अनुस्मारक व्यक्ति को दैनिक कार्यों की योजना बनाने में सहायता कर सकते हैं। वस्तुओं को उपयोग के बाद निश्चित स्थान पर रखना और घर की व्यवस्था में अनावश्यक बदलाव से बचना भी उपयोगी होता है।

परिवार को व्यक्ति को स्वयं कार्य करने का पर्याप्त अवसर देना चाहिए। अत्यधिक सहायता प्रदान करने से व्यावहारिक कौशल सीखने के अवसर कम हो सकते हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति को सुरक्षित और प्रभावी ढंग से दैनिक कार्य करने में सक्षम बनाना होना चाहिए।

11.7 अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता

अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता दृष्टिबाधित व्यक्तियों की स्वतंत्रता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अभिमुखीकरण का अर्थ अपने आसपास के वातावरण, दिशा, स्थान और वस्तुओं के संबंध को समझना है। गतिशीलता का अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुरक्षित तथा प्रभावी ढंग से पहुँचना है।

दृष्टिबाधित वयस्कों को घर, कार्यस्थल, बाजार, शिक्षण संस्थान और सार्वजनिक परिवहन के बीच यात्रा करने की आवश्यकता हो सकती है। इसके लिए मार्ग की योजना बनाना, श्रव्य संकेतों को पहचानना, स्थानिक जानकारी का उपयोग करना, सुरक्षित सड़क पार करना और आवश्यकता पड़ने पर सहायता माँगना सीखना उपयोगी है।

सफेद छड़ी, उपयुक्त गतिशीलता प्रशिक्षण, मोबाइल नेविगेशन और अन्य सहायक साधन स्वतंत्र आवागमन में सहायता कर सकते हैं। उपकरण का चयन व्यक्ति की आवश्यकताओं और प्रशिक्षित विशेषज्ञ के मार्गदर्शन के अनुसार किया जाना चाहिए।

केवल व्यक्ति को प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं है। सार्वजनिक मार्ग, फुटपाथ, परिवहन केंद्र और भवन भी सुलभ होने चाहिए। फुटपाथों पर बाधाएँ, अनियोजित निर्माण और केवल दृश्य संकेतों पर निर्भर व्यवस्था दृष्टिबाधित व्यक्तियों के आवागमन को कठिन बना सकती है। इसलिए व्यक्तिगत प्रशिक्षण और पर्यावरणीय सुलभता दोनों आवश्यक हैं।

11.8 आवास एवं सामाजिक सहभागिता

वयस्कता में व्यक्ति अपनी पसंद, आर्थिक परिस्थितियों और आवश्यक सहायता के अनुसार निवास की व्यवस्था चुन सकता है। कुछ व्यक्ति परिवार के साथ रहना पसंद करते हैं, जबकि कुछ स्वतंत्र आवास या समर्थित जीवन-व्यवस्था को प्राथमिकता दे सकते हैं। किसी एक व्यवस्था को सभी दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।आवास का वातावरण सुरक्षित और सुविधाजनक होना चाहिए। वस्तुओं की निश्चित व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश, आवश्यकतानुसार उच्च कंट्रास्ट, सुलभ घरेलू उपकरण और स्पष्ट मार्ग दैनिक जीवन को सरल बना सकते हैं।

सामाजिक सहभागिता में मित्रों से मिलना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना, पुस्तकालय जाना, खेलों में हिस्सा लेना और सामुदायिक गतिविधियों में योगदान देना शामिल है। इन गतिविधियों में भागीदारी के लिए सुलभ सूचना, परिवहन और सम्मानजनक सामाजिक व्यवहार आवश्यक हैं।

समाज को दृष्टिबाधित व्यक्तियों को केवल सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के रूप में नहीं देखना चाहिए। वे भी समुदाय के सक्रिय सदस्य, पेशेवर, कलाकार, शिक्षक, उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता हो सकते हैं। समान अवसर और सुलभ वातावरण सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देते हैं।

11.9 रोजगार एवं आर्थिक स्वतंत्रता

रोजगार वयस्क जीवन में आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक पहचान और आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण माध्यम है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसर उनकी शिक्षा, रुचि, कौशल और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार विकसित किए जाने चाहिए।व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता, संचार कौशल और कार्यस्थल संबंधी अनुभव रोजगार की तैयारी में उपयोगी हैं। सहायक तकनीक और उचित समायोजन के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति विभिन्न कार्यालयी, शैक्षिक, तकनीकी और सेवा संबंधी कार्यों में योगदान दे सकते हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता में आय अर्जित करने के साथ-साथ बजट बनाना, बचत करना, बिलों का भुगतान करना और वित्तीय निर्णय लेना भी शामिल है। व्यक्ति को बैंकिंग सेवाओं, डिजिटल भुगतान और वित्तीय दस्तावेजों तक सुलभ पहुँच मिलनी चाहिए।डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करते समय सुरक्षित प्रमाणीकरण, मजबूत पासवर्ड और गोपनीय जानकारी की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। बैंकिंग सेवाओं को स्क्रीन रीडर और अन्य सहायक तकनीकों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए।

परिवार को आर्थिक मामलों में सहयोग करते समय व्यक्ति की सहमति और निर्णय का सम्मान करना चाहिए। आर्थिक स्वतंत्रता का उद्देश्य व्यक्ति को अपने संसाधनों के उपयोग और भविष्य की योजना पर अधिक नियंत्रण प्रदान करना है।

11.10 विवाह, संबंध एवं पारिवारिक जीवन

वयस्कता में मित्रता, भावनात्मक संबंध, विवाह और परिवार से संबंधित निर्णय महत्वपूर्ण हो सकते हैं। दृष्टिबाधित व्यक्तियों को भी अपने संबंधों और पारिवारिक जीवन के संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार है। दृष्टिबाधिता अपने-आप में किसी व्यक्ति की संबंध बनाने या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने की क्षमता को निर्धारित नहीं करती।स्वस्थ संबंधों में पारस्परिक सम्मान, संवाद, सहमति, विश्वास और जिम्मेदारियों का उचित बँटवारा महत्वपूर्ण है। परिवार को दृष्टिबाधित व्यक्ति की पसंद और व्यक्तिगत निर्णयों का सम्मान करना चाहिए। अनावश्यक प्रतिबंध या यह मान लेना कि दृष्टिबाधित व्यक्ति स्वतंत्र संबंध नहीं बना सकता, उसकी स्वायत्तता को सीमित कर सकता है।

पारिवारिक जीवन में घरेलू कार्यों, आर्थिक जिम्मेदारियों, बच्चों की देखभाल और दैनिक कार्यक्रमों का प्रबंधन शामिल हो सकता है। उपयुक्त संगठन, सहायक तकनीक और आवश्यकता के अनुसार सामाजिक सहयोग इन जिम्मेदारियों को निभाने में मदद कर सकते हैं।

परिवार और पुनर्वास विशेषज्ञों को व्यक्ति को आवश्यक जानकारी तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना चाहिए। सहायता का उद्देश्य व्यक्ति के निर्णयों को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि उसे सूचित और स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम बनाना होना चाहिए।

11.11 सामाजिक एवं मनोसामाजिक मुद्दे

दृष्टिबाधित व्यक्तियों का मनोसामाजिक अनुभव परिवार, समाज, शिक्षा, रोजगार और व्यक्तिगत संबंधों से प्रभावित होता है। सामाजिक उपेक्षा, उपहास, भेदभाव, अति-संरक्षण और कम अपेक्षाएँ आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित कर सकती हैं।

कई बार व्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन उसकी वास्तविक योग्यता के बजाय दृष्टिबाधिता के आधार पर किया जाता है। इससे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक संबंधों में अवसर सीमित हो सकते हैं। इसके विपरीत, सम्मानजनक व्यवहार, समान अवसर और सहयोगात्मक वातावरण व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का उपयोग करने में सहायता देते हैं।आत्मविश्वास विकसित करने के लिए वास्तविक जीवन के अनुभव, निर्णय लेने के अवसर, कौशल प्रशिक्षण और सामाजिक सहभागिता महत्वपूर्ण हैं। सहकर्मी समूह, परामर्श और सामुदायिक गतिविधियाँ व्यक्ति को अनुभव साझा करने और समस्याओं के समाधान खोजने में मदद कर सकती हैं।

परिवार,शिक्षक और नियोक्ता को व्यक्ति की क्षमताओं तथा उपलब्धियों को पहचानना चाहिए। दृष्टिबाधिता के कारण होने वाली कठिनाइयों को स्वीकार करते हुए भी व्यक्ति की पहचान को केवल उसकी दिव्यांगता तक सीमित नहीं करना चाहिए।

11.12 स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं डिजिटल पहुँच

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच प्रत्येक वयस्क का महत्वपूर्ण अधिकार है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, अपॉइंटमेंट, दवा निर्देश और चिकित्सकीय दस्तावेज उपयुक्त सुलभ प्रारूप में उपलब्ध होने चाहिए। स्वास्थ्यकर्मियों को सीधे व्यक्ति से संवाद करना चाहिए तथा उसकी निजता और निर्णय का सम्मान करना चाहिए।

व्यक्तिगत सुरक्षा में सुरक्षित आवागमन, घर और कार्यस्थल की व्यवस्था, आपातकालीन संपर्क तथा आवश्यक सहायता माँगने की क्षमता शामिल है। सुरक्षा प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित निर्णय लेने में सक्षम बनाना है।

डिजिटल पहुँच भी वयस्क जीवन का आवश्यक भाग बन गई है। ऑनलाइन बैंकिंग, सरकारी सेवाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य परामर्श और रोजगार आवेदन के लिए अभिगम्य डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी हैं। वेबसाइट और मोबाइल अनुप्रयोगों का स्क्रीन रीडर तथा अन्य सहायक तकनीकों के साथ कार्य करना आवश्यक है।

डिजिटल सुरक्षा के अंतर्गत व्यक्तिगत जानकारी की रक्षा, पासवर्ड की सुरक्षा, संदिग्ध संदेशों की पहचान और सुरक्षित भुगतान के तरीके शामिल हैं। इन कौशलों का प्रशिक्षण दृष्टिबाधित व्यक्तियों की डिजिटल स्वतंत्रता को मजबूत कर सकता है।

11.13 पुनर्वास सेवाओं की भूमिका

पुनर्वास सेवाएँ दृष्टिबाधित व्यक्तियों को दैनिक जीवन-कौशल, अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता, सहायक तकनीक, व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक सहभागिता में सहयोग प्रदान कर सकती हैं।

विशेष शिक्षक व्यक्ति की शैक्षिक एवं कार्यात्मक आवश्यकताओं का आकलन कर सकते हैं। अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता प्रशिक्षक स्वतंत्र आवागमन के कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं। व्यावसायिक परामर्शदाता रोजगार संबंधी विकल्पों, प्रशिक्षण और कार्यस्थल की आवश्यकताओं पर मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

पुनर्वास सेवाएँ व्यक्ति-केंद्रित होनी चाहिए। व्यक्ति की पसंद, लक्ष्य और प्राथमिकताओं को समझे बिना बनाई गई योजना प्रभावी नहीं हो सकती। सेवाओं का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि उनसे व्यक्ति की स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और सामाजिक भागीदारी में कितना सुधार हुआ है।समुदाय-आधारित पुनर्वास में परिवार, स्थानीय संस्थाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार कार्यालयों और सामाजिक संगठनों के बीच समन्वय महत्वपूर्ण है। इससे व्यक्ति को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में आवश्यक सहायता मिल सकती है।

11.14 वयस्कता संक्रमण योजना

वयस्कता संक्रमण योजना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किशोरावस्था से वयस्क जीवन की ओर बढ़ रहे दृष्टिबाधित व्यक्तियों को भविष्य की भूमिकाओं के लिए तैयार किया जाता है। इसमें शिक्षा, रोजगार, स्वतंत्र जीवन, वित्तीय प्रबंधन, आवागमन, सामाजिक संबंध और नागरिक सहभागिता से संबंधित लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

योजना बनाते समय व्यक्ति की रुचियों, वर्तमान कौशलों और भविष्य की आकांक्षाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। परिवार, शिक्षक, विशेष शिक्षक और पुनर्वास विशेषज्ञ सहयोग कर सकते हैं, लेकिन निर्णय प्रक्रिया में व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

संक्रमण योजना में व्यावसायिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, डिजिटल कौशल, दैनिक जीवन-कौशल और स्वतंत्र यात्रा के अवसर शामिल किए जा सकते हैं। व्यक्ति को बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवाओं, सरकारी सुविधाओं और सामाजिक गतिविधियों तक पहुँचने के व्यावहारिक तरीके भी सिखाए जाने चाहिए।

योजना की नियमित समीक्षा आवश्यक है। व्यक्ति की रुचियाँ, आवश्यकताएँ और परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। इसलिए लक्ष्य और सहायता की व्यवस्था भी समय-समय पर संशोधित की जानी चाहिए।

11.15 प्रमुख चुनौतियाँ एवं समाधान

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की वयस्कता से जुड़ी चुनौतियों में सामाजिक पूर्वाग्रह, रोजगार के सीमित अवसर, असुलभ परिवहन, सुलभ आवास की कमी, तकनीकी बाधाएँ और पारिवारिक अति-संरक्षण शामिल हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए व्यक्तिगत प्रशिक्षण के साथ सामाजिक एवं संस्थागत स्तर पर भी प्रयास आवश्यक हैं।

शिक्षा संस्थानों को वयस्क जीवन की तैयारी में दैनिक जीवन-कौशल, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल सुरक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नागरिक अधिकारों को शामिल करना चाहिए। परिवारों को व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा निर्णय क्षमता को प्रोत्साहित करना चाहिए।

नियोक्ताओं को योग्यता-आधारित चयन, सुलभ कार्यस्थल और उचित समायोजन उपलब्ध कराने चाहिए। सार्वजनिक संस्थानों को परिवहन, भवनों, वेबसाइटों और सेवाओं की अभिगम्यता में सुधार करना चाहिए।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 समानता, गरिमा और समावेशन का महत्वपूर्ण कानूनी आधार प्रदान करता है। इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जागरूकता, सुलभ जानकारी और अधिकारों तक व्यावहारिक पहुँच आवश्यक है।

11.16 व्यावहारिक उदाहरण

उदाहरण 1: स्वतंत्र यात्रा

एक दृष्टिबाधित युवा रोजगार प्राप्त करने के बाद प्रतिदिन कार्यालय जाना चाहता है। उसे मार्ग पहचानने और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता प्रशिक्षण, यात्रा की योजना, सुलभ परिवहन जानकारी और कार्यालय तक पहुँच की व्यवस्था उपयोगी हो सकती है।

उदाहरण 2: डिजिटल बैंकिंग

एक दृष्टिबाधित वयस्क मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करना चाहता है, लेकिन संबंधित ऐप स्क्रीन रीडर के साथ ठीक से कार्य नहीं करता। इस समस्या के समाधान के लिए बैंक को अभिगम्यता में सुधार करना चाहिए और सुलभ विकल्प तथा शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया उपलब्ध करानी चाहिए।

उदाहरण 3: पारिवारिक अति-संरक्षण

एक परिवार अपनी दृष्टिबाधित बेटी को नौकरी करने और स्वतंत्र यात्रा करने से रोकता है। परिवार की सुरक्षा संबंधी चिंताओं को समझते हुए क्रमिक प्रशिक्षण, सुरक्षित मार्गों का अभ्यास और उचित तकनीक के उपयोग से स्वतंत्रता विकसित की जा सकती है। उद्देश्य व्यक्ति को अनावश्यक जोखिम में डालना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाना है।

11.17 सारांश

वयस्कता दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए आत्मनिर्णय, जिम्मेदारी, स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता का महत्वपूर्ण चरण है। इस अवस्था में दैनिक जीवन-कौशल, अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता, रोजगार, आर्थिक प्रबंधन, संबंध, स्वास्थ्य और नागरिक अधिकारों से संबंधित आवश्यकताएँ प्रमुख होती हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

स्वतंत्र जीवन का अर्थ सहायता से पूर्ण दूरी नहीं, बल्कि अपने जीवन के निर्णयों पर नियंत्रण रखना और आवश्यकता के अनुसार सम्मानजनक सहयोग प्राप्त करना है। परिवार, शिक्षण संस्थान, नियोक्ता, पुनर्वास विशेषज्ञ और सरकार की भूमिका इन आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण है।

यदि दृष्टिबाधित व्यक्तियों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, सुलभ वातावरण, सहायक तकनीक और समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे अधिक स्वतंत्र, सुरक्षित और अर्थपूर्ण जीवन जी सकते हैं।

11.18 स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. वयस्कता की अवधारणा को दृष्टिबाधिता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
2. दृष्टिबाधित व्यक्तियों की प्रमुख वयस्कता संबंधी आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।
3. स्वतंत्र जीवन की अवधारणा एवं उसके प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।
4. दैनिक जीवन-कौशल और अभिमुखीकरण एवं गतिशीलता के महत्व का विश्लेषण कीजिए।
5. आर्थिक स्वतंत्रता एवं वित्तीय साक्षरता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
6. विवाह एवं पारिवारिक जीवन में स्वायत्तता और सम्मान के महत्व की चर्चा कीजिए।
7. दृष्टिबाधित व्यक्तियों के मनोसामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।
8. वयस्कता संक्रमण योजना के प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।
9. स्वतंत्र जीवन को बढ़ावा देने में परिवार एवं पुनर्वास विशेषज्ञों की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।
10. दृष्टिबाधित व्यक्तियों के समावेशी वयस्क जीवन के लिए आवश्यक उपाय प्रस्तुत कीजिए।

11.19 संदर्भ हेतु

भारत सरकार — दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016।

Rehabilitation Council of India (RCI) — विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास संबंधी अध्ययन सामग्री।

Department of Empowerment of Persons with Disabilities — दिव्यांगजन सशक्तीकरण संबंधी आधिकारिक सामग्री।

World Health Organization (WHO) — दृष्टि, पुनर्वास और कार्यात्मक सहभागिता संबंधी प्रकाशन।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities (UNCRPD) — स्वतंत्र जीवन, समुदाय में समावेशन और रोजगार संबंधी प्रावधान।

दृष्टिबाधिता, स्वतंत्र जीवन, व्यावसायिक विकास और संक्रमण योजना पर प्रकाशित शोध-पत्र एवं अकादमिक पुस्तकें।

इकाई-12 : दृष्टिबाधिता के साथ-साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बच्चों के कार्यात्मक आँकलन के लिए शिक्षकों द्वारा तैयार किए जाने वाले उपकरणों का निर्माण।

Unit-12: Preparation of teacher made tools for functional assessment of visual impairment having additional disabilities with visual impairment

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 कार्यात्मक आँकलन की अवधारणा

12.3.1 आँकलन, परीक्षण और कार्यात्मक आँकलन से तात्पर्य

12.3.2 कार्यात्मक आँकलन बनाम मानकीकृत आँकलन

12.3.3 कार्यात्मक आँकलन के उद्देश्य

12.4 दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के आँकलन की चुनौतियाँ

12.4.1 दृष्टिबाधिता के साथ बौद्धिक दिव्यांगता वाले बालक

12.4.2 दृष्टिबाधिता के साथ श्रवणबाधिता (बधिरांधता) वाले बालक

12.4.3 दृष्टिबाधिता के साथ प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात वाले बालक

12.4.4 दृष्टिबाधिता के साथ ऑटिज्म वाले बालक

12.5 कार्यात्मक आँकलन की प्रमुख विशेषताएँ

12.6 कार्यात्मक आँकलन के प्रमुख सिद्धांत

12.7 कार्यात्मक आँकलनके प्रमुख क्षेत्र

12.7.1कार्यात्मक दृष्टि आँकलन

12.7.2दैनिक जीवन क्रियाओं

12.7.3अनुस्थिति एवं गतिशीलता

12.7.4संप्रेषण कौशल

12.7.5सामाजिक-भावनात्मक विकास

12.7.6संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक-पूर्व कौशल

12.7.7संवेदी-गामक कौशल

12.8 शिक्षक-निर्मित आँकलन उपकरण की अवधारणा एवं महत्व

12.8.1 शिक्षक-निर्मित उपकरणों तथा मानकीकृत उपकरणों के मध्य पूरकता

12.8.2 शिक्षक-निर्मित उपकरणों की सीमाएँ

12.9 दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के लिए उपकरण निर्माण की प्रक्रिया

12.10 कार्यात्मक उपकरणों के प्रकार एवं दृष्टांत प्रारूप

12.10.1 चेकलिस्ट का दृष्टांत प्रारूप

12.10.2 रेटिंग स्केल का दृष्टांत प्रारूप

12.10.3साक्षात्कार अनुसूची (माता-पिता/देखभालकर्ता हेतु) का दृष्टांत प्रारूप

12.10.4 कार्य-विश्लेषण प्रपत्रका दृष्टांत प्रारूप

12.10.5प्रत्यक्ष अवलोकन अभिलेख / पोर्टफोलियो का दृष्टांत प्रारूप

12.10.6 अनुस्थिति एवं गतिशीलता चेकलिस्ट का दृष्टांत प्रारूप

12.11 कार्यात्मक उपकरण निर्माण में ध्यान रखने योग्य सावधानियाँ

12.12 उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करना

12.13 सारांश

12.14 शब्दावली

12.15 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.16 संदर्भ ग्रंथ सूची

12.17 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

विशेष एवं समावेशी शिक्षा में आँकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक है। सामान्य शिक्षा में आँकलन प्रायः विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि, ज्ञान, समझ तथा कौशलों को मापने पर केंद्रित रहता है; किंतु दिव्यांग विद्यार्थियों के मामले में आँकलन का उद्देश्य अधिक व्यापक होता है। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि विद्यार्थी केवल "क्या जानता है" नहीं, बल्कि "वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में क्या कर सकता है", "किस प्रकार कर सकता है", "किस स्तर की सहायता के साथ कर सकता है" और "किन पर्यावरणीय परिस्थितियों में उसका प्रदर्शन बेहतर या कमजोर हो जाता है"। इस व्यापक दृष्टिकोण को कार्यात्मक आँकलनकहा जाता है (McLoughlin et al., 2018)।

दृष्टिबाधिता के साथ यदि किसी बालक में अन्य दिव्यांगता भी उपस्थित हो, तो आँकलन की जटिलता और बढ़ जाती है। उदाहरणतः दृष्टिबाधिता तथा बौद्धिक दिव्यांगता, दृष्टिबाधिता तथा श्रवणबाधिता, दृष्टिबाधिता तथा प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात, अथवा दृष्टिबाधिता तथा ऑटिज्म का संयोजन व्यक्ति के संप्रेषण, गतिशीलता, दैनिक जीवन कौशल, सामाजिक सहभागिता और शैक्षणिक प्रदर्शन को अलग-अलग तथा परस्पर संबंधित रूप से प्रभावित कर सकता है। बहु-दिव्यांगता वाले बच्चों के लिए एकल दिव्यांगता पर केंद्रित आँकलन उपकरण अनेक बार पर्याप्त नहीं होते। भारत के राष्ट्रीय बहुदिव्यांगता जन सशक्तिकरण संस्थानद्वारा प्रकाशित'बहुदिव्यांग व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम चेकलिस्ट' भी इस बात पर बल देती है कि विभिन्न दिव्यांगताओं के संयोजन वाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के कारण एकल-दिव्यांगता आधारित उपकरणों से शैक्षिक कार्यक्रम की पर्याप्त योजना करना कठिन हो सकता है; इसलिए जीवन-कौशल, सामाजिक-भावात्मक कौशल, संचार, शैक्षणिक तथा स्वतंत्र जीवन जैसे विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत रूप से देखना आवश्यक है (NIEPMD, 2022)। विश्व स्वास्थ्य संगठनका 'कार्यप्रणाली, विकलांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण' (आईसीएफ) भी व्यक्ति की कार्यक्षमता को केवल शारीरिक

या संवेदी हानि से नहीं जोड़ता, बल्कि गतिविधि, सहभागिता और पर्यावरणीय कारकों के साथ देखता है। आईसीएफ का मूल संदेश यह है कि कार्यक्षमता संदर्भ-निर्भर होती है; इसलिए व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच अंतःक्रिया को आँकलन में स्थान मिलना चाहिए।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:-

1) कार्यात्मक आँकलन की अवधारणा स्पष्ट कर सकेंगे;
2) कार्यात्मक आँकलन के उद्देश्य एवं विशेषता बता सकेंगे;
3) दृष्टिबाधिता के साथ-साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के कार्यात्मक आँकलन की आवश्यकताओं को स्पष्ट कर सकेंगे;
4) दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के आँकलन की चुनौतियाँ का वर्णन कर सकेंगें;
5) कार्यात्मक आँकलन के प्रमुख सिद्धांतों का विवेचन कर सकेंगे;
6) कार्यात्मक आँकलन के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे;
7) शिक्षक निर्मित कार्यात्मक आँकलन उपकरण की अवधारणा एवं महत्व का विवेचन कर सकेंगे;
8) शिक्षक-निर्मित मूल्यांकन उपकरणों के निर्माण की व्यवस्थित प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
9) चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, साक्षात्कार अनुसूची तथा कार्य-विश्लेषण प्रपत्र जैसे उपकरणों के प्रारूप तैयार कर सकेंगे;
10) उपकरण निर्माण के समय ध्यान रखने वाली सावधानियों तथा उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के तरीकों की व्याख्या कर सकेंगे।

12.3 कार्यात्मक आँकलनकी अवधारणा

कार्यात्मक आँकलन वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत बालक के वास्तविक, प्राकृतिक तथा दैनिक जीवन के वातावरण में उसके व्यवहार, कौशल तथा योग्यताओं का व्यवस्थित रूप से अवलोकन एवं दस्तावेज़ीकरण किया जाता है, ताकि यह जाना जा सके कि बालक विभिन्न कार्यों को किस सीमा तक, किस प्रकार सेऔर किन परिस्थितियों में सम्पन्न कर सकता है। इसका केंद्र-बिंदु "बालक क्या नहीं कर सकता" न होकर "बालक क्या और कैसे कर सकता है, तथा उसे और अधिक स्वतंत्र बनाने के लिए क्या आवश्यक है" होता है। कार्यात्मक आँकलन की अवधारणा समझने के पश्चात अब हम लोग आँकलन, परीक्षण और कार्यात्मक आँकलन के मध्य अंतर को समझते हैं|

12.3.1 आँकलन, परीक्षण और कार्यात्मक आँकलन से तात्पर्य

आँकलन एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के बारे में सूचना का व्यवस्थित संग्रहण, विश्लेषण और शैक्षिक निर्णय के लिए उपयोग किया जाता है। परीक्षणएक विशिष्ट उपकरण होता है, जबकि आँकलन एक व्यापक निर्णय-निर्माण प्रक्रिया है। कार्यात्मक आँकलन इसी व्यापक आँकलन प्रक्रिया का वह पक्ष है जिसमें वास्तविक जीवन की गतिविधियों, कौशलों, प्रदर्शन और आवश्यक सहायता की पहचान की जाती है। इसका लक्ष्य केवल यह निर्धारित करना नहीं है कि व्यक्ति “कुशल” है या “अकुशल”; बल्कि यह जानना है कि किसी कार्य को करने के लिए उसेकितनी सहायता, किस प्रकार की सहायता और किस परिस्थिति में सहायताचाहिए (McLoughlin et al., 2018; Bruce et al., 2018) ।

उदाहरण के लिए “विद्यार्थी स्वयं भोजन करता है” एक बहुत सामान्य कथन है। कार्यात्मक आँकलन करते समय आप इसे निम्न प्रश्नों में बदल सकते है:

i. क्या विद्यार्थी भोजन की जगह पहचानता है?
ii. क्या वह थाली पहचानता है?
iii. क्या वह चम्मच का स्थान जानता है?
iv. क्या वह चम्मच उठा सकता है?
v. क्या वह भोजन को चम्मच से उठा सकता है?
vi. क्या वह उसे मुँह तक ला सकता है?
vii. क्या उसे किसी संकेत की आवश्यकता है?
viii. क्या वह कार्य केवल परिचित वातावरण में करता है?

इस दृष्टिकोण से आपको शिक्षण-कार्य के लिए अधिक उपयोगी सूचना मिलती है।

12.3.2 कार्यात्मक आँकलन बनाम मानकीकृत आँकलन

आधार	कार्यात्मक आँकलन	मानकीकृत आँकलन
परिवेश	प्राकृतिक/वास्तविक (कक्षा, घर)	कृत्रिम/परीक्षण-कक्ष
तुलना का आधार	बालक की अपनी प्रगति से तुलना	अन्य बालकों से तुलना
उपकरण	शिक्षक-निर्मित, लचीला	पूर्व-निर्मित, मानकीकृत
फोकस	दैनिक जीवन में कार्य-निष्पादन	योग्यता का स्कोर/रैंक
उपयोगिता	व्यक्तिगत शिक्षण योजना निर्माण	वर्गीकरण, प्रमाणन

12.3.3 कार्यात्मक आँकलन के उद्देश्य

1) बालक की वर्तमान निष्पादन-स्तरकी यथार्थ जानकारी प्राप्त करना।
2) बालक की शक्तियोंएवं आवश्यकताओं की पहचान करना।
3) व्यक्तिगत शिक्षण योजना हेतु यथार्थवादी एवं मापनीय लक्ष्य निर्धारित करना।
4) उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों, सहायक उपकरणोंतथा अनुकूलनोंका चयन करना।
5) समय-समय पर बालक की प्रगति की निगरानी करना तथा शिक्षण-विधि में आवश्यक संशोधन करना।
6) माता-पिता, अन्य शिक्षकों तथा चिकित्सा/पुनर्वास दलके साथ सार्थक संप्रेषण हेतु ठोस आधार प्रदान करना।

12.4 दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के आँकलन की चुनौतियाँ

दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगता होने पर एक दिव्यांगता की विशेषताएँ दूसरी दिव्यांगता के प्रभाव को बढ़ा सकती हैं। अतः इस प्रकार के बालकों के लिए "एक परीक्षण–एक निष्कर्ष" दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। आइये अब हम कुछ प्रमुख दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों की कार्यात्मक आंकलन हेतु कुछ चुनौतियों को देखते हैं|

12.4.1 दृष्टिबाधिता के साथ बौद्धिक दिव्यांगता वाले बालक

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)
ऐसे बालकों के लिए अमूर्त निर्देश कठिन होते हैं; अनुभव आधारित अधिगम आवश्यक होता है; कार्य को छोटे चरणों में विभाजित करना पड़ता है; तथा पुनरावृत्ति एवं संरचना आवश्यक होती है।

12.4.2 दृष्टिबाधिता के साथ श्रवणबाधिता (बधिरांधता) वाले बालक

ऐसे बालक के लिए दृश्य और श्रवण दोनों पारंपरिक सूचना मार्ग सीमित होते हैं। इसलिए स्पर्शात्मक संकेत, वस्तु-संकेत, स्पर्श-आधारित संचार, व्यक्तिगत दिनचर्या तथा अन्य बहु-संवेदी रणनीतियाँ महत्वपूर्ण होती हैं।

12.4.3 दृष्टिबाधिता के साथ प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात वाले बालक

यहाँ बालक की समझ अपेक्षाकृत अच्छी होने के बावजूद गामक प्रतिक्रिया सीमित होता है। अतः यदि आप केवल लिखित प्रतिक्रिया का उपयोग करते हैं तो वह विद्यार्थी की वास्तविक क्षमता को कम आँक सकता है। इसलिए उत्तर के वैकल्पिक माध्यमों जैसे-मौखिक प्रतिक्रिया, ब्रेल, स्पर्शात्मक प्रतिक्रिया, संवर्धित एवं वैकल्पिक संप्रेषण, कंप्यूटर या अन्य सहायक तकनीक—को स्वीकार करना आवश्यक होता है।

12.4.4 दृष्टिबाधिता के साथ स्वलीनता (ऑटिज्म) वाले बालक

ऐसे बालकों में संवेदी प्रसंस्करण, संप्रेषण, सामाजिक सहभागिता तथा व्यवहार से संबंधित विशिष्ट आवश्यकताएँ हो सकती हैं। आँकलन को रूढ़िवादीया कमियों पर केंद्रित होने के बजाय व्यक्ति की संचार शैली, संवेदी प्राथमिकताएँ और पर्यावरणीय ज्ञानको समझाने का प्रयास करना चाहिए।

12.5 कार्यात्मक आँकलन की प्रमुख विशेषताएँ

एक अच्छे कार्यात्मक आँकलन की निम्न विशेषताएँ होती है:-

1. व्यक्ति-केंद्रित
2. प्रासंगिक
3. कार्य-विशिष्ट
4. प्राकृतिक संदर्भ आधारित
5. सुगम्य
6. लचीला
7. प्रदर्शन-आधारित

8. सहायता-संवेदी
9. शैक्षिक निर्णयों से जुड़ा हुआ
10. पुनर्मूल्यांकन योग्य

12.6कार्यात्मक आँकलन के प्रमुख सिद्धांत

- **समग्रता:**बालक के सभी पक्षों जैसे- शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक आदि का एक साथ आँकलन।
- **निरंतरता:**कार्यात्मक आँकलनएक बार की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सतत् चलने वाली प्रक्रिया है।
- **सहभागितापूर्ण:**कार्यात्मक आँकलन में माता-पिता, चिकित्सक, फिजियोथेरेपिस्ट आदि की भागीदारी।
- **पारिस्थितिक वैधता:**कार्यात्मक आँकलन बालक के वास्तविक परिवेश में होनी चाहिए।
- **व्यक्ति-केंद्रित:**कार्यात्मक आँकलन प्रत्येक बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

ये सिद्धांत प्रामाणिक आँकलनके उस दृष्टिकोण से मेल खाते हैं जिसके अनुसार आँकलनबालक की प्राकृतिक दिनचर्यामें, परिचित व्यक्तियों द्वारा, तथा सार्थक क्रियाकलापों के माध्यम से किया जाना चाहिए, ताकि प्राप्त जानकारी वास्तविक तथा उपयोगी हो (Bagnato et al., 2010)।

स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न– भाग 1

1. कार्यात्मक आँकलनतथा मानकीकृत आँकलनमें कोई तीन अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के लिए मानकीकृत परीक्षण प्रायः अपर्याप्त क्यों माने जाते हैं?

12.7कार्यात्मक आँकलनके प्रमुख क्षेत्र

अब हम लोग कार्यात्मक आँकलन किस- किस क्षेत्र में किया जा सकता है, उसकी चर्चा करते हैं| दृष्टिबाधिता सहित अन्य दिव्यांगता वाले बालकों के समग्र आँकलन हेतु निम्नलिखित क्षेत्रों को सम्मिलितकिया जाता है:-

12.7.1कार्यात्मक दृष्टि आँकलन

इसमें यह देखा जाता है कि बालक अपनी अवशेषदृष्टि का दैनिक क्रियाओं में किस प्रकार उपयोग करता है, जैसे प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया, वस्तुओं को देखना व पहचानना, रंग-भेद, दूरी पर वस्तु को देखना, गतिशील वस्तु का अनुसरण करना, तथा किस दूरी व प्रकाश-स्थिति में बालक सर्वोत्तम देख पाता है (Aitken & Buultjens, 1992)। यह आँकलन चिकित्सीय नेत्र-परीक्षण से भिन्न होता है, क्योंकि इसका केंद्र-बिंदु बालक की दृष्टि का दैनिक जीवन के सार्थक कार्यों में वास्तविक उपयोग होता है, न कि केवल दृष्टि-तीक्ष्णताका मापन।

12.7.2दैनिक जीवन क्रियाओं

दैनिक जीवन क्रियाएँ वे मूलभूत क्रियाएँ हैं जिन पर किसी भी व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सम्मानपूर्ण जीवन निर्भर करता है। बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के लिए इन क्रियाओं में दक्षता प्राप्त करना विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि इनमें दृष्टि, स्पर्श, संतुलन तथा क्रम-बद्ध गति,इन सभी का समन्वय आवश्यक होता है। इस क्षेत्र में आँकलन निम्न उप-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है—

- **भोजन-संबंधी क्रियाएँ:**चम्मच/कांटे का उपयोग, गिलास से पीना, भोजन चबाना-निगलना, स्वयं भोजन परोसना।
- **वस्त्र-संबंधी क्रियाएँ:**बटन/ज़िप खोलना-बंद करना, जूते पहनना, वस्त्र के आगे-पीछे की पहचान करना।
- **स्वच्छता-संबंधी क्रियाएँ:**हाथ-मुँह धोना, दाँत साफ करना, बाल संवारना, नाखून काटना (सहयोग सहित)।
- **शौचालय-संबंधी क्रियाएँ:**आवश्यकता का संकेत देना, शौचालय तक स्वतंत्र रूप से पहुँचना, स्वच्छता बनाए रखना।
- **गृह-प्रबंधन कौशल (आयु के अनुसार):**वस्तुएँ यथास्थान रखना, सरल घरेलू कार्यों में सहभागिता।

इन क्षेत्रों का आँकलन करते समय आपको यह भी दर्ज करना चाहिए कि बालक किस स्तर की सहायता के साथ कार्य करता है, जैसे- पूर्ण शारीरिक सहयोग, आंशिक शारीरिक संकेत, मौखिक संकेतअथवा पूर्ण स्वतंत्रता। यह स्तरीकरण आगे चलकर व्यक्तिगत शैक्षिक योजनामें लक्ष्य निर्धारण हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

12.7.3अनुस्थिति एवं गतिशीलता

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

इसके अंतर्गत यह आँकलन किया जाता है कि बालक अपने परिवेश में स्वयं को किस प्रकार उन्मुख करता है तथा सुरक्षित रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति करने की उसकी क्षमता कितनी है। अनुस्थिति एवं गतिशीलता का कार्यात्मक आँकलन करते समय आपको निम्नलिखित पहलुओं का अवलोकन किया जाना चाहिए:-

- परिचित मार्गों, जैसे कक्षा से शौचालय तक, पर स्वतंत्र रूप से चलने की क्षमता;
- बाधाओं को पहचानने तथा उनसे बचने की क्षमता, चाहे दृष्टि से हो या स्पर्श/श्रवण संकेतों से;
- सफेद छड़ी अथवा किसी सहयोगी के सहारे चलने का कौशल;
- ध्वनि-स्रोत की दिशा पहचानना, विशेषकर उन बालकों में जिनकी दृष्टि अत्यंत सीमित है;
- सीढ़ियाँ चढ़ना-उतरना, दरवाज़े खोलना, तथा भीड़-भाड़ वाले स्थान में सुरक्षित रूप से गति करना।

बहु-दिव्यांगता की स्थिति में जैसे यदि बालक में प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात के कारण गामकसीमाएँ भी हों तो अनुस्थिति एवं गतिशीलताआँकलन में फिजियोथेरेपिस्ट के परामर्श की आवश्यकता होती है, ताकि गतिशीलता संबंधी लक्ष्य बालक की शारीरिक क्षमता के अनुरूप ही निर्धारित किए जाएँ।

12.7.4संप्रेषण कौशल

संप्रेषण कौशल के अंतर्गत अभिव्यक्तिएवं ग्रहणशील संप्रेषण जैसे- मौखिक भाषा, संकेत, इशारे, चित्र-आधारित संप्रेषण अथवा वैकल्पिक एवं संवर्धित संप्रेषणउपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जिन बालकों में दृष्टिबाधिता के साथ अतिरिक्त दिव्यांगता भी हो, उनके लिए स्पर्श-आधारितसंप्रेषण, हाथ के निचे हाथ (हैंड-अंडर-हैंड) तकनीक विशेष रूप से उपयोगी पाई गई हैं, क्योंकि ये बालक की सीमित दृष्टि व श्रवण की पूर्ति स्पर्श-संवेदन के माध्यम से करती हैं (Chen & Downing, 2006)।

12.7.5सामाजिक-भावनात्मक विकास

सामाजिक-भावनात्मक से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों के साथ अंतःक्रिया, सामाजिक नियमों की समझ, भावनाओं की अभिव्यक्ति एवं नियंत्रण से होता है। दृष्टिबाधिता सहित अन्य दिव्यांगता वाले बालकों के सामाजिक-भावनात्मक विकास के कार्यात्मक आँकलन के लिए आप निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं:-

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

- परिचित व स्नेह भाव व्यक्त करने का तरीका (जैसे मुस्कुराना, हाथ बढ़ाना, ध्वनि निकालना);
- साथियों के साथ खेल अथवा समूह-गतिविधि में सहभागिता की सीमा;
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, साझा करना, तथा सरल निर्देशों का पालन करना;
- असंतोष, भय अथवा उत्तेजना जैसी भावनाओं को सामाजिक रूप से स्वीकार्य ढंग से व्यक्त करना;
- नए व्यक्ति अथवा नए परिवेश के प्रति अनुकूलनकी क्षमता।

चूँकि दृष्टिबाधिता वाले बालकों के लिए अनेक सामाजिक संकेत, जैसे चेहरे के हाव-भाव, इशारे आदि दृष्टि पर आधारित होते हैं, अतः कार्यात्मक आँकलन करते समय आप यह भी देखें कि बालक इन संकेतों की भरपाई किन वैकल्पिक माध्यमों, जैसे- स्पर्श, स्वर-लहजा, निकटता आदि के द्वारा करता है।

12.7.6संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक-पूर्व कौशल

संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक-पूर्व कौशल से तात्पर्य बालकों में ध्यान अवधि, स्मृति, समस्या-समाधान, वर्गीकरण, संख्या-पूर्व एवं भाषा-पूर्व कौशल का पूर्ण रूप से विकसित होना। संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक-पूर्व कौशल के कार्यात्मक आँकलन में निम्न पहलू सम्मिलित किए जाते हैं:-

- **ध्यान-अवधि:**बालक किसी क्रियाकलाप पर कितनी देर तक ध्यान केंद्रित रख पाता है;
- **वस्तु-स्थायित्व:**बालक में छिपाई गई वस्तु को खोजने की क्षमता;
- **वर्गीकरण एवं मिलान:**आकार, बनावट अथवा प्रकार के अनुसार वस्तुओं को छाँटना;
- **कारण-प्रभाव की समझ:**किसी बटन को दबाने पर ध्वनि/प्रकाश उत्पन्न होने जैसी क्रियाओं की समझ;
- **अनुक्रम:**दैनिक दिनचर्या के चरणों का क्रम समझना;
- **संख्या-पूर्व एवं भाषा-पूर्व अवधारणाएँ:** अधिक-कम, बड़ा-छोटा, अंदर-बाहर जैसी बुनियादी अवधारणाओं की समझ।

चूँकि इन बालकों में मानकीकृत बुद्धि-परीक्षण प्रायः दृष्टि व भाषा पर निर्भर होते हैं, अतः कार्यात्मक आँकलन में स्पर्श-आधारित तथा क्रियाकलाप-आधारितकार्यों के माध्यम से संज्ञानात्मक क्षमता का आकलन करना अधिक उपयुक्त रहता है।

12.7.7संवेदी-गामक कौशल

संवेदी-गामक कौशल से तातपर्य स्थूल गामक एवं सूक्ष्म गामककौशल, संवेदी एकीकरणसे संबंधित कौशलों का बालक में स्थायित्व होना। संवेदी-गामक कौशल के कार्यात्मक आँकलन में सम्मिलित किए जाने वाले क्षेत्र निम्नलिखित हैं:-

- **स्थूल गामक कौशल**:बैठना, खड़ा होना, चलना, दौड़ना, संतुलन बनाए रखना;
- **सूक्ष्म गामक कौशल:**वस्तु को पकड़ना, दो अंगुलियों से उठाना, पेंसिल पकड़ना, कैंची चलाना;
- **संवेदी प्रतिक्रियाएँ:**स्पर्श, ध्वनि एवं गंध के प्रति बालक की प्रतिक्रिया का आँकलन करना| इसके अंतर्गत आप आँकलन कर सकते हैं कि बालक संवेदी प्रतिक्रियाओं के प्रति अति-संवेदनशीलहै अथवा अल्प-संवेदनशील है;
- **द्विपक्षीय समन्वय**: दोनों हाथों का समन्वित उपयोग, जैसे एक हाथ से कागज़ पकड़ना और दूसरे से काटना।

यह क्षेत्र विशेष रूप से उन बालकों के लिए महत्वपूर्ण है जिनमें दृष्टिबाधिता के साथ प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात अथवा संवेदी प्रसंस्करण संबंधी कठिनाइयाँभी हों, क्योंकि इनका सीधा प्रभाव दैनिक जीवन कौशलों, अनुस्थिति एवं गतिशीलतातथा शैक्षणिक-पूर्व कौशलों पर पड़ता है।

स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न– भाग 2

1. कार्यात्मक दृष्टि आँकलन से आप क्या समझते हैं?
2. अनुस्थिति एवं गतिशीलता आँकलन क्यों आवश्यक है?

12.8शिक्षक-निर्मित आँकलन उपकरण की अवधारणा एवं महत्व

शिक्षक-निर्मित उपकरणबच्चों के आँकलन करने के वे साधन हैं जिन्हें सामान्य या विशेष शिक्षक स्वयंअपनी कक्षा तथा अपने विशिष्ट बालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार करते

हैं। ये उपकरण मानकीकृत परीक्षणों का स्थान नहीं लेते, बल्कि उनके पूरक के रूप में कार्य करते हैं। आइये अब हम शिक्षक-निर्मित उपकरणके कुछ महत्वों की चर्चा करते हैं, जो निम्नवत है:-

i. ये बालक-विशेष तथा परिवेश-विशेष होते हैं, अतः अधिक प्रासंगिक जानकारी देते हैं;

ii. इन्हें आवश्यकतानुसार बार-बार संशोधित किया जा सकता है;

iii. ये कम लागत में, बिना किसी विशेष प्रशिक्षण अथवा उपकरण के, कक्षा-स्तर पर ही तैयार किए जा सकते हैं;

iv. ये शिक्षक को बालक की प्रगति को निरंतर एवं क्रमबद्ध रूप से दर्ज करने में सहायता करते हैं;

v. ये व्यक्तिगत शैक्षिक योजनानिर्माण, अभिभावक-परामर्श तथा अंतर-विषयक दल की बैठकों में ठोस साक्ष्य प्रस्तुत करने में सहायक होते हैं।

12.8.1 शिक्षक-निर्मित उपकरणों तथा मानकीकृत उपकरणों के मध्य पूरकता

आपको यह समझना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक-निर्मित उपकरण मानकीकृत परीक्षणों के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि पूरक होते हैं। जहाँ मानकीकृत परीक्षण बालक की योग्यता की एक व्यापक, तुलनात्मक तस्वीर देते हैं, जैसे किसी निदान अथवा प्रमाणन हेतु, वहीं शिक्षक-निर्मित उपकरण उस तस्वीर को कक्षा-स्तर पर, दैनिक शिक्षण-निर्णयों के लिए, सूक्ष्म एवं व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। एक कुशल विशेष शिक्षक दोनों प्रकार की सूचनाओं का समन्वित उपयोग करता है, वह मानकीकृत उपकरण से प्राप्त रिपोर्ट से समग्र दिशा प्राप्त करता है तथा शिक्षक-निर्मित उपकरणों से दैनिक कक्षा-योजना हेतु सूक्ष्म आँकड़े जुटाता है।

12.8.2 शिक्षक-निर्मित उपकरणों की सीमाएँ

यद्यपि इन उपकरणों के अनेक लाभ हैं, फिर भी आपको इनकी कुछ सीमाओं से भी अवगत रहना चाहिए, जैसे:-

- ये सामान्यतः किसी बड़े प्रतिदर्शपर मानकीकृत नहीं होते, अतः इनके आधार पर औपचारिक निदान नहीं किया जा सकता;
- यदि सावधानीपूर्वक तैयार न किए जाएँ, तो शिक्षक के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं;

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

- भिन्न-भिन्न शिक्षकों द्वारा भिन्न मानदंडों पर तैयार किए गए उपकरण एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में तुलनीय नहीं होते।

शिक्षक-निर्मित उपकरणों की उपर्युक्त सीमाओं को ध्यान में रखते हुए ही अगले अनुभाग में अब हम उपकरण निर्माण की प्रक्रिया को समझेगें, ताकि आपके द्वारा तैयार किया गया उपकरण अधिकतम संभव सीमा तक विश्वसनीय व उपयोगी बन सके।

12.9दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के लिए उपकरण निर्माण की प्रक्रिया

दृष्टिबाधिता के साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले बालकों के लिएकार्यात्मक आँकलन उपकरण तैयार करने की प्रक्रिया को समझने के लिए हम लोग एक उदाहरण लेते है। मान लीजिए एक शिक्षिका को कक्षा में 7 वर्षीय एक बालिका मिलती है, जिसे जन्मजात दृष्टिबाधिता के साथ-साथ हल्की बौद्धिक दिव्यांगता भी है। शिक्षिका को यह नहीं पता कि बालिका दैनिक जीवन क्रियायों को स्वयं कितना कर पाती है। इस स्थिति में शिक्षिका को इस बालिका का कार्यात्मक आँकलन करना होगा जिसके लिए एक उपकरण तैयार करने की आवश्यकता होगी। नीचे दिए गए दस चरणों में हम इसी उदाहरण के माध्यम से कार्यात्मक आँकलन उपकरण तैयार करने की प्रक्रिया को समझेंगे।

चरण-1: आवश्यकता एवं उद्देश्य का निर्धारण

सर्वप्रथम यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि उपकरण किस उद्देश्य से बनाया जा रहा है। क्या यह प्रारंभिक आँकलन के लिए है, व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाहेतु आधार-रेखास्थापित करने के लिए हैअथवा प्रगति की निरंतर निगरानी के लिए है। उद्देश्य स्पष्ट होने से उपकरण की विषयवस्तु एवं संरचना स्वतः निर्देशित होती है। उपर्युक्त उदाहरण में, चूँकि बालिका नई है, अतः शिक्षिका का उद्देश्य "प्रारंभिक आधार-रेखा स्थापित करना" होगा, ताकि आगे चलकर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना में यथार्थवादी लक्ष्य तय किए जा सकें।

चरण-2: बालक तथा उसके परिवेश की प्रारंभिक जानकारी एकत्र करना

आँकलन की आवश्यकता एवं उद्देश्य जानने के पश्चात हमें बालक का चिकित्सा इतिहास, पूर्व आँकलन रिपोर्ट, माता-पिता से प्राप्त जानकारी तथा वर्तमान कक्षा-व्यवहार का प्रारंभिक अवलोकन किया जाना चाहिए। दितीय चरण में शिक्षक को यह भी जानना चाहिए कि बालक घर पर किस भाषा/माध्यम में संप्रेषण करता है, परिवार की अपेक्षाएँ क्या हैं, तथा बालक के पूर्व चिकित्सीय/शैक्षिक रिकॉर्ड में कोई प्रासंगिक जानकारी तो नहीं है, जैसे दृष्टि-हानि की सीमा, कोई अतिरिक्त चिकित्सीय स्थिति आदि।

चरण-3: कार्यात्मक आँकलन के क्षेत्रोंका चयन

इकाई के खंड 12.7 में वर्णित कार्यात्मक आँकलन के क्षेत्रों जैसे- दृष्टि, दैनिक जीवन क्रियाएं, अनुस्थिति एवं गतिशीलता आदि में से उन क्षेत्रों का चयन जो उस बालक के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक हों। सभी बालकों के लिए सभी क्षेत्रों का समान गहराई से आँकलन आवश्यक नहीं होता है, अब्ल्की प्राथमिकता उस बालक की तात्कालिक आवश्यकता के अनुसार तय होनी चाहिए। हमारे उदाहरण में शिक्षिका "कार्यात्मक दृष्टि" तथा "दैनिक जीवन क्रियाएओं" को प्राथमिकता दे सकती है, क्योंकि यही जानकारी कक्षा में तुरंत उपयोगी होगी।

चरण-4: प्रत्येक क्षेत्र हेतु विशिष्ट मदोंका निर्माण

प्रत्येक क्षेत्र को छोटे-छोटे, स्पष्ट रूप से देखे व मापे जा सकने वाले व्यवहारों में विभाजित करना चाहिए। जैसे हम "स्वतंत्र रूप से भोजन करना" के स्थान पर चम्मच पकड़ना; चम्मच को भोजन तक ले जाना; चम्मच को मुँह तक ले जाना; बिना गिराए भोजन करना आदि उप-चरणों में विभाजित करना।इसे कार्य-विश्लेषण भीकहा जाता है। कार्य-विश्लेषण गंभीर एवं बहु-दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों के शिक्षण में एक स्थापित एवं प्रमाण-आधारित रणनीति है, जो जटिल कौशलों को छोटी, क्रमबद्ध तथा शिक्षण-योग्य इकाइयों में बदल देती है, जिससे आँकलन तथा अनुदेशन दोनों अधिक सटीक बनते हैं (Snell & Brown, 2011)।

चरण-5: उपयुक्त प्रारूप एवं मापन-पद्धति का चयन

क्या उपकरण चेकलिस्ट (हाँ/नहीं) के रूप में होगा, रेटिंग स्केल (जैसे 1 से 5) के रूप में होगा, अथवा वर्णनात्मक अवलोकनके रूप में होगा? यह निर्णय आपको उद्देश्य एवं बालक की आवश्यकता के अनुसार लेना होगा। सामान्य नियम के रूप में, यदि उद्देश्य केवल यह जानना है कि बालक कोई कौशल "कर पाता है अथवा नहीं", तो चेकलिस्ट पर्याप्त है; परंतु यदि यह जानना है कि बालक किसी कौशल को "किस गुणवत्ता अथवा किस आवृत्ति के साथ" करता है, तो रेटिंग स्केल अधिक उपयुक्त रहता है।

चरण-6: निर्देशों तथा प्रशासन-प्रक्रिया का स्पष्टीकरण

उपकरण का उपयोग कौन करेगा, कितनी बार करेगा, किन परिस्थितियों में अवलोकन किया जाएगा? इन सबका स्पष्ट उल्लेख आवश्यक है ताकि विभिन्न अवसरों पर एकरूपता बनी रहे। उदाहरणस्वरूप, उपकरण तैयार करते समय यह लिखा जाना चाहिए कि "यह अवलोकन कक्षा-शिक्षक द्वारा, भोजन-अवकाश के दौरान, सप्ताह में तीन बार, लगातार दो सप्ताह तक किया जाएगा", ताकि परिणामों की तुलना सार्थक ढंग से हो सके।

चरण-7: विशेषज्ञ सत्यापन

तैयार किए गए उपकरण के प्रारूप को अनुभवी विशेष शिक्षकों, चिकित्सा विशेषज्ञों जैसे नेत्र-विशेषज्ञ, फिजियोथेरेपिस्ट तथा अभिभावकों को दिखाकर उनकी प्रतिक्रिया लेना, ताकि मदों की उपयुक्तता एवं स्पष्टता की पुष्टि हो सके। इस चरण में विशेषज्ञों से यह भी पूछा जा सकता है कि क्या कोई महत्वपूर्ण मद छूट तो नहीं गई है, अथवा कोई मद बालक की स्थिति के लिए अनुपयुक्त अथवा अस्पष्ट तो नहीं है।

चरण-8: क्षेत्र-परीक्षण

उपकरण को एक या दो बालकों पर परीक्षणात्मक रूप से प्रयोग करना चाहिए तथा यह देखना चाहिए कि क्या यह व्यावहारिक रूप से उपयोग करने में आसान है, तथा क्या यह वांछित जानकारी दे पा रहा है? इस दौरान आपको यह भी देखना चाहिए कि उपकरण भरने में कितना समय लगता है, तथा क्या शिक्षक इसे कक्षा की सामान्य दिनचर्या के साथ-साथ सहजता से उपयोग कर पा रहे हैं।

चरण-9: संशोधन तथा अंतिम रूप

क्षेत्र-परीक्षण तथा विशेषज्ञ-प्रतिक्रिया के आधार पर आवश्यक संशोधन करना चाहिए तथा उपकरण को अंतिम रूप देना चाहिए। इसमें अस्पष्ट मदों को पुनः लिखना, अनावश्यक मदों को हटाना, तथा प्रारूप को अधिक उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाना सम्मिलित है।

चरण-10: वास्तविक उपयोग तथा आवधिक पुनरीक्षण

तैयार किये गये अंतिम उपकरण को नियमित रूप से उपयोग करना चाहिए तथा समय-समय पर, जैसे-प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में, उसकी उपयोगिता की समीक्षा भी करनी चाहिए। जैसे-जैसे बालक की आवश्यकताएँ बदलती हैं, वैसे-वैसे उपकरण को भी अद्यतनकरते रहना चाहिए। शिक्षक निर्मित उपकरण निर्माण एक चक्रीयप्रक्रिया है, न कि एक बार पूर्ण होने वाला कार्य।

स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न– भाग 3

1. कार्य-विश्लेषणसे आप क्या समझते हैं? एक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. उपकरण के क्षेत्र-परीक्षण का क्या महत्व है?

13.10 कार्यात्मक उपकरणों के प्रकार एवं दृष्टांत प्रारूप

13.10.1 चेकलिस्ट का दृष्टांत प्रारूप

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

- **कार्यात्मक आँकलन का क्षेत्र:** दैनिक जीवन क्रिया के अंतर्गत 'भोजन करना'

क्र.सं.	**कौशल/व्यवहार**	**हाँ**	**कुछ सहयोग से**	**नहीं**
1	चम्मच को सही ढंग से पकड़ता है			
2	चम्मच से भोजन उठाता है			
3	भोजन को बिना गिराए मुँह तक ले जाता है			
4	गिलास से स्वयं पानी पीता है			
5	भोजन के पश्चात हाथ स्वयं साफ करता है			

12.10.2 रेटिंग स्केल का दृष्टांत प्रारूप

- **कार्यात्मक आँकलन का क्षेत्र: दृष्टि**
- **निर्देश:** प्रत्येक मद को 1 (कभी नहीं) से 5 (सदैव) के मध्य अंकित कीजिए।

मद	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
तेज़ प्रकाश की ओर सिर घुमाता है					
चलती हुई वस्तु का अनुसरण करता है					
परिचित व्यक्ति को 2 मीटर की दूरी से पहचानता है					
चमकीले रंग की वस्तु को अन्य वस्तुओं में से चुनता है					
तेज़ प्रकाश की ओर सिर घुमाता है					

12.10.3साक्षात्कार अनुसूची (माता-पिता/देखभालकर्ता हेतु) का दृष्टांत प्रारूप

i. बालक घर पर किस प्रकार अपनी आवश्यकताएँ व्यक्त करता है?

ii. बालक कौन-सी दैनिक क्रियाएँ स्वतंत्र रूप से करता है?

iii. बालक को किन परिस्थितियों में सर्वाधिक कठिनाई होती है?

iv. बालक किस प्रकार की सहायता से बेहतर कार्य कर पाता है?

13.4.1 कार्य-विश्लेषण प्रपत्रका दृष्टांत प्रारूप

- **कार्य:** हाथ धोना

उप-चरण	स्वतंत्र	शाब्दिक संकेत आवश्यक	शारीरिक सहयोग आवश्यक
नल तक पहुँचना			
नल खोलना			
हाथों को पानी से गीला करना			
साबुन लगाना			
हाथ रगड़ना			
पानी से साबुन हटाना			
नल बंद करना			
तौलिये से हाथ पोंछना			

12.10.5प्रत्यक्ष अवलोकन अभिलेख / पोर्टफोलियो का दृष्टांत प्रारूप

इसमें बालक की गतिविधियों के फोटोग्राफ, वीडियो-क्लिप विवरण, कार्य-नमूने जैसे- बालक द्वारा बनाए गए चित्र, लेखन-नमूने तथा दैनिक/साप्ताहिक अवलोकन-टिप्पणियाँ संकलित की जाती हैं, जो समय के साथ बालक की प्रगति को दर्शाती हैं।

12.10.6 अनुस्थिति एवं गतिशीलता चेकलिस्ट का दृष्टांत प्रारूप

क्र.सं.	कौशल/व्यवहार	स्वतंत्र	संकेत सहित	असमर्थ
1	कक्षा से शौचालय तक परिचित मार्ग पर जाता है			
2	दरवाज़े/मेज़ जैसी बाधा को समय रहते पहचानता है			
3	ध्वनि-स्रोत की दिशा की ओर मुड़ता है			

4	सीढ़ी चढ़ते-उतरते समय रेलिंग का उपयोग करता है			
5	सफेद छड़ी/सहयोगी के साथ खुले मैदान में चलता है			

12.11 कार्यात्मक उपकरण निर्माण में ध्यान रखने योग्य सावधानियाँ

उपर्युक्त खंडो में हम लोगों ने अध्ययन किया कि कार्यात्मक उपकरण का निर्माण में कौन-कौन से चरण होतें हैं। उसके पश्चात हम लोंगों ने कार्यात्मक उपकरण के कुछ प्रारूप देखें। आइये अब हम लोग यह समझे कि कार्यात्मक उपकरण के निर्माण करते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

कार्यात्मक उपकरण के निर्माण में हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. **भाषा की सरलता:**मदों की भाषा सरल, स्पष्ट तथा एक ही अर्थ देने वाली हो, ताकि विभिन्न अवलोकनकर्ताओं द्वारा एक समान समझ बने। अस्पष्ट अथवा एक से अधिक अर्थ देने वाली भाषा अंतर-अवलोकनकर्ता विश्वसनीयता को कम कर देती है।

2. **मद विशिष्ट एवं देखने-योग्य हो:**"बालक अच्छा व्यवहार करता है" जैसी अस्पष्ट मद के स्थान पर "बालक निर्देश मिलने पर अपनी वस्तु वापस रखता है" जैसी स्पष्ट, देखने-योग्य मद बनाई जाए। सिद्धांत यह है कि यदि दो भिन्न व्यक्ति उसी क्रिया को देखकर असहमत हो सकते हैं, तो मद को और स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

3. **सांस्कृतिक एवं पारिवारिक संदर्भ का ध्यान:**मदें बालक की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुकूल हों, जैसे भोजन करने का तरीका (हाथ से/चम्मच से), वस्त्र-प्रकार आदि क्षेत्रीय व पारिवारिक रीति-रिवाज़ों के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

4. **आयु एवं विकासात्मक स्तर के अनुरूप:**मदें बालक की वास्तविक आयु के साथ-साथ उसके वर्तमान विकासात्मक स्तर के अनुरूप भी हों, ताकि न तो बालक को अनुचित रूप से कठिन कार्य दिए जाएँ और न ही अत्यधिक सरल, जो उसकी वास्तविक क्षमता को कम आंके।

5. **अत्यधिक लंबा न हो:**उपकरण इतना व्यावहारिक हो कि शिक्षक कक्षा के सामान्य कार्यों के साथ-साथ उसका उपयोग कर सके। अत्यधिक लंबे उपकरण प्रायः अधूरे भरे जाते हैं अथवा उपयोग में लाना छोड़ दिए जाते हैं।

6. **एकाधिक अवसरों पर उपयोग:**एक ही अवलोकन के आधार पर निष्कर्ष न निकाला जाए; विभिन्न समय, स्थान व परिस्थितियों में अवलोकन दोहराया जाए, क्योंकि बालक का निष्पादन थकान, मनोदशा अथवा परिवेश के अनुसार बदल सकता है।

7. **बहु-दिव्यांगता विशिष्ट अनुकूलन:**यदि बालक में दृष्टिबाधिता के साथ श्रवण-बाधा भी है, तो आँकलन के समय स्पर्शनीय संकेतों का प्रयोग हो; बौद्धिक दिव्यांगता होने पर निर्देश अत्यंत सरल तथा चरणबद्ध हों; तथा गामक सीमाओं की स्थिति में पर्याप्त समय व उपयुक्त स्थितिसुनिश्चित की जाए।

8. **नैतिकता एवं गोपनीयता:**बालक की जानकारी को गोपनीय रखा जाए तथा आँकलन के समय उसकी गरिमा का सम्मान किया जाए। आँकलन-प्रपत्रों तथा फोटोग्राफ/वीडियो का उपयोग केवल शैक्षिक उद्देश्य हेतु तथा अभिभावकों की सहमति से किया जाए।

9. **सकारात्मक दृष्टिकोण:**उपकरण का केंद्र बिंदु बालक की "कमी" न होकर उसकी "क्षमता एवं संभावना" हो, ताकि आँकलन रिपोर्ट पढ़ते समय अभिभावक तथा अन्य शिक्षक बालक के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सकें।

10. **बहु-स्रोतीय जानकारी का समावेश:**केवल शिक्षक के अवलोकन पर निर्भर न रहकर, अभिभावकों, फिजियोथेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट तथा स्वयं बालक से भी जानकारी ली जाए, ताकि आँकलन अधिक समग्र तथा संतुलित बने।

12.12 उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करना

यद्यपि शिक्षक-निर्मित उपकरण मानकीकृत परीक्षणों जितने तकनीकी रूप से परिष्कृत नहीं होते, फिर भी प्रामाणिक आँकलनकी दृष्टि से उनकी गुणवत्ता को व्यवस्थित उपायों द्वारा सुदृढ़ किया जा सकता है (Bagnato et al., 2010)। इस हेतु आपके द्वारा उपकरण निर्माण के दौरान निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं: -

- **विषयवस्तु वैधता:** विशेषज्ञों द्वारा यह पुष्टि करवाना कि उपकरण की मदें उस क्षेत्र का पर्याप्त एवं उपयुक्त प्रतिनिधित्व करती हैं।
- **अंतर-अवलोकनकर्ता विश्वसनीयता:** दो भिन्न व्यक्तियों द्वारा एक ही बालक का स्वतंत्र रूप से अवलोकन करवाकर परिणामों की तुलना करना। यदि दोनों के परिणामों में पर्याप्त संगतिहै, तो उपकरण अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

- **पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता:**कुछ समय के अंतराल पर पुनः वही उपकरण प्रयोग कर परिणामों की संगति जाँचना, बशर्ते इस अंतराल में बालक की वास्तविक क्षमता में कोई बड़ा परिवर्तन न हुआ हो।
- **मानकीकृत प्रशासन-प्रक्रिया:**सभी अवसरों पर एक समान निर्देश तथा परिस्थितियों में आँकलन करना, ताकि परिणामों में भिन्नता परिस्थिति के कारण न होकर वास्तविक क्षमता में परिवर्तन के कारण हो।
- **त्रिकोणीयकरण:**एक ही जानकारी की पुष्टि विभिन्न स्रोतों जैसे- शिक्षक-अवलोकन, अभिभावक-साक्षात्कार, प्रत्यक्ष कार्य-नमूना इत्यादि से करना चाहिए, जिससे परिणामों की वैधता बढ़ जाती है।
- **दस्तावेज़ीकरण में सटीकता:**अवलोकन के तुरंत बाद ही आँकड़े दर्ज करना चाहिए, न कि स्मृति के आधार पर बाद में, ताकि सूचना में त्रुटि की संभावना कम हो।

इन उपायों से शिक्षक-निर्मित उपकरण अधिक भरोसेमंद तथा उपयोगी बनते हैं, तथा इनके आधार पर लिए गए शैक्षिक निर्णय अधिक ठोस आधार पर टिके होते हैं।

12.13सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि दृष्टिबाधिता के साथ-साथ अन्य दिव्यांगताओं वाले व्यक्तियों के लिए कार्यात्मक आँकलन क्यों आवश्यक है, तथा यह मानकीकृत आँकलन से किस प्रकार भिन्न है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अंतर्गत बहु-दिव्यांगता तथा बधिर-दृष्टिबाधिता को विशिष्ट मान्यता प्राप्त है, जो इन बालकों की व्यक्ति-विशिष्ट आवश्यकताओं को रेखांकित करती है। कार्यात्मक आँकलन के प्रमुख क्षेत्रों- कार्यात्मक दृष्टि, दैनिक जीवन क्रियाएँ, अनुस्थिति एवं गतिशीलता, संप्रेषण, सामाजिक-भावनात्मक विकास, संज्ञानात्मक/शैक्षणिक-पूर्व कौशल तथा संवेदी-गामक कौशल—पर विस्तार से चर्चा की गई, तथा प्रत्येक क्षेत्र के उप-पहलुओं को भी स्पष्ट किया गया।

इसके पश्चात शिक्षक-निर्मित उपकरणों के महत्व, उनकी मानकीकृत परीक्षणों से पूरकता, तथा उनकी सीमाओं पर चर्चा की गई। उपकरण-निर्माण की दस-चरणीय व्यवस्थित प्रक्रिया को एक व्यावहारिक उदाहरण के माध्यम से समझा गया, जिसमें आवश्यकता-निर्धारण से लेकर क्षेत्र-परीक्षण, संशोधन तथा आवधिक पुनरीक्षण तक के चरण सम्मिलित हैं। चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, साक्षात्कार अनुसूची, कार्य-विश्लेषण प्रपत्र, पोर्टफोलियो तथा अभिविन्यास-गतिशीलता चेकलिस्ट जैसे उपकरणों के दृष्टांत प्रारूप को भी हम लोगों ने देखा।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

इकाई के अंतिम खंड में उपकरण निर्माण में ध्यान रखने वाली प्रमुख सावधानियों तथा उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के उपायों जैसे अंतर-अवलोकनकर्ता विश्वसनीयता, पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता तथा त्रिकोणीयकरण पर विस्तृत चर्चा की गई। यह स्पष्ट है कि सुविचारित एवं सुव्यवस्थित ढंग से तैयार किए गए शिक्षक-निर्मित कार्यात्मक उपकरण, बहु-दिव्यांगता वाले बालकों की वास्तविक क्षमताओं को समझने, उनके लिए प्रभावी व्यक्तिगत शैक्षणिक योजनाबनाने, तथा अभिभावकों व अंतर-विषयक दल के साथ सार्थक संवाद स्थापित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

12.14शब्दावली

- **कार्यात्मक आँकलन:**बालक के वास्तविक परिवेश में उसके व्यवहार व कौशल का व्यवस्थित अवलोकन।
- **कार्य-विश्लेषण:** किसी जटिल कार्य को छोटे, क्रमबद्ध उप-चरणों में विभाजित करना।
- **व्यक्तिगत शैक्षिक योजना:**बालक-विशेष हेतु तैयार की गई व्यक्तिगत शिक्षण योजना।
- **अंतर-अवलोकनकर्ता विश्वसनीयता:**दो भिन्न अवलोकनकर्ताओं के परिणामों में संगति की मात्रा।
- **कार्यात्मक दृष्टि आँकलन:**बालक की अवशेष दृष्टि का दैनिक कार्यों में उपयोग का आकलन।
- **प्रामाणिक आँकलन:** बालक की प्राकृतिक दिनचर्या तथा परिचित परिवेश में किया जाने वाला आँकलन।
- **आधार-रेखा:**किसी कौशल में बालक का वर्तमान निष्पादन-स्तर, जिसकी तुलना भविष्य की प्रगति से की जाती है।
- **त्रिकोणीयकरण:**एक ही जानकारी की पुष्टि विभिन्न स्रोतों अथवा विधियों से करना।
- **अनुस्थिति एवं गतिशीलता:** बालक की अपने परिवेश में स्वयं को उन्मुख करने तथा सुरक्षित रूप से गति करने की क्षमता।

12.15 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

भाग-1

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए चिकित्सात्मक उपचार एवं सहायक उपकरण MVI(B4)

1. उत्तर हेतु देखें अनुभाग 12.9.2
2. उत्तर हेतु देखें अनुभाग12.4

भाग-2

1. उत्तर हेतु देखें अनुभाग 12.7.1

2. उत्तर हेतु देखें अनुभाग12.7.3

भाग-3

1. उत्तर हेतु देखें अनुभाग 12.9 (चरण-4)

2. उत्तर हेतु देखें अनुभाग12.9 (चरण-8)

12.16संदर्भ ग्रंथ सूची

Aitken, S., & Buultjens, M. (1992). *Vision for doing: Assessing functional vision of learners who are multiply disabled*. Moray House Publications.

Bagnato, S. J., & Neisworth, J. T. (2004). The mismeasure of young children: The authentic assessment alternative. *Infants and Young Children, 17*(3), 198–212.

Bagnato, S. J., Neisworth, J. T., & Pretti-Frontczak, K. (2010). *LINKing authentic assessment and early childhood intervention: Best measures for best practices* (2nd ed.). Paul H. Brookes Publishing.

Bruce, S. M., Luckner, J. L., & Ferrell, K. A. (2018). Assessment of students with sensory disabilities: Evidence-based practices. *Assessment for Effective Intervention, 43*(2), 79–89.https://doi.org/10.1177/1534508417708311

Chen, D., & Downing, J. E. (2006). *Tactile strategies for children who have visual impairments and multiple disabilities: Promoting communication and learning skills*. AFB Press, American Foundation for the Blind.

Government of India. (2016). *The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016* (Act No. 49 of 2016). Ministry of Law and Justice.

https://www.indiacode.nic.in/handle/123456789/2155

McLoughlin, J. A., Lewis, R. B., & Kritikos, E. P. (2018). *Assessing students with special needs* (8th ed.). Pearson.

National Institute for Empowerment of Persons with Multiple Disabilities. (2022). *Programme checklist for persons with multiple disabilities: A guide for special educators*. Department of Empowerment of Persons with Disabilities, Government of India.

Snell, M. E., & Brown, F. (Eds.). (2011). *Instruction of students with severe disabilities* (7th ed.). Pearson.

12.17निबंधात्मक प्रश्न

1. कार्यात्मक आँकलन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि दृष्टिबाधिता के साथ बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के लिए यह मानकीकृत आँकलन से अधिक उपयुक्त क्यों माना जाता है।
2. शिक्षक-निर्मित आँकलन उपकरण के निर्माण की चरणबद्ध प्रक्रिया का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
3. कार्यात्मक आँकलन के किन्हीं चार प्रमुख क्षेत्रों की व्याख्या कीजिए तथा प्रत्येक हेतु एक-एक उपयुक्त मद का उदाहरण दीजिए।
4. किसी एक दैनिक जीवन क्रिया का चयन करते हुए उसके लिए एक कार्य-विश्लेषण प्रपत्रतैयार कीजिए।
5. शिक्षक-निर्मित उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के उपायों की विवेचना कीजिए।
6. उपकरण निर्माण के समय ध्यान रखने वाली किन्हीं पाँच सावधानियों का वर्णन कीजिए।
7. शिक्षक-निर्मित उपकरणों तथा मानकीकृत परीक्षणों के मध्य पूरकता एवं शिक्षक-निर्मित उपकरणों की सीमाओं की विवेचना कीजिए।



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
तीनपानी बाई पास रोड, ट्रान्सपोर्ट नगर के पास, हल्द्वानी- 263139
फोन नं. 05946 - 261122, 261123
टॉल फ्री नं. 18001804025
फैक्स नं. 05946-264232, ई-मेल info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

MVI (B4)-1(004670)